तुलसी साहित्य अकाडमी, भोपाल से 'तुलसी सम्मान-२००७ वरीय साहित्यकार डॉ० राधेश्याम योगी एवं भगवत प्रसाद दुबे के हाथो ग्रहण करती हुई डॉ० श्रीमती तारा सिंह

अपने घर में सम्मानों व उपाधियों की आलमारी के पास खड़ी श्रीमती डॉ० तारा सिंह

विक्रमशीला विद्यापीठ, भागलपुर द्वारा प्रदत्त विद्या वाचस्पति की उपाधि लेती डॉ० श्रीमती तारा सिंह

राइजिंग पर्सानिलिटी आफ इंडिया २००६ अवार्ड के साथ डॉ० श्रीमती तारा सिंह

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान से विद्या वारिधि की उपाधि लेती हुई डॉ० श्रीमती तारा सिंह

विश्व स्नेह समाज
लोकप्रिय हिन्दी सामाजिक मासिक पत्रिका
फरवरी/मार्च 08
प्रधान सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

आदर्श पत्नी एवं सुप्रसिद्ध कवियित्री तारा

मुझे खुशी हो रही है कि पत्रिका का यह अंक, सुप्रसिद्ध छायावाद कवियित्री, ग़ज़लकार, कुशल गृहणी, कुशल पत्नी, आदर्श मां डॉ. तारा सिंह को समर्पित कर रहे है. डॉ. तारा सिंह बहुत ही कम समय में साहित्यिक जगत में एक ऊँचा मुकाम हासिल कर चुकी है. लगभग 16 काव्य संग्रहों को रचनाकार डॉ. तारा सिंह कें अंदर घमंड अभी प्रवेश नहीं कर पाया है. ऐसा उनसे बातचीत, मिलने पर लगता है. वह बातचीत में छोटी व बड़ी उम्र दोनों को लिहाज रखती है. मैंने जो महिलाओं में खासकर अनुभव किया है कि थोड़ी सी भी सफलता मिलने पर वह अपने मद में चूर हो जाती है. अपने आगे किसी को कुछ समझती हीं नही और सबसे अधिक तो अन्य महिलाओं से द्वेष भावना रखती है लेकिन अभी तक डॉ0 तारा सिंह में ऐसा नहीं हुआ है. दूसरी खास बात डॉ0 तारा सिंह में यह है कि वह अपने पति की प्राण–प्यारी है. परम सम्मानीय डॉ. वी.पी.सिंह जी की मैं प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकता कि वे अपनी पत्नी को लेकर अक्सर देश के कोने–कोने में कहीं न कहीं साहित्यिक आयोजनों में शरीक होने के लिए लेकर जाते रहते है जो कि सामान्यतः पुरुष जाति में नहीं पाया जाता है. व्यवहार कुशलता में तो डॉ0 वी.पी.सिंह का कोई जवाब नहीं है. छायावाद की इस वरिष्ठ कवियित्री को समर्पित हमारा यह विशेषांक आप लोगों के जेहन में पूर्व के विशेषांको से भी अच्छी जगह बनाएगा ऐसा मेरा विश्वास है.

अंत में मैं ईश्वर से यही प्रार्थना करुंगा कि इन दोनों की जोड़ी को लम्बी, स्वस्थ आयु प्रदान करें. साथ ही सम्माननीया डॉ. तारा सिंह जी एक तारे की भांति हिन्दी काव्य जगत में अपना नाम राष्ट्र स्तर पर ही नहीं बल्कि अर्तराष्ट्रीय स्तर पर भी रोशन करें. उनका नाम साहित्य जगत में अमर रहे, उन्हें और बड़े राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान मिले. इसी कामना के साथ.

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

सम्पादकीय कार्यालयः

संरक्षक सदस्यः
डॉ0 तारा सिंह, मुंबई

एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
कानाफुसीः 09335155949
ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com
gokul_sneh@yahoo.com

आवश्यक सूचनाः
1.पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

स्वामी, प्रकाशक,संपादक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

अंदर पढ़िए

प्रेरक प्रसंग–4
साहित्यकारों की नजर में डॉ. तारा–6
संपादको की नजर में–24
पाठकों की नजर में–29
पति की नजरों में–30
संपादक की लेखनी से–31
समीक्षकों की नजर में–34
डॉ.वी.पी.सिंह–37
तारा सिंह की कविताएं–38
डॉ0 तारा की लघु कथा–41
डॉ. तारा का संस्मरण–43
डॉ.तारा के आलेख–44
चित्रों के आइने में–47
स्नेह बाल मंच–50
सहयोगी साहित्यकार–53
साहित्य समाचार–55
चिट्ठी आई है–58

अभिमान भंग किया

समुद्र मंथन से प्राप्त अमृत का पान करके देवता शक्तिशाली बन गए थे. उन्होंने सहज ही असुरों को पराजित कर दिया. इस विजय की खुशी में देवता अभिमान में इतने डूब गए कि भगवान शिव की भी अवहेलना करने लगे. भगवान को समझते देर नहीं लगी कि देवता मिथ्याभिमान के कारण अपने कर्तव्य को भूल चुके हैं. अतः उनका अहंकार समाप्त करना आवश्यक है. भगवान शिव ने यक्ष का रूप धारण किया और देवताओं के पास जा पहुंचे. उन्होंने उनसे पूछा, 'यहां क्या कर रहे हैं?' देवताओं ने कहा, 'हमें कुछ करने की क्या आवश्यकता है. हमारी शक्ति से असुर पराजित हो गए हैं. अब हमारा एकछत्र राज्य है.'

यक्ष रुपी महादेव ने कहा, 'देवगण, आप भ्रमवश अपने को सर्वशक्तिमान समझ बैठे हैं. वास्तविकता यह है कि आप एक तिनका भी नहीं तोड़ सकते.' देवराज इन्द्र हंसकर बोले, 'तिनका तो क्या चीज है, हम तो पर्वत को भी खंड-खंड करने शक्ति रखते हैं' यक्ष बने शिव ने तृण प्रकट किया और बोले, 'इस तृण के टुकड़े करके दिखाओ.' इंद्रादि देव उस तिनके पर टूट पड़े. उसे तोड़ने में पूरी शक्ति लगा दी, पर तोड़ नहीं पाए. इंद्र ने शस्त्र का प्रहार कर तृण को नष्ट करने का प्रयास किया, पर विफलता हाथ लगी. कुछ ही क्षणों में यक्ष शिव रुप में प्रकट हुए. उन्हें देखते ही देवताओं का अभिमान टूट गया. सभी देवता उनके चरणों में झुक गए.

स्तम्भः क्या करें, क्या न करें

कटाक्षःकिसी पर हंसना आसान है. स्वयं पर हंसना एक कठिन प्रतिक्रिया है. किसी पर हंसना और उसका इस बात का बुरा न मानना और भी कठिन है. हास्य और कटाक्ष में अन्तर है. रोज बोलचाल की भाषा में हम नित यह गलती करते है. यहीं से वैमनस्य प्रारम्भ हो जाता है. कुछ समय का जीवन, और उसमें वैमनस्य, मन को कचोटता है. जीभ को किस दिषा में चलाना है, यही सफल जीवन का मूल मंत्र है. यदि कोई गलत बात मुँह से निकल जाये तो तुरन्त क्षमा मांग लेना सबसे उचित है.

डॉ. नरेन्द्र नाथ लाहा, ग्वालियर,म.प्र.

आदाब अर्ज

डरो न बाधा देखकर, करो सदा संघर्ष।
मेहनत कर मंजिल मिले, होय सुखद मन हर्ष।।

दया मरी ममता मरी, मरा परस्पर प्रेम।
खेल जगत दौलत बड़ा, रहे खेल सब गेम।।

ढोंग करो कितने कहीं, रहा ईश सब जान।
भरे खजाने लूट कर, करते कौड़ी दान।।

कौन बड़ा दिखे जगत, आज लगी है होड़।
सभी जुटे हैं लूट में, दया धरम को छोड़।।

चढ़े बुढ़ापा आप पर, होना नहीं हताश।
बॉटों अनुभव आपना, बैठ किसी के पास।।

हृष्ट पुष्ट यदि आप है, जान ईश वरदान।
पड़ा खाट रोगी बुरा, हो कितना धनवान।।

पल पल बीते जिन्दगी, होती कम हर रोज।
मकसद जानो जन्म का, करो सत्य की खोज।।

वी.के. अग्रवाल, बरेली

++++++++++++++++++++++++++++

प्रकृति ने मुफ्त दिया, धन का हो अंबार।
स्वविवेक का परिणाम, सबने मानी हार।।

नदी तालाब नलकूप, रखते जिसको धाम।
आज उस जल को देखो, बन रहा है गुलाम।।

चोर होते थे भुक्खड़, आज चोर सरकार।
नदी गंगा बिक्री कर दे, कहें दूं रोजगार।।

दानव मत बनो मानव, मोल जान की जान।
प्राण सभी के हैं प्रिय, कहना मेरा मान।।

औषधि तूने बनाई, वैद्य रक्खा छिपाय।
बिना द्रव्य का न मिले, तुमने कहॉ बताय।।

उमेश प्रसाद शर्मा 'उमेश', भागलपुर, बिहार

डॉ० रत्नाकर पाण्डेय
पूर्व संसद सदस्य (राज्यसभा)
सदस्यः अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी

फ्लैट नं. २-४, प्लाट न. ११३-११४
कृष्ण कुंज, लक्ष्मी नगर, दिल्ली-११००९२
फोन : ०११-२२०५१०१७, २२०५१०१८

संदेश

मान्यवर श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी जी,

सादर प्रणाम।

आपका १.१०.२००७ का कृपा पत्र मिला. जिससे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि राष्ट्रीय हिंदी मासिक विश्व स्नेह समाज फरवरी २००८ के अंक को सुप्रसिद्ध गीतकार और महाराष्ट्र की विख्यात कवयित्रि डॉ. तारा सिंह के विषय में एक विशेषांक को प्रकाशित कर रहा है. डॉ. तारा सिंह सुप्रसिद्ध रसायन शास्त्री डॉ. ब्रह्मदेव सिंह की पत्नी होने के साथ ही अब तक १४ काव्य ग्रंथों का प्रकाशन कर चुकी है और ३५ कृतियॉ उनकी अन्यत्र प्रकाशित हो चुकी है. सर्वत्र देश के कोने-कोने से उनको सम्मान मिला है और निरन्तर वह साहित्य साधना में लवलीन हैं. हिन्दी उनका पेशा नहीं बल्कि स्वानुभूति को काव्य के माध्यम से अभिव्यक्ति करती है. वह जो मौलिक साहित्य का सृजन करती हैं वह प्रेरणादायक है. आपने उनका अभिनंदन का निश्चय कर बहुत ही उचित काम किया है.

मुझे विश्वास है कि विश्व स्नेह समाज में प्रकाशित डॉ० तारा सिंह की रचनात्मक इस मौलिक सृजन से हिन्दी जगत को परिचित कराकर वास्तव में आप हिन्दी सेवा का कार्य कर रहे हैं. विशेषांक की सफलता के लिए मेरी हार्दिक बधाई और शुभकामना.

आशा है, सानन्द है।

सादर,

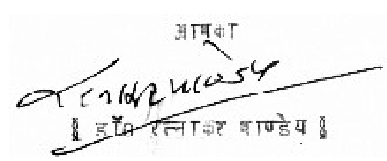

श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
संपादक
विश्व स्नेह समाज
एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी,
मुण्डेरा,इलाहाबाद, उ०प्र०

विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ, के कुलसचिव **डॉ० देवेन्द्र नाथ साह**, क्या लिखते है डॉ० तारा सिंह के बारे में

साहित्याकाश की तारा: डॉ० तारा सिंह

वेद मंत्र के साथ-साथ
येन देवं सविताएं परिदेवा अधारयन।
तेनेमं ब्रहमस्पते परिराष्ट्राय धत्तान।।
माता-पिता आचार्य ने जिसका किया निखार।
अन्यदेव आधार दें, भरते रहे सुविचार।।
सविता स्वरुप हुआ वह, बना प्रेरणा धार।
राज्य प्रजा वरण करें, राष्ट्र उद्धार।।

की भावना की सजीव मूर्ति डॉ० तारा सिंह किसी के परिचय की मोहताज नहीं. वह स्वयं परिचय है. साहित्यिक परिचय जितना दिया जाय, वह इतना आयाम लेगा कि आसमान की ऊँचाई और चन्द्रमा की कलाएं भी फीकी पड़ जायेंगी. बिहार राज्य के जमालपुर की पहाड़ी की तराई का वह गॉव रतनपुर धन्य है, जहॉ डॉ० सिंह का जन्म दस अक्टूबर उन्नीस सौ बावन में हुआ. डॉ० सिंह के पितामह एक साधारण किसान थे. लेकिन पिताश्री जमालपुर रेल कारखाना में चार्जमैन थे. डॉ० सिंह की प्रारम्भिक शिक्षा से लेकर महाविद्यालय तक की शिक्षा भागलपुर शहर के गर्ल्स छात्रावास में रह कर हुई. स्नातक की उपाधि तिलका मांझी विश्व विद्यालय, भागलपुर से प्राप्त करने के बाद कलकत्ता विश्वविद्यालय के आचार्य जगदीश चन्द्र बसु कॉलेज के रसायन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. ब्रहमदेव सिंह की जीवन संगीनी बनी. माता-पिता के लाड़ दुलार में बचपन बीता. कहावत है 'पूत के पांव पालने में ही परिलक्षित होते हैं. यह शत-प्रतिशत डॉ० सिंह के साथ चरितार्थ है. डॉ० सिंह बचपन से ही बिना किसी प्रेरणा के पुस्तकों को हाथ से छूती, उनके पृष्ठों को उलटती, लगता है कालिदास की तरह उन्हें इष्टदेव से वरदान प्राप्त था.

इनके १६ पुस्तकों एवं ३६ सहयोगी काव्य संकलनों में इस अनंत आकाश में झिल मिला रहे हैं.

तभी तो देश की कोई भी ऐसी संस्था नहीं बची, जिसने डॉ० सिंह को मान-सम्मान से सम्मानित नहीं किया. साहित्य की ऐसी विभूति साहित्याकाश में सदा जगमग करती रहे, यही मेरी शुभकामना है.

अखिल भारतीय अंगिका साहित्य कला मंच के महामंत्री **हीरा प्रसाद 'हरेन्द्र'** क्या कहते है-

जाज्वल्य सितारा:'तारा'

कविता है स्फूर्तिदायी, और हृदय-उल्लास।
यह मधुमय सौंदर्य है, ज्वालामय उच्छावास।।
काव्य कला की अर्चना, कारज परम अनूप।
मन जिसका इसमें रमा, वह ब्रहमा का रुप।।
साहित्य-गगन में चमक उठा एक नक्षत्र।
जिनकी ख्याति हर जगह यहॉ-वहॉ-सर्वत्र।।
बिहार राज्य मुँगेर में, रतनपुर एक ग्राम।
वन, पर्वत, झरना निकट, अनुपम परम ललाम।।
अक्टूबर उन्नीस सौ बावन दिन शनिवार।
शुभ-शुभ दस तारीख को, छाया मोद अपार।।
इक किसान परिवार जो, मेहनती खुशहालं
उत्पत्ति एक रत्न की, पहले पचपन साल।।
नयनों का तारा सदा, मातु पिता हिय हार।
इसीलिए तारा रखें नाम सकल परिवार।।
अब तो तारा सिंह की, छायी कृति आकाश।
राज्य नहीं, अब देश में, करती शुभ्र प्रकाश।।
रचना ब्रहमा की तरह, करती आज सदैव।
सहयोगी सुन्दर मिले, ब्रहमदेव पतिदेव।।
'राजेश', 'राजीव' तनय, गुणागार, गुणखान।
पुत्रवधू इक 'अनुपमा', इक 'अनुमेहा' जान।।
पायी बहुत प्रशस्तियॉ, पुरस्कार भी ढेर।
अब तो फिल्मी जगत् भी, इसे रहा है घेर।।
गीतकार के रुप में, होगी अब मशहूर।
वर्षो को क्या बात है, दिवस नहीं है दूर।।
चाहत नारी जागरण या नारी कल्याण।
सेवा करें समाज की, यह भारी अनुदान।।
सोच-विचारों का किया, सागर मंथन ढेर।
निकला चौदह रत्न भी, जरा नहीं अंधेर।।
कितनी धुँधली सॉझ भी, हुई धरा पर जान।
'एक दीप जला लेना' इनकी है पहचान।।
निकल चुका है आजतक, तेरह-चौदह काव्य।
अब अभिनन्दन ग्रंथ भी, ज्यादा है संभाव्य।।
जाज्वल्य सितारा बनें, 'तारा' जग मशहूर।
प्रफुल्लित हम क्यों नहीं, अंग धरा की नूर।।
'तारा' जी भरती रहें, सदा काव्य भंडार।
यह 'हरेन्द्र' की कामना, यही हृदय उद्गार।।

अखिल भारतीय भाषा-साहित्य सम्मेलन, बिहार के अध्यक्ष व भाषा भारती संवाद के प्रधान संपादक **श्री नृपेन्द्र नाथ गुप्त** क्या देखते हैं अपने साहित्यिक मित्र डॉ० तारा में

साहित्य-साधिका डॉ० तारा सिंह की काव्य-साधना

डॉ० तारा सिंह एक ऐसी साहित्य-साधिका हैं जो लगातार एक से बढ़कर एक काव्य-संग्रह का सृजन व प्रकाशन करती आ रही है. उनकी काव्य-साधना में उनके विद्वान पति डॉ० ब्रहमदेव प्रसाद सिंह का कोई कम योगदान नहीं है. 'तम की धार पर डोलती जगती की नौका' उनका दशवॉ काव्य संग्रह है, जिसमें करीब तीस भावना प्रधान कविताएं अठहत्तर पृष्ठों में संकलित हैं.

डॉ० सिंह की काव्य-साधना अद्वितीय है और उनकी लेखनी सधी एवं धारदार. उनकी प्रायः प्रत्येक रस और भाव के उद्रेक से प्रेरित कविताएं हिन्दी संसार में निश्चित रुप से सम्मानजक स्थान प्राप्त कर लेंगी, इसमें मुझे तनिक भी सन्देह नहीं है. अभी ही उनकी काव्य-प्रतिभा से प्रभावित होकर अनेक अखिल भारतीय साहित्यिक एवं सामाजिक संस्थाओं ने उन्हें पुरस्कृत एवं सम्मानित भी किया है. एक विदेशी बहुचर्चित प्रकाशन संस्थान द्वारा उनका जीवन-वृत्त 'एशिया पैसेफिक हूज हू' के छठे खंड में प्रकाशित किया जा चुका है.

इस संकलन की अधिकांश कविताएं आदर्शवादी एवं आध्यात्मिक व रहस्यवादी है. अध्यात्म और रहस्य से सिमटी कवयित्रि की भाषा सरल, सहज और सपाट है. कहीं-कहीं सपाटवयानी भी है, अतः बोझिल और समझ से परे नहीं है. जहॉ कुछ कविताएं इष्टदेव के मंदिर की दीपशिखा की तरह बगैर किसी व्यवधान के सहृदय पाठकों के मन को उद्वेलित करती रहती है. वहीं कुछ कविताओं में सिधुनाद का गर्जन-तर्जन है, तो कुछ हिमगिरि के उत्तुंग शिखर को चूमती नजर आती है. हिम शिखर से टकराती कविताएं मन-प्राण को शीतलता प्रदान करती है; जो आज की दौड़ती-भागती जिंदगी के लिए प्राणदायिनी है.

'डूब गई चॉदनी, कभी यहॉ लहराया करती थी' में निराशा के गर्त में कवयित्रि डूबकर चुपचाप नहीं बैठती बल्कि भावी स्वर्णिम भविष्य की आकांक्षा लिए आशा की किरण दिखाती हैं. अंधकार से प्रकाश की ओर जाने की आतुरता मध्य घड़ी के सूर्य के तेज से प्रदीप्त है. हिन्दी की महान कवयित्रि 'महादेवी' का भी तारा जी पर स्पष्ट प्रभाव है. महादेवी जी की पीड़ा और अवसाद को भी उन्होंने आत्मसात किया है. पीड़ा की भाषा की रागिनी को भी तारा जी ने हृदय से गाया है.

इस सकंलन की कविताओं में उन्होंने मातृत्व का वात्सल्य प्रेम और स्नेह की भावनाओं को अत्यन्त ही कुशलता से पिरोया है. उन्हें कविताओं के सृजन में तो महारत हासिल है. कवयित्रि का एक दूसरा पक्ष भी है. वह मात्र भावुक नहीं, समय-समय पर जुल्म और अन्याय के विरुद्ध शोले और अंगारे की तरह बरस पड़ती है. आस्था, विश्वास और शौर्य उनका सम्बल है और इसे छोड़ना नहीं चाहती. इनकी कविताओं में, अपने युग के श्रेष्ठ हालावादी कवि बच्चन जी की तरह स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है. उनकी इस कविता का अवलोकन करें-'यही है मदिरालय, जिसे मै ढूढ रहा था अर्सो से'. यह मदिरालय वह नहीं है, जहॉ साकी और सूरा की झलक मिलती है. बल्कि प्रेम की गंगा बहाने की चाहत दिखती है. मैं ढॉलूंगी मदिरा तुम्हारे प्यालो में' शीर्षक कविता में अंततोगत्वा वह विष बनकर प्रकट होती है. आज वही विष छलक रहा है बनकर 'मदिरा' शीर्षक कविता में गूढ़ रहस्य और अनुभूति की झलक देखी जा सकती है.

> डॉ० तारा सिंह की काव्य-साधना अद्वितीय है और उनकी लेखनी सधी एवं धारदार. प्रत्येक रस और भाव के उद्रेक से प्रेरित कविताएं हिन्दी संसार में निश्चित रुप से सम्मानजक स्थान प्राप्त कर लेंगी. कवयित्रि मात्र भावुक नहीं, समय-समय पर जुल्म और अन्याय के विरुद्ध शोले और अंगारे की तरह बरस पड़ती है. आस्था, विश्वास और शौर्य उनका सम्बल है और इसे छोड़ना नहीं चाहती.

जमीन से जुड़ी उनकी कविताएं है -'जब जागना था मुझे, तब मैं सो गई', आज का कश्मीर', संस्कृति और सम्प्रदाय' आदि. इस संग्रह की प्रायः सभी कविताएं विभिन्न रसों का संचार करती है. डॉ० तारा सिंह की कविताएं उत्तरोत्तर भावों की गंभीरता सजोए प्रौढ़ होती जा रही है. कुल मिलाकर यह काव्य-संकलन वर्तमान काल और परिवेश के अनुकूल है. कवयित्रि के पास कहने को बहुत कुछ है, जिसकी सफल अभिव्यक्ति उन्होंने की है. इस सुंदर संकलन के लिए डॉ० सिंह को बधाई. ++++++++++++++++

राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत शिक्षक, न्यू ऋतंभरा साहित्यिक मंच के अध्यक्ष आर. सी.मुदलियार क्या देखते है डॉ० तारा में-

डॉ० तारा सिंह साहित्य जगत में अपना विशेष स्थान रखती है

डॉ० तारा सिंह एक भद्र महिला होने के साथ-साथ साहित्य जगत में अपना एक विशेष स्थान रखती है. शिक्षा एवं मानदोपाधि से लवरेज स्वरचित १४ काव्य संग्रहों एवं प्रकाशनाधीन-०२ काव्य संग्रहों के साथ अपना परिचय स्वयं एक साहित्य साधवी के रुप में हम सबके समक्ष उपस्थित है. सहयोगी काव्य संकलन जिसमें प्रकाशित ३५ एवं सम्मान एवं पुरस्कार ६५, फिल्मी गीत, वृहद रुप से सदस्यता, जीवन वृत्त, प्रकाशित कर अपनी प्रतिभा का समुचित परिचय दिया है. डॉ० तारा सिंह जी की कृति 'तम की धार पर डोलती जगती की नौका' एवं विषाद नदी से उठ रही ध्वनि साहित्य के सभी शर्तो को पूरा करती है.

कविता क्या है? बाहय की भाषा में भीतर का अनुवाद है. हिन्दी साहित्य के जाने माने समीक्षक आचार्य डॉ० गजानन शर्मा ने कविता की परिभाषा कविता में ही देते हुए, उक्त बात कही है. मानव मन अत्यधिक चंचल है, वह कभी स्थिर रह ही नहीं सकता. हमेशा दूर-दूर की सोचने में ही मस्त रहा करता है. कल्पना की उड़ाने भरते रहता है. अपने सुख-दुख, अपने भावी जीवन पर सदैव चिन्तन करते रहता है. आम आदमी से परे हटकर संवेदनशील, भावुक व्यक्ति का मन व्यक्तिगत बातों से अलग उठकर समष्टि गत बातों पर भी समस्याओं पर भी चिन्तन करता है. उपयुक्त सभी बातें अक्षरशः लागू होती है. कवियित्रि डॉ० तारा सिंह की कविताएं पर्यावरण, आम जन जीवन से जुड़ी है. परमपिता परमेश्वर की कृपा से जीवन भर शब्द ब्रम्ह की अराधना करती रहेगी. मुझे पूरी आशा है. डॉ० तारा सिंह मूलतः रहस्यवादी कविता की प्रणेता है. उनकी कविताओं में प्रकृति के रहस्य को, मानव मन में उठते भावों को रेखांकित किया है. डॉ० तारा सिंह आदर्शवादी एवं आध्यात्मिक क्षेत्रों को भी अपने काव्य में पिरोया है. इनकी भाषा सरल, सहज एवं सपाट है. मातृत्व, वात्सल्य, प्रेम और स्नेह की भावनाओं को बखूबी अपने काव्य में प्रस्तुत किया है जो उनके काव्य कुशलता का जीता जागता प्रमाण है. जहॉ इन्होंने इन कठिन विषयों को अपना आधार माना है. वही समाज में स्त्रियों के प्रति भी अपनी भाव अभिव्यक्ति की है. मेरा विचार है कि डॉ० तारा सिंह जी सभी विषयों को अपने कलम की लेखनी से रेखांकित करने में सक्षम है तो अतिश्योक्ति ना होगी. डॉ० तारा जहां खुशबुदार पुष्प है वहीं संघर्षशील एवं परिश्रमी सशक्त राह को स्वीकार करने वाली भद्र महिला भी है. साहित्य जगत के साथ-साथ, महिला जगत के लिए भी यह गौरव की बात है. ईश्वर इन्हें और भी प्रगति दें. इन्हीं कामनाओं सहित

भारतीय वाङ्मय पीठ

लोकनाथ कुंज, १२७/ए/८,ज्योतिष राय रोड, न्यू अलीपुर,
कोलकाता-७०००५३, पं.बंगाल

सेवा में,

श्रीमान गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
संपादक, विश्व स्नेह समाज रा.हि.मासिक
मुण्डेरा, इलाहाबाद

हर्ष का विषय है कि 'विश्व स्नेह समाज' हिन्दी मासिक, वरिष्ठ महिला साहित्यकार डॉ० तारा सिंह विशेषांक, फरवरी ०८ का संपादन कर गर्वान्वित है. हिन्दी साहित्य जगत की वरिष्ठ कवयित्रि, गीतकार, ग़ज़लकार डॉ० तारा सिंह, एक सुपरिचत व्यक्तित्व है. उन्हें वर्षो से साहित्य समारोहों, कवि सम्मेलनों, हिन्दी संकलनों, पत्र-पत्रिकाओं में नियमित देखने का अवसर मिलता है. उनके एक दर्जन से अधिक ग्रंथ है. उन्हें अनेक पुरस्कार, सम्मानोपाधियॉ प्राप्त है. डॉ० तारा सिंह कितनी संस्था एवं संस्थानों से जुड़ी है. उनकी रचनाऍ उनकी सुरुचि सम्पन्नता का प्रतीक है. उनकी हिन्दी के प्रति की गई सेवा हिन्दी साहित्य को अवदान है.

उनका सृजन हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि करता रहे.
नये नये केसर गुलाब से वसुधा तल भर जाए।
सुरभि प्रसारे पवन सुगन्धित मानवता हो जाए।।

भवदीय
श्याम लाल उपाध्याय
मंत्री

साहित्यिक, सांस्कृतिक कला संगम अकादमी, परियांवा के सचिव व साहित्यकार **वृन्दावन त्रिपाठी 'रत्नेश'** क्या लिखते हैं डॉ० तारा सिंह के बारे में, देखिए-

मेरी नजर में डॉ. तारा सिंह:रत्नेश

राष्ट्र तथा राष्ट्रभाषा को समर्पित, स्वांस-स्वांस काव्य कला को अर्पित, प्रबुद्ध जीवन के एक एक पल को सार्थक भाव से मुस्करा कर जीने वाली, मां वीणापाणि के चरणों में नैवेद्यवत् प्रतिष्ठित, अर्वाचीन संस्कृत रचना धर्मिता, जीवन्तता तथा युगापेक्षी सारस्वत अध्यवसाय की समर्थ प्रतीक, अनेक भाषाओं में परिस्मात रस सिद्ध कवि एवं तात्विक समीक्षक डॉ० तारा सिंह आज हिन्दी साहित्य की दुनिया में पहचान की मोहताज नहीं है. १० अक्टूबर १९५२ को जन्मी, कुलीन माता-पिता के स्नेह एवं छत्रछाया में संस्कारित तारा सिंह का परिणय संस्कार महान शिक्षाविद्, समाज सेवी, विचारवान मनीषी डॉ० ब्रहमदेव प्रसाद सिंह के साथ सम्पन्न हुआ. वाल्यावस्था से ही तारा सिंह का झुकाव हिन्दी भाषा के विकास, उन्नयन एवं रचना धर्मिता की ओर था, किन्तु हिन्दी प्रेमी पति डॉ० सिंह का साथ पाकर मानों तारा सिंह की लेखनी को पंख लग गए. वे निरन्तर लेखन के क्षेत्र में आगे और आगे बढ़ती गई और आज उनकी लगभग एक दर्जन पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है. इनके पति डॉ० ब्रहमदेव प्रसाद सिंह, जगदीश चन्द्र बसु महाविद्यालय, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता में रीडर एवं रसायन विभागाध्यक्ष रहे. डॉ० सिंह भी महान हिन्दी प्रेमी एवं कला प्रेमी है. उन्होंने पत्नी तारा सिंह को लेखन के क्षेत्र में जो प्रोत्साहन दिया है और दे रहे है वह वन्दनीय है. मैं डॉ० तारा सिंह से ज्यादा डॉ० ब्रहमदेव प्रसाद जी का इसलिए सम्मान करता हूँ क्योंकि उन्होंने पत्नी के लेखन का रास्ता सहज बनाने में बड़ा त्याग किया है.

डॉ० तारा सिंह की प्रकाशित कृतियां इस प्रकार है-एक बूंद की प्यासी,

मैं डॉ० तारा सिंह से ज्यादा डॉ० ब्रहमदेव प्रसाद जी का इसलिए सम्मान करता हूँ क्योंकि उन्होंने पत्नी के लेखन का रास्ता सहज बनाने में बड़ा त्याग किया है.
उनकी सम्पूर्ण कृतियां मील का पत्थर है जिन्होंने उनकी अमरता को सुनिश्चित कर दिया है. प्रायः डॉ० तारा सिंह जी आत्म प्रशंसा से बचना चाहती है.

सिसक रही दुनियां, हम पानी में भी खोजते रंग, एक पालकी चार कहार, सांझ भी हुई तो कितनी धुंधली, एक दीप जला लेना, रजनी में भी खिली रहूं किस आश पर, अब तो ठंडी हो चली जीवन की राख, यह जीवन प्रातः स्मरण सा लघु है प्रिये, तम की धार पर डोलती जगती की नौका तथा विषाद नदी से उठ रही ध्वनि. इसके अतिरिक्त दो पुस्तकें यंत्रस्थ है. प्रायः आप की अधिकांश काव्य एवं गीत भावना प्रधान है. आप छायावाद की प्रसिद्ध कवियित्रि मानी जाती है. आपकी रचनाएं संस्कृतनिष्ठ व क्लिष्ठ है. आपकी रचनाओं में राष्ट्रीयता का विम्ब सर्वत्र देखा जा सकता है. धर्म, अध्यात्म, दर्शन, पर तो लिखा ही है किन्तु सामाजिक विसंगतियों के विरोध में भी बेधड़क कलम चलाई है. आपकी सभी रचनाएं चिन्तनपरक है. आपकी रचनाएं हृदय और मस्तिष्क दोनो में हलचल पैदा करती है. डॉ० तारा सिंह मूलतः कवयित्री है. उन्होंने अपने सम्पूर्ण वांङमय को नवीन चिन्तन द्वारा और भी ऊर्जावान बनाने का सार्थक प्रयास किया है. उनकी कृतियों पर ज्यादा चर्चा न कर इतना अवश्य कहना चाहूंगा कि उनका सम्पूर्ण रचना संसार अद्वितीय, अकल्पनीय व कालजयी है. उनके पुस्तकों पर अनगिनत समीक्षाएं प्रकाशित हो चुकी है जिसमें उनके पुस्तकों की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई है. उनकी सम्पूर्ण कृतियां मील का पत्थर है जिन्होंने उनकी अमरता को सुनिश्चित कर दिया है. प्रायः डॉ० तारा सिंह जी आत्म प्रशंसा से बचना चाहती है. उन्हें अब तक प्रायः देश की सभी नामी गिरामी संस्थाए अलंकृत कर चुकी है. श्रीमती सिंह अपना अधिकांश समय पुस्तकों के प्रणयन में तो लगाती ही है किन्तु साहित्यिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए वे देश भर में स्वखर्च पर भ्रमण करती है. वे साहित्यिक मंचो की शान समझी जाती है. आप की रचनाएं देश की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं तथा संकलनो में निरन्तर प्रकाशित होती रहती है. प्रायः हर विधा के लेखन में आपको महारत हासिल है. मंचो पर आपकी वाणी बरबस श्रोताओं को अपनी ओर आकृष्ट कर लेती है और मुग्ध कर देती है. कविता एवं गीत के क्षेत्र में कोमल भावनाओं की प्रस्तुति कोई आपसे सीखे. आपकी सभी रचनाएं पाठकों के हृदय पर गहरा प्रभाव डालती है. सामाजिक कार्यो में भी आप सपरिवार बढ़ चढ़ कर भाग लेती है. जरुरतमन्दों की सेवा करना

जैसे आप पूजा समझती है. आपका एवं डॉ० साहब का उद्देश्य ही साहित्य एवं समाज सेवा है. डॉ. तारा सिंह का सारस्वत व्यक्तित्व अत्यन्त समृद्ध, सरल एवं गगनचुम्बी है. आपके अपनत्व में देवत्व का बोध होता है. परिश्रम, संघर्ष तथा सृजनशीलता ने तारा सिंह को उन नक्षत्रों के बीच ला खड़ा किया है जिसका प्रकाश सदैव प्रज्जवलित होता रहेगा. आप पुरातन पीढ़ी की कवयित्री मानी जाती है और उनका प्रतिनिधित्व भी करती है. साथ ही नई पीढ़ी का भी आप प्रतिनिधित्व करती है और उन्हें प्रेरणा प्रदान करती है. मैं उनकी रचनाओं के सन्दर्भ में पुनः उपरोक्त शब्दों को दोहराना चाहूंगा कि आपकी अनेक रचनाओं में समाज की विसंगतियों और उसकी समकालीन दशाओं पर दृष्टिपात करते हुए उन कुरीतियों, रुढ़ियों एवं विसंगतियो पर करारा प्रहार किया है जो हमारे समाज को घुन की तरह चाट रहा है. आपने उन विसंगतियो पर करारा प्रहार किया है जो हमारे समाज को घुन की तरह चाट रहा है. आपने उन विसंगतियों के निराकरण के लिए सम्भावनाओं के क्षितिज का भी उद्घाटन किया है. इसलिए उनकी रचनाओं की गर्भिता आक्षुण्य दिखाई देती है. उनकी रचनाओं में एक विचारोत्तेजना का सम्यक संसार बसा हुआ है. आपकी रचनाओं का शिल्प पक्ष, भाव पक्ष की भांति नितान्त सहज एवं स्वाभाविक है जो हर पाठक के लिए बोधगम्य है. सन्दर्भो के आलोक मे डॉ० तारा सिंह बहुत ही सहज व जागरुक दिखाई पड़ती है. इसलिए उनकी रचनाएं ज्वलन्त विषयों पर उनकी अनुभूति तथा अभिव्यक्ति एक नए तेवर के साथ पाठकों के समक्ष आती है. उनका सम्पूर्ण संसार “सर्वे भवन्तु सुखिनः” का उद्घोष करता हुआ प्रतीत होता है.

हिन्दी की सेवा में आप पूर्णतः समर्पित है. समकालीन परिस्थितियों के सन्दर्भ में आपकी रचनाएं सार्थक है. आपकी रचनाओं में न फरेब का ताना बना बुना गया है और न हवाई किले बनाए गए हैं. अपितु उसमें यथार्थ का रंग भरा गया है तथा युगीन परिस्थितियों का प्रभावशाली वर्णन है. सब कुछ सत्य, सहज, सरल हृदयग्राही, विज्ञान सम्मत व विश्वसनीय है. डॉ. तारा सिंह निरन्तर साहित्य साधना में रत है. वह इस युग की असाधारण कवयित्रि व गीतकार हैं. उनके अन्दर अपार ऊर्जा है, साहस है, श्रम शक्ति है जो उनकी रचनाओं में स्पष्ट रुप से दिखाई पड़ता है. साहित्य संसार को उनसे काफी आशाएं है. वह शतायु हों, निरोग रहें निरन्तर अवाधिगति से मां भारती के भण्डार को परिपूर्णित करती रहें, यही प्रभु से प्रार्थना है.

++++++++++++++++++++++++++

लाल कला, सांस्कृतिक एवं सामाजिक चेतना मंच, नई दिल्ली के सचिव लाल बिहारी ‘लाल’ क्या कहते है डॉ० तारा सिंह के बारे में-

आज का ताराः कल का ध्रुव तारा

कलम का जो लाल बना, उनमें ईक तारा।
कृति फैल रही ऐसे, मानों जस ध्रुवतारा।।

यह जानकर काफी खुशी हुई कि राष्ट्रीय हिन्दी मासिक ‘विश्व स्नेह समाज’ द्वारा छायावाद की सशक्त कवियित्री डॉ० तारा सिंह पर केन्द्रित फरवरी २००८ का अंक प्रकाशित करने जा रही है. डॉ० सिंह साहित्य रुपी नक्षत्र की शोभा तारा के रुप में बढ़ा रही है. ठीक उसी तरह जिस तरह निशा की शोभा तारे बढ़ाते है.

इनकी रचनायें सामाजिक एवं जन पृष्ठभूमि पर आधारित होती है जो जन मानस को एहसास कराती है कि समाज में जो घट रहा है वही वह रच रही है. आशा है आज का तारा कल का ध्रुवतारा बनेंगी.

मै उनके उज्जवल भविष्य एवं दीघार्यु होने की कामना करता हूँ.

निकाल रहा विशेषांक विश्व स्नेह समाज।
शनै-शनै हिंदी स्नेह भारत में फैले आज।।
शब्द-शब्द में सम्पदा, पाकर अर्थ विशेष।
जन-जन के देती सदा, भावपूर्ण उपदेश।।
कितनी रचनायें कितनी कवितायें हुई है प्रकाशित।
इनकी रचनाओं से है हिन्दी आज सुवासित।।
गद्य पद्य में सिद्ध है, जस तारा जस तारा।
छायावाद की उभर आयी मानो एक ध्रुवतारा।।
जिसने भी रचना पढ़ी पुल्कित हो गए प्राण।
राहत मिले हर दिल को यही इनकी पहचान।।
मिलनसार स्वभाव इनके अनुभव ज्ञान अशेष।
देती सदव्यवहार से जीवन का सन्देश।।
हिन्दी के नभ क्षेत्र में नाम इनका दमके।
तारा लाभ ध्रुवतारा बन, दुनिया में चमके।।

राष्ट्रीय राजभाषा पीठ, इलाहाबाद के अध्यक्ष, साहित्य मार्तण्ड *डॉ० सन्त कुमार टण्डन 'रसिक'* जो अपनी संस्था द्वारा डॉ० तारा सिंह को सम्मानित भी कर चुके है क्या कहते है डॉ० तारा के बारे में-

मेरे भाव: मेरे विचार

क्या लिखूँ मैं शब्द दो, शुभकामना के,
है यही आशीष मेरी, तुम बनो प्रिय
भारती के चित्र की, अनुपम चितेरी

श्रीमती तारा सिंह जिस स्फूर्ति व गति से साहित्य के उपवन में एक के बाद एक वृक्ष रोपती जा रही है, उनकी छाया, फूल, फल सभी तन-मन, आत्मा-प्राण को जो आनन्द दे रहा है, वह शब्दातीत है. काव्य-रसिको को जो परितृप्ति मिल रही है, वह तो है ही, मैं विश्वासपूर्वक आशा करता हूँ कि नव काव्य साधक तारा जी की कविताओं में डूबकर, रस लेकर, अपनी रचना धर्मिता को संस्कारित कर सकते है. मेरा आशय यही है कि वे प्रेरणादायिनी कवयित्रि हैं.

श्रीमती तारा सिंह की यह आठवीं काव्य पुस्तक है-सरस्वती के मंदिर में यह उनका आठवॉं दीपक है. मैं कामना करता हूँ, ऐसे शत-सहत्र दीपक प्रज्जवलित कर वे सरस्वती के मंदिर में ऐसा प्रकाश करें, जो युगों तक अपना आलोक बिखेरता रहे.

मैं काव्य को आनंद का विषय मानता हूँ. कविता की आलोचना-समीक्षा मैंने कभी नहीं की. न योग्यता है, न शक्ति साहस. हॉं, मनुहार के और प्रेरणा के दो शब्द कह देना और बात है. इतनी ही मेरी इति है.

'अब तो ठंढी हो चली जीवन की राख' में ३१ कविताएं ७८ पृष्ठों में समाहित हैं. निश्चय ही, तारा जी की ये नव प्रसूत कविताएं हैं क्योंकि इनके सात काव्य-ग्रंथ प्रकाशित हो चुके है. मैंने इन कविताओं को समझने के साथ रस लिया है. जीवन की अनेक अवस्थाओं-स्थितियों के चित्र हैं इनमें. साथ में चिन्ता भी है. चिन्ता मानव की, समाज की, देश की, अपने गौरव-मर्यादा-संस्कृति की. एक नारी ही इतने भाव संवार सकती है क्योंकि वह मॉ है, भार्या है, भगिनी है, अनेक संम्बधों का सुंदरतम निर्वाह करती है, वह प्रकृति है, पृथ्वी है, आकाश है. सम्पूर्ण सृष्टि है नारी. अतः अपनी व्यापक दृष्टि, गहन अनुभूति, कल्पना और संवेदना के साथ कवयित्रि ने स्वयं को इन कविताओं में व्यक्त किया है. सौन्दर्य, प्रेम-प्रणय की स्मृतियॉं, श्रद्धा-समर्पण-सेवा, सामाजिक सम्बंधों के निर्वाहन में संतोष और पीड़ा, मानव-मन की आकांक्षाए, परम शक्ति में विश्वास, अभिलाषा और तृष्णा, उत्कंठा, उपासना, वंदनीय आत्मांए, पर्व, कृषक, जीवनगत विषमताएं-समस्याएं, मांगलिक उद्गार, आशा-निराशा, कितने ही विषयों को तारा जी ने अपना काव्य-विषय बनाया है. उनका हृदय और विवेक साथ-साथ चलकर जो विचारों का संगम देता है, उसमें अवगाहन पर पाठक अपने को परिष्कृत कर ऊर्जा, उत्साह और आस्था से आप्लावित पाता है. आशा है, सभी पाठक ऐसा अनुभव करेंगे. कवयित्रि के काव्याकाश की ये सभी कविताएं तारा है. आप अपनी पसन्द से इसमें ध्रुवतारा अंकित करें. कठिनाई होगी, क्योंकि यह चयन इतनी श्रेष्ठ कविताओं में कठिन है.

वरिष्ठ नाटककार एवं कवि **डॉ० प्रमोद सक्सेना 'पुष्कर'** जी क्या कहते है-

डॉ० तारा कविता को लिखती हीं नहीं बल्कि उनमें जीती भी है

जीवन के जिस महत्वपूर्ण दर्शन को रचनाकार डॉ. तारा सिंह ने अपनी काव्य श्रृंखला में उकेरा है उसे एक मुमुछु के समान देखता हुआ कुछ समझ सका और कुछ नहीं भी समझा. डॉ. सिंह की १४ पुस्तकों के साहित्यिक अवदान में पलती हुई पीड़ा में डूबने के प्रयत्न में, मैं अपने ही होश गंवा बैठा और उलट फेर करके यूं पढ़ने लगा.

विषाद की नदी से उठ रही ध्वनि की गूंज, तम की धार पर डोल रही जीवन की नैया हा हश्र, एक पालकी चार कहारों पर सवार ठंढी सी हो चली जीवन की राख, चीख चीखकर कह रही थी 'नगमें मेरे दिल के' लेकिन यह जग स्वप्न आसार सा देखकर, सिसक रही थी दुनिया क्योंकि यह जीवन प्रातः समीरण सा लघु सा है और नदिया-स्नेह बूंद सिकता बनती जा रही उसी एक बूंद की प्यासी इसीलिए वह पानी में भी खोजती रंग है और यूं सांझ हुई तो कितनी धुंधली, कोई एक दीप जला लेना, तुम ताकि रजनी में भी खिली रहूंगी किसी आस पर'

डॉ० सिंह द्वारा उपरोक्त साहित्यिक १४ अवदानों को यूं क्रम से पलट कर भी मैं इसकी स्वभाविक ध्वनियों को सुनकर अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हुए यही कहूंगा कि रचनाकार कविता को लिखती हीं नहीं बल्कि उनमें रमकर जीती हुई प्रतीत होती है और इसके लिए वे प्रशंसा की पात्र है. डॉ० सिंह की सफलता की कामना करते हुं.

रंजन कलश, भोपाल के अध्यक्ष डॉ० सुशील गुरु क्या कहते है डॉ० तारा सिंह के बारे में-

डॉ० तारा की कविता की भाषा आम आदमी की बोलचाल की भाषा है

विश्व स्नेह समाज द्वारा डॉ० श्रीमती तारा सिंह के व्यक्तित्व और कृतित्व के बारे में लिखने का आमंत्रण मिला. तो आभास वैसा ही हुआ जब मेरी पुस्तकों पर डाक्टरेट करने का अनुरोध हिन्दी का अध्ययन कर रहे एक सैनिक अधिकारी ने किया. विशेष तो नहीं परन्तु एक हाथ में गन और दूसरे में कलम का सामंजस्य विरले ही कर पाते हैं, जो अम्माजी और धरती मॉ के आर्शीवाद से मैंने सफलता पूर्वक किया. किसी व्यक्तित्व और कृतित्व के बारे में लिखने का अर्थ हुआ कि उसके अंदर घुसकर उसको जानना, रचित पुस्तकों का अध्ययन कर उसका मनन करना. श्रीमती तारा सिंह की शिक्षा भागलपुर में हुई जहॉ उनके पिताश्री कार्यरत थे. प्रारंभ से ही साहित्यिक गतिविधियों में लिप्त रहीं तथा शब्द से मित्रता का आभास तब हुआ जब उनके लेखन की प्रशंसा सार्वजनिक रुप से होने लगी. स्नातक तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद उनका विवाह डॉ० श्री ब्रहमदेव प्रसाद सिंह जी से हुआ जो आचार्य जगदीश चंद्र बसु महाविद्यालय (कलकत्ता विश्वविद्यालय) में प्रोफेसर थे. जिन्होंने उनको अभूतपूर्व सहयोग दिया जो उनकी आज की सफल साहित्यकारिता का जीता-जागता प्रमाण है.

उनके बारे में यह स्पष्ट रुप से कहा जा सकता है कि उनकी कविता की भाषा आम आदमी की बोलचाल की भाषा है-सबकी समझ में आने वाली-इनकी लोकप्रियता का कारण भी यही है. भाषा मिथकीय या प्रतिरंजित नहीं है. प्रभाव बढाने के लिए न उन्होंने बढ़ा-चढ़ाकर चमत्कारिक ढंग से बात कहने की प्रवृति को अपनाया है, न ही समानता की सारी सीमाओं से बाहर संवेगों और महाबिम्बों की भाषा का प्रयोग किया है. ऐसा अनुभव होता है कि इस बोलचाल के लहजे की प्रेरणा उनको भवानी माई से तो नहीं मिली जिन्होंने विचारों की अभिव्यक्ति बड़ी सादगी से करवाई है.

> डॉ० तारा की कविता की भाषा आम आदमी की बोलचाल की भाषा है-सबकी समझ में आने वाली- इनकी लोकप्रियता का कारण भी यही है.
>
> तारा सिहं जी उनमें से एक है. उनका कोई तखल्लुस नहीं है. तखल्लुस उनका स्वयं हो गया है. इस सत्य में एक एहसास है. निश्चय ही वे प्रतिभा की धनी हैं.

श्रीमती तारा सिंह का चिंतन, एक द्रष्टा के रुप में और चेतना को कविता के रुप में, कविता के माध्यम से व्यक्त करना ही संभव है. प्रकाशित काव्य संग्रह प्रदीर्घ साधना के साक्ष्य है. हृदय में उपजे यथार्थ को उजागर करने का यह रचनात्मक उपक्रम निश्चय ही एक सजग रचनाकर्मी की प्रतिष्ठा का प्रतीक है.

आज मानव अनजाने वात्याचक्रों से घिरे होने के कारण, संवेदनायें और संवाद से दूर होता जा रहा है. हवाओं में क्षणभंगुर विचारों के तिनके उड़ाये जा रहे है. ऐसे वातावरण में इस रचनाकार ने 'अब तो ठंढी हो चली जीवन की राख',यह जीवन प्रातः समीरण सा लघु है प्रिये, विषाद नदी से उठ रही ध्वनि, नगमें है मेरे दिल के, यह जग स्वप्न आसार आदि संग्रह पाठकों को देकर साहित्य जगत में जागृति लाने का प्रयास किया है. साहित्य मनुष्य की वैचारिक मुक्ति का स्रोत है. यह उसे भ्रांतियों से बाहर लाने का कार्य तथा मनुष्यत्व के पक्ष में लाने का प्रयास करना है. उन्होंने तम की धार पर डोलती जगती की नौका में लिखा है कि-

मनुज मन की आत्मा संग,
रिश्ते भी हो गये मैले।
ज्योत्सना में झंझा से,
कंपित होकर गिरती थी,
जो हल्की फुहारे,
मनुज स्मृति भगोने नहीं रही।।

अंतर्मन में स्नेहिल झोकों के साथ एक से बढ़कर एक उत्तम विचार आते रहते है परन्तु याद रखना या कलमबद्ध करना सरल नहीं है क्योंकि भावो/विचारों के आने की प्रक्रिया, लिखने की प्रक्रिया से सौ गुणा तीव्र होती है और उन विचारों को किसी विधा की सीमाओं में बॉधकर लिखना और भी कठिन कार्य होता है. ऐसे वे ही रचनाकार होते हैं जिनकी जिहवा पर सरस्वती विराजती है. तारा सिहं जी उनमें से एक है. उनका कोई तखल्लुस नहीं है. तखल्लुस उनका स्वयं हो गया है. इस सत्य में एक एहसास है. निश्चय ही वे प्रतिभा की धनी हैं.

मुझे पूरा विश्वास है कि वे भविष्य में भी इसी प्रकार की उच्चस्तरीय रचनाओं द्वारा साहित्य और समाज की सेवा करती रहेंगी. इन्हीं शुभ कामनाओं के साथ,

गाजियाबाद, उ.प्र. के कवि एवं पत्रकार **कृष्ण मित्र** जिन्होंने डॉ० तारा सिंह जी की कई पुस्तकों पर समीक्षा भी लिखी है, क्या कहते इनके बारे में देखिए-

डॉ० श्रीमती तारा सिंह

डॉ० श्रीमती तारा सिंह, से मैं विगत तीन चार वर्षो से उनके साहित्यिक अवदान के कारण परिचित हूँ. उनके कुछ काव्य संकलनों की समोलोचनात्मक समीक्षा करके मैं उनके विषय में परिचित हुआ हूँ. गाजियाबाद में हुए एक हिन्दी के कार्यक्रम में उनसे भेंट हुई थी. उस साधारण और अनौपाचारिक भेंट के बाद उनके प्रकाशित कविता संग्रहों की एक श्रृंखला देखकर मैं उनसे प्रभावित हुआ. उन्होंने गीत, ग़ज़ल, मुक्तक, कविता, घनाक्षरी, सवैया आदि हिन्दी की अनेक विधाओं में साधिकार साहित्य रचना की है.

डॉ० श्रीमती तारा सिंह के पति डॉ. बी.पी.सिंह जो यद्यपि हिन्दी साहित्य के विद्यार्थी स्वयं को नहीं मानते, परन्तु उनकी साहित्यिक परख निश्चित अपनी साहित्यकार पत्नी के मार्ग दर्शन में कुछ भी कम नहीं है. डॉ० तारा सिंह की अनेक काव्य पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है. उनमें उनकी प्रतिभा के प्रत्यक्ष दर्शन होते है. वह अध्ययन शील और परिश्रमी महिला है. संस्कार सम्पन्न व्यक्तित्व की धनी डॉ० श्रीमती तारा सिंह मृदुल व्यवहार युक्त एवं सरल स्वभावी लेखिका है. उनमें सबसे सहज गुण है कि वह अपनी विलक्षण प्रतिभा से अपने से बड़े और छोटे सभी को आकर्षित करने की क्षमता रखती है. उनसे प्रथम परिचय से ही उनके बौद्धिक और विद्वता पूर्ण स्तर का पता लग जाता है. किसी कवि की एक दर्जन से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हों और उसमें अहंकार नाम की वस्तु कहीं देखने को भी ना मिले तो स्वयं ही अनुमान लगाया जा सकता है कि वह कितना धनी और समृद्ध लेखक है. डॉ. श्रीमती तारा सिंह के विषय में ऐसा ही सोचा जा सकता है. उन्हें अनेक साहित्यिक संस्थाओं ने उनकी रचना धर्मिता के लिए सम्मानित किया है. ऐसी कवयित्रि पर आप अपने मासिक पत्र का विशेषांक प्रकाशित कर आप साहित्य की सेवा करने का पवित्र कार्य कर रहे है. मेरी कामना है कि डॉ० तारा सिंह अपने लेखन से हिन्दी के साहित्य की निरन्तर श्री वृद्धि करती रहें. ईश्वर उन्हें दीर्घ समय तक स्वस्थ जीवन प्रदान करें. यही कामना है.

+++++++++++++++++++++

जालधर के वरिष्ठ साहित्यकार श्री फ़कीर चंद जलंधरी जी क्या कहते है डॉ० तारा सिंह के बारे में

काव्य चित्र-डॉ० तारा सिंह

धुली चॉदनी ने जब देखा, रचना का आकाश तुम्हारा
मौत की भीति ने जब जाना, इन छन्दों का तारा तारा
बेबस, कातल, ग्रीष्म ने तो, शून्यता में किया किनारा
सुन तारा................बोले इकतारा....
पारजात के फूलों का घर, खारघर ये तारा का है, तारो का है
सुरभित और सुगंधित साहिल, ये धर्ती की बहती अमृत धारो का है
तेरे छन्दों के वाणो में, ग्रीष्म सा जो धरा का ग़म है
मूँदित ऑखें खालो तारा, क्षुब्ध, उदास यहॉ दम दम है
बहुत अचंभित हुई ग्रीष्म, अग्नि-कुंड में किसने की हिमपात
बात पताल फूट पड़ने की कर दी किसने मात
हुई अचंभित ग्रीष्म, बरसी ज़मज़म से बरसात तारा!
ग्रीष्म-लपट-ऑच में तुमने हुस्न-वसंत संवार
मन्द मन्द वसुधा बरसाए, तेरा छन्द कुँवारा
सब तेरे छन्दों की धारा
धुली चॉदनी से छन्दों पर, ग्रीष्म के इक इक फंदो पर
थिरके तेरा छन्द दुलारा
सुन तारा.....बोले इकतारा
ooooooooooo
सांस,अ-सांस की तार पे चल चल, कविता चाहे
पल पल तुझको जीना होगा, नीलकंठ से पहले पहले,
मीरा बन कर, जहर प्याला पीना होगा
धूप का प्यारा टुकड़ा बन बन जीना होगा
बन बन के दामन को तुझको छन्द छन्द से सीना होगा
सागर में मछली मछली का तुझको बनना दाना-बीना होगा
मिले ना मिले जनम दोबारा
शून्य नभ का कुल पारकर, जीवन के शतदल पर लहरे,
कविता का ॲंगारा
कविता का ॲंगारा ही है- सूर्य, चॉद, सितारा
सुन तारा। बोले इकतारा...
निर्मम, कंटीले राहो पे,नंगे नंगे पॉव गुज़रकर
ग्रीष्म की किरचों पे चलकर, जबसे तुम आए हो तारा!
धुली चॉदनी तब से तड़पे, रात बनी है तारा तारा
रात हुई है पारा पारा, छन्दों की ऑखों में तड़पे सागर
खारा, सुन तारा! बोले इकतारा.

::

साहित्यकार **पी.एस.भारती**, बरेली, यू.पी से क्या कहते है डॉ. तारा सिंह के रचनाओं पर–

आपकी कृति मानस हेतु एक प्रेरणा संदेश बनें

'अर्न्तमन' संकलन में प्रकाशित आपकी सशक्त लेखनी की सृजनात्मक छवि का अवलोकन 'एक दीप जला लेना' में किया. रचना बहुत ही श्रेयष्कर है. आपको इस हेतु बधाई. साधुवाद! शब्द शिल्प का भाव व्यजंना के साथ सुन्दर सामजस्य बड़ा ही रुचिकर लगा. आपकी कृति का आशावादी रुप जब मानस हेतु एक प्रेरणा संदेश बनें. यही मेरी कामना है. शुद्ध हिन्दी से सजाई गई आपकी दीप जला लेने की आकांक्षा कहीं कही जगत में तिरते तिरते दर्शन का चित्रण भी करती प्रतीत होती है. कम ही रचनाकारों की भाषा एवं भाव पर इतनी अच्छी पकड़ देखने में आती है. 'अर्न्तमन' संकलन को प्राप्त करके, पढ़ने के पश्चात् मैंने अच्छी कृतियो के कृतिकारों को पत्र लिखें है इसी सन्दर्भ में आपको यह पत्र प्रेषित है. मेरा मानना है कि संकलन का प्रकाशन केवल प्रकाशन मात्र ही नहीं होता वरन यह उसमें सहयोगी रहे रचनाकारों को एक दूसरे की रचनाओं के लिए उत्साहित करने, एक दूसरे से परिचय के लिए भी उपयोगी है. यदि सभी बुद्धिजीवी इस ओर गम्भीरता से प्रयास करें. आपने मेरी कृति 'हृदयोद्‌गार' को पढ़ा और उसका प्रशंसात्मक पत्र आपने अपनी कृति के साथ भेजा. यह आपकी महानता है कि इस तुच्छ कृति को सराहा. मेरा बड़ा अहोभाग्य कि मेरी कृति एक महान कवयित्री, देश की एक महान विभूति के कर कमलों का स्पर्श कर कृतार्थ हुई.

आशा है कि आप भविष्य में भी स्नेहकर मेरे मस्तक पर रखेंगी और साहित्य जगत में अग्रसर होने को प्रेरित करती रहेंगी.

++++++++++++++++++++++++++++++++++

साहित्यकार **हरीराम शर्मा जांगिड़**, जोधपुर से क्या सोचते रचनाकार डॉ० तारा सिंह के बारे में–

मानों शारदा इस धरातल पर उतर आई हो

आप द्वारा प्रेषित कृति 'विशाद नदी से उठ रही ध्वनि' प्राप्त हुई. प्रेषण के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद. इस सुकृति को मैंने बहुत प्रेम पूर्वक एकाग्र चित्त होकर आद्योपांत पढ़ा, मनन किया. मुझे ऐसा लगा मानों शारदा इस धरातल पर उतर आई हो. निराला की आत्मा की आवाज की गुंजन हो रही है.

यह कृति बहुत सुन्दर, चिताकर्षक, सारगर्भित है. इसमें जीवन की गहन अनुभूतियों का अत्यन्त ही आकर्षक भाषा में चित्रण किया गया है. फिर भी तुमसे मिलने की प्रतीक्षा से लेकर, जो बिना स्पर्श किये ही पुलकित करता था मुझको, यानि आदि से अन्त तक सभी रचनाएं बहुत ही उत्कृष्ट व उच्च्य स्तरीय है. मैं तो कहूँगा कि साहित्य जगत में यह एक अद्वितीय कृति है. आपकी भावनाओं की उड़ान-परवाज़ गगनचुम्बी है. इसके लिए आपका अभिनंदन.

++++++++++++++++++++++++++++++++

साहित्य प्रेमी **राजेश सोनी 'राज'**, इंदौर से क्या कहते है डॉ. तारा सिंह के बारे में–

आपकी रचनाएं यत्र तत्र सर्वत्र पढ़ने में आती है, जो कि बहुत पसंद आती है. हाल ही में प्रकाशित काव्य संकलन'साहित्य दर्पण', न्यू ऋतुभंरा में 'यह जग से हुआ है निर्मित' तथा 'संस्कृति और सम्प्रदाय' हृदय को छू गई. इसी प्रकार नया क्षीतिज में प्रकाशित–'अभी मरने की बात कहॉ–'श्रेष्ठ बन पड़ी है. वहीं मॉ आती है तुम्हारी याद अमिट छाप छोड़ती है. इन उत्कृष्ट रचनाओं के सृजन पर हार्दिक बधाईयां एवं शुभकामनाएं स्वीकारें.

आगे भी आपकी रचनाएं, निरंतर पढ़ने को मिलेगी जो साहित्य पथ को आलोकित करती रहेगी?

इन्हीं मंगलकामनाओं के साथ हार्दिक आभार!

++++++++++++++++++++++++++++++++

कवि तथा जिला संयोजक अ.भा.सा.परिषद **अशोक सिहांसने**–नामदेव, बालाघाट, से क्या कहते है–

सरस्वती सुता साहित्य जगत की गौरव भारतीय हिन्दी साहित्य को अपने सुखद अंजाम तक पहुंचाने की डगर में एक कदम आगे जोड़ने वाली डा. तारा सिंह का नाम भारतीय साहित्य जगत के इतिहास में बड़ी ही सिद्दत से लिया जावेगा. लगभग सोलह स्वरचित काव्य संकलनों एवं लगभग चालीसों सहयोगी संकलनों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने एवं लगभग ६७ से भी अधिक सम्मानों एवं उपाधियों से सम्मानित एवं कई साहित्यिक संस्थाओं की सदस्या डॉ० तारासिंह का नाम ही अपनी एक अलग पहचान है.

रा.मा. पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' गीत, ग़ज़ल एवं कविताओं की मर्मज्ञ डॉ. सिंह पर एक विशेषांक निकालने जा रही है. आशा है यह अंक साहित्य जगत को एक विशिष्ट पहचान बनेगा एवं अपने लक्ष्य को प्राप्त करेगा.

डॉ० तारा सिंह के साहित्यिकि मित्र **इन्द्र बहादुर सेन 'कुंवर कांत'**, से क्या सोचते है उनके बारे में-

साहित्याकाश का उदीयमान नक्षत्र: तारा सिंह

आधुनिक हिन्दी साहित्य जगत में शनैः, शनैः अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाकर आगे बढ़ती हुई मुम्बई निवासी, कवियित्रि तारा सिंह आज पूरे देश के साहित्य प्रेमियों के हृदयों में अपनी छाप छोड़ चुकी है जिसका स्पष्ट प्रमाण है राष्ट्रीय स्तर पर उन्हें विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं द्वारा दिये गये कुल ६७ सम्मान. इसके साथ ही साथ उनकी रचनायें लगभग २० राष्ट्रीय/अर्न्तराष्ट्रीय स्तर के संकलनों में प्रकाशित हो चुकी है. आज देश के किसी भी भाग से प्रकाशित मासिक/साप्ताहिक पत्र में डॉ. तारा सिंह की रचनायें पाठकों को पढ़ने को मिल जाती है. यह उनके सफल साहित्यिक जीवन की एक विलक्षण उपलब्धि है.

तारा सिंह को बचपन से लेकर युवावस्था तक संघर्षो की एक लम्बी राह से गुजरना पड़ा था क्योंकि उनका जन्म बिहार के एक गांव में एक मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ था जहां पर शहरों की तरह कोई भी सुविधा मौजूद नहीं थी, कहा जाता है 'प्रतिभा किसी बात की मोहताज नहीं होती.' तारा सिंह ने भी स्वप्रयासों के द्वारा अपनी राह खुद तैयार की है और आगे को बढ़ती रही रही हैं. वे सिर्फ लेखन के क्षेत्र में ही नहीं, वरन विद्यार्थी जीवन में सभी प्रकार की प्रतियोगिताओं में अब्बल रही है. चूँकि उनका प्रारम्भिक जीवन गॉव की सुन्दर वादियों से शुरु हुआ है इसलिए स्वाभाविक है कि उन पर गांव की सुन्दर वादियों का प्रथम प्रभाव पड़ा था. इसीलिए उनकी रचनाओं में छायावाद एवं प्रकृति का सम्पूर्ण प्रभाव देखने को मिलता है. प्राकृतिक सौंदर्य में रची बसी इनकी कवितायें पाठकों को वरबस ही अलौकिक आनन्द का बोध कराती है तथा सांसारिक प्रेम और अध्यात्म दर्शन के साथ दार्शनिकता के भावों का सुन्दर परिचय कराती है. कवियित्री, व्यक्तिगत कठिनाइयों, जीवन संघर्षो को भी सफल ढ़ंग से प्रस्तुत करने में सिद्धहस्त है, प्रेम की आराधना अन्तर्मन की दुविधायें सौन्दर्य, करुणा के क्षेत्र में कवियित्री की लेखनी बहुत सटीक ढ़ंग से चलती दिखाई पड़ जाती है.

आज उनकी रचनायें वेब साइटों पर भी देखनें को मिल जाती हैं. 'जय हिन्द के सिपाही' नामक फिल्म का शीर्षक गीत लिखकर श्रीमती तारा सिंह ने फिल्म जगत में भी अपनी उपस्थिति दे दी है.

डॉ. श्रीमती तारा सिंह को पढ़ने वालों की आज कोई कमी नहीं है. उनके प्रशंसकों की संख्या दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि प्राप्त कर रही है. साहित्य जगत आज उन जैसी विद्वान, विचायरक एवं चिन्तन शील कवियित्री को अपने बीच पाकर स्वयं को धन्य अनुभव कर रहा है. आशा है वे इसी प्रकार से भविष्य में भी साहित्य के प्रति पूर्ण रुप से समर्पित रहकर आगे बढ़ती रहेगी.

> आज देश के किसी भी भाग से प्रकाशित मासिक/साप्ताहिक पत्र में डॉ. तारा सिंह की रचनायें पाठकों को पढ़ने को मिल जाती है. यह उनके सफल साहित्यिक जीवन की एक विलक्षण उपलब्धि है.

++++++++++++++++++++

अंकुर साहित्य मंच के संरक्षक **देवेन्द्र नारायण दास**, महासमुद्र, छत्तीसगढ़ से क्या लिखते है डॉ० तारा सिंह के बारे में-

जीवन आपका साहित्य साधना में लीन है. आपके काव्य संकलनों से पता चल रहा है. आप शब्द-ब्रम्ह की अनन्य उपासिका है. सरस्वती सुमन में आपकी रचना पढ़ी. प्रेम कविता है. दीप्ति ही तुम्हारी सौन्दर्यता है. आ रहा है गांधी फिर से और समीक्षा पढ़ी. दीप्ति ही तुम्हारी सौन्दर्य है में पुरुष भाव को व्यक्त किया है. इसलिए कहते है कि कवि परकाया प्रवेश में माहिर होता है. उसकी सच्ची संवेदना ही आत्म तत्व से मिला देता है. पढ़ने से ऐसा लगा जैसे आप पुरुष रुप में काव्य को पढ़ रही है. जीवन का अंतिम पड़ाव पर कवि आत्मा कीड़ा करती है-अंधकार के महागर्त में देखना एक दिन सब कुछ गुम हो जायेगा. जवानाी, रवानी, रीतिकालीन काव्य, आत्म मिलन की ओर अग्रसर होता है. भावों का एक्य, आत्म मिलन इसलिये आओ खोलों अपने सज्जा पट को अधरों की सूची दल को एक हो जाने दो. प्रेम कविता में बिम्बों, प्रतीकों के माध्यम से शब्द सजीव हो उठते है. साथ में संप्रेषणीयता भी है जिसमें मन को छू जाते है. उछीपत करते है-मन को, प्रकृति चित्रण, का मानवीकरण है आपकी कविताओं में इसलिये आपको छायावादी कवियत्रीं से सम्मान मिला है. जहॉ तक आप मुझसे बड़ी होगी. सम्मानों का ढेर मिला है. शब्द ब्रम्ह की साधना से ईश्वर प्रेम है सारे सम्मान, बधाई हो.

छत्तीसगढ़ शिक्षक साहित्यकार मंच के प्रदेश अध्यक्ष, प्रेरणा के संयोजक **आचार्य शिवनारायण देवांगन 'आस'** दुर्ग से क्या सोचते है डॉ० तारा सिंह के बारें में-

साहित्य जगत की चिर परिचित सितारा:डॉ० तारा सिंह

साहित्यकार तो अनेक हैं पर अपने कठिन परिश्रम, साहित्य सेवा एवं समर्पण की भावना से कोई कोई ही नेक होकर अलग पहचान बना कर ऊँचे मुकाम तक पहुँचते है. इसी श्रेणी में मुंबई की वरिष्ठ कवयित्री गीतकार व ग़ज़लकार डॉ० तारा सिंह साहित्य जगत के चिर परिचित सितारे हैं. जिसकी तुलना किसी से नहीं कर सकते.

आसमान में रातों को चमकती है जैसे सितारा।साहित्य की धरा को महका रही है कवयित्री तारा।।

डॉ० तारा सिंह जी साहित्य साधना से साहित्य जगत को अपनी काव्य कृति एक बुंद की प्यासी से लेकर यह जग केवल स्वप्न आसार कृति सौपी है जो संग्रहणीय एवं पठनीय है तथा समाज को नई दिशा देने में सहायक सिद्ध होगा. वहीं पूरब-पश्चिम, फूल खिलते रहेंगे यादे सहित ३५ से अधिक काव्य-संकलनों में प्रकाशित हो चुकी रचनाएं भी फूल की तरह महक रही है. जो सृजन में लीन रहने का प्रतीक है.

साहित्य साधना ने नई पहचान दिलाया जिसका मेहताना उन्हें विद्यावाचस्पति मानदोपाधि सम्मान से सम्मानित होने का दौर प्रारंभ हुआ जो आज साहित्य-गौरव अवार्ड सहित अनेक सम्मान अर्जित कर चुकी है. इन उपलब्धियों पर साधूवाद देते है.

डॉ० तारा सिंह के विषय में कुछ कहना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है. इनकी कविता, गीत, ग़ज़ल सभी विधा में रची बसी है. इनमें सभी रसों का दर्शन होता है, वहीं छंद बद्ध अलंकार से सुशोभित ही नहीं नई कविता आधुनिक कविता से भी सराबोर है. जो हमें भी भाव विभोर करता है. अधिकांश कविताओं में आदर्शवादीता, आध्यात्मिकता व रहस्यवाद है. कवयित्री की भाषा सरल, सहज और सपाट है वहीं जुल्म और अन्याय के विरुद्ध शोले की तरह बरस पड़ती है. यह तारा सिंह जी के अधक साधना का परिणाम है.

> आसमान में रातों को चमकती है जैसे सितारा।
> साहित्य की धरा को महका रही है कवयित्री तारा।।

डॉ० तारा सिंह का साहित्य में योगदान साहित्य जगत में मील का पत्थर साबित होगा और डॉ० तारा सिंह साहित्य जगत को ऊँचाइयां प्रदान करेंगी.

विश्व स्नेह समाज द्वारा डॉ० तारा सिंह पर विशेषांक प्रकाशित करना बहुत ही प्रशंसनीय कार्य है. यह डॉ. तारा सिंह जी का सच्चा सम्मान होगा.

डॉ. तारा सिंह व वी.पी.सिंह के सहयोगी श्री एवं **श्रीमती किशोर प्रसाद राय** क्या कहते है डॉ० तारा सिंह के बारे में-

कवयित्री डॉ. श्रीमती तारा जी 'तारा'

आपकी दशवी काव्य कृति 'तम की धार पर डोलती जगती की नौका' की एक-एक रचनाओं को बड़ा ध्यान लगा कर तन मन से पढ़ा तो मन ने कहा-

तुम्हें निहारता रहूँ सुबह से शाम तक,
अब शाम हो चली पर मन अब भी भरा नहीं।

इसमें आपकी सारी रचनाओं में कहीं प्रेम कही यर्थाथ तो कहीं आदर्शवाद की झलक दिखाई पड़ती है. कहीं आप बहुत भावुक हो जाती है तो कहीं स्नेह प्रेम की देवी बन जाती है. कहीं मातृत्व भावनाओं पर परिपूर्ण दिखती है, आपकी यही विशेषता तो पाठक के मन में एक गहरी भावना उत्पन्न कर देती है और ऐसी इच्छा जागृत होती है कि इस सर्व गुण सम्पन्न काव्य रचियता के दर्शन करुँ. मुझे पूर्ण उम्मीद ही नहीं वरन पूर्ण विश्वास है कि आपके यही गुण आपसे साक्षात्कार करने एवं आपके मुँह से दो शब्द सुनने के लिए विश्व के कोने-कोने से आपके पास आमंत्रण आयेगी. और यह समय बहुत ही शीघ्र आने वाला है ऐसा मुझे प्रतीत हो रहा है. आपकी काव्य रचनायें दिनो दिन उच्च कोटि की होती जा रही है, आपने इस थोड़े से समय में काव्य जगत को जो कुछ भी दिया है वह तारीफे काबिल है. कुछ ही समय में आपका भी नाम प्रमुख और प्रसिद्ध काव्य रचिताओं के साथ जोड़ दिया जायेगा. मुझे उस दिन बड़ी खुशी होगी जब आप काव्य रुपी आकाश पर तारा बन कर काव्य जगत का पथ-प्रर्दशन कर रही होगी. और क्या लिखूँ. आपके विषय में जितना भी लिख लूँ मन भरता नहीं है.

''

प्रभात साहित्य परिषद के निदेशक **रमेश नन्द,** भोपाल, म.प्र. से क्या कहते है डॉ. तारा सिंह के बारे में देखिए-

डॉ तारा सिंह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर एक नजर

साहित्य का क्षेत्र एक ऐसा क्षेत्र है जिसके सफर में रास्ता ही रास्ता है. मंजिल का कोई ठिकाना नहीं है. कब कहां कैसे मिल जाये कुछ कहा नहीं जा सकता. इस क्षेत्र की गहराईयों और ऊँचाइयों की कोई हद नहीं है. यदि रचनाकार स्वयं को बड़ा मानता है तो उससे बड़ा भी उसे दृष्टित होता है. इसलिए बड़ा रचनाकार कहलाने के लिए बड़ों के सामने छोटे बने रहना और छोटे बनकर उनसे कुछ पा लेना ही रचनाकार की पहली सीढ़ी है. डॉ० श्रीमती तारा सिंह ने अपना जो स्थान साहित्य में बनाया है यही उसकी आधारशिला है. इसके अतिरिक्त उनका मृदुभाषी होना एवं व्यवहार कुशलता उल्लेखनीय है. व्यक्ति को कठिन बनने में कोई भी कठिनाई नहीं है परन्तु सहज और सरल बनना आसाना नहीं इसमें निरंतर कठिनाइयों को सामना करना होता है. डॉ० तारा सिंह में इन सभी बलाओं से लड़ने की क्षमता है. कहा जाता है जो क्षमता के आदि होते है वे मजबूरी नहीं समझते. जिनका आहार व्यवहार संतलित होता वे कभी बीमार दुखी नहीं रहते.

डॉ० तारा सिंह की रचनाधर्मिता को देखें तो वह आज के धरातल पर खरी उतरती हुई नज़र आती है. उनकी रचनाओं में भाव पक्ष, कला पक्ष मजबूत होने के साथ संदेश को यथा स्थान मिलता है. मैंने उन्हें पढ़ा भी है सुना भी है. वे रचनाओं में जो दावा पेश करती है और उसकी जो वे दलील देती है उनकी वह दलील अपनी बात मनवाने में ताकतवर होती है. यही कारण है कि आज उनके व्यक्तित्व व कृतित्व में निरन्तर निखार आता जा रहा है. इसी कारण उन्हें अंर्तराज्यीय एवं राष्ट्रीय स्तर की संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया जा रहा है.

वैसे यदि रचना और रचयिता के सम्बंध में विचार करें तो रचना उसी को कहते है जो सम्पूर्ण हो जैसे जन्म से मृत्यु तक जड़ से तने तक. परन्तु आज की रचनाओं में ऐसा कम ही दृष्टित है. और रचयिताओं का तो य हाल है कि जानते कुछ नहीं है और जानकार होने का दावा करते है. प्रतिभावान को पीछे कर आगे खड़े होने का असफल प्रयास जारी है. केवल इस क्षेत्र में नहीं बल्कि हर क्षेत्र में यही हो रहा है. इसलिए घटना दुर्घटनाओं को भी जन्म लेने का शुभ अवसर प्राप्त हो रहा है. मुझे डॉ० तारा सिंह में ऐसे कोई दोष नजर नहीं आये वे एक निश्छल भाव से साहित्यिक सेवा में साधनारत है. अपने श्रम से वे उस उपजाऊ भूमि में किसान की भांति बीज बो रही है जो उनकी सार्थकता की ओर इशारा करती है.

मैं डॉ० तारा सिंह के उज्जवल भविष्य, यशस्वी जीवन एवं दीघ्रयु होने की कामना करता हूँ.

इंग्लैड के साहित्यिक पाठक **अशोक कुमार वशिष्ट** क्या कहते है कवियित्री डॉ० तारा सिंह के बारे में-

मैंने श्रीमती डॉ. तारा सिंह जी के कुछ काव्य संग्रह पढ़े और उनकी कुछ कविताएं अलग-अलग बेबसाईटस पर भी पढ़ी, उनकी कविताएं अर्थपूर्ण और भावपूर्ण है. उन्होंने लगभग हर विषय को अपनी कविताओं के माध्यम से हुआ है. उन्होंने जहां मानवता के दुःख का समाधान भी करना चाहा. जहां उन्होंने समाज की बुराईयों को फटकारा, वहां उन्होंने समाज की बेहतरी के लिए हिम्मत भी दी. जहां उन्होंने भगवान् के प्रति अपने प्यार का इजहार किया, वहां उन्होंने भगवान से बड़े मासूम शब्दो में शिकायत भी की. जहां उन्होंने बुराई की तरफ संकेत किया, वहां उन्होंने अच्छाई तक पहुँचने की प्रेरणा भी दी. उनकी कविताएं, आम कविताओं से हट कर है, अलग रंग और रुप लिए है. उनकी कविताएं पढ़कर यूं लगता है जैसे कोई अपने शब्दों में ऊर्जा भरकर, समाज को, मानवता को ऊँचाईयों की तरफ धकेलने की कोशिश कर रहा है. उनकी कविताओं को पढ़ते पढ़ते, उच्च कोटि के कवियों का स्मरण हो आता है. उनकी शैली, उनका बेवाकपन, उनकी स्पष्टवादिता, सराहनीय है. आज जिस स्थिति और जिस समाज में हम रह रहे है, वहां ऐसे कवियों और लेखकों का होना अति आवश्यक है. जो समाज के प्रति और मानवता के प्रति चिंतिंत भी है और उनकी सेवा हर हाल में करनी चाहते है. जिनमें सहानुभूति भी है और लगन भी. जिनमें कुछ कर गुजरने का जोश भी है और अपने कर्तव्य के प्रति होश भी. इसमें कोई शक नहीं कि ऐसे रचनाकार समाज और मानवता को ऊपर उठाने में बहुत बड़ा सहयोग देते है.

अंत में इतना की कहूँगा कि मेरी शुभकामनाएं उनके साथ है और भगवान करें कि वे अपने साहित्य के माध्यम से, यूं ही समाज की और मानवता की सहायता और सेवा करती रहे।

साहित्यकार, ज्योतिष पंडित और आकाशज्ञानी **वि.म.काले**, सातारा से क्या कहते है डॉ० तारा सिंह के बारे में-

डॉ० तारा सिंह एक अनमोल कवियित्री

१० अक्टूबर का दिन था. दोपहर को हरदिन की तरह पोस्टमैन ने हाथ में एक लिफाफा दिया. बाद में लिफाफा खोलकर देखा तो उसमें विश्व स्नेह समाज राष्ट्रीय मासिक पत्रिका के संपादक का पत्र पढ़ने में आया. उसमें जो लिखा था कि 'विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान की उपाध्यक्षा व मुंबई की वरिष्ठ कवियित्री गीतकार व ग़ज़लकार डॉ० तारा सिंह जी के नामपर एक विशेषांक का प्रकाशन हो रहा है. यह पढ़कर बहुत खुशी हो रही है.

डॉ० तारा सिंह जी के जो काव्य संग्रह प्रकाशित हुए है उसमें एक दीप जला लेना, रजनी में भी खिली रहूँ किस आस पर, अब तो ठंढी हो चली जीवन की राख और विषाद नदी से उठ रही ध्वनी, यह सब काव्य संग्रह मेरे नजर में आये. मैंने उसमें दोनों काव्य संग्रह के बारे में मेरे विचार भी उनके यहॉं भेज दिए. और इसी काव्य संग्रह के माध्यम से उनके साथ फोन पर बातचीत भी हुई. २ अक्टूबर २००७ को वर्धा में प्रत्यक्ष उनसे मुलाकात भी हुई.

उनके काव्य संग्रह पढ़ते हुए प्रत्येक पंक्तियों में ऐसा अनुभव आया की यह कवियित्री ऊँचे शिखर पर बहुत जल्द पहुंच जायेगी. और यह प्रत्यक्ष यहां सरस्वती का आर्शीवाद उनको मिला उनके ऊपर सरस्वती की कृपा हुई. एक बार जब भगवान के नजदीक भक्त किसी भी माध्यम से जाए वह ऊँचाई पर जाता ही है और ऐसा ही डॉ० तारा जी के बारे में हो रहा है. उनके ऊपर जो विशेषांक निकल रहा है यह एक मात्र इनके किये कार्य फल, द्रूपता ही दिखाई दे रही है. उनको आज तक जो पुरस्कार मिल रहे है और मिले है यह भी भगवान की देन है. फिर भी यह कवियित्री अपने एक काव्य पंक्तियों में लिखती है-

न वादा न भरोसा, न कोई संदेशा
फिर भी मनुष्य जीवन पर्यंत मंदिर की
दीप शिखा-सी शांत भावलिन होकर
करता तुमसे मिलने की प्रतिक्षा
और क्या चाहिए जीवन में?
बस! सिर्फ भगवत कृपा, प्रभु कृपा!

विश्व स्नेह समाज राश्ट्रीय मासिक पत्रिका कें संपादक मंडल को मेरा धन्यवाद और डॉ. तारा सिंह जी को उनके कार्य के लिए आगे भी शुभकामनाएं प्रकट करता हूँ और इस लेखनी को विराम देता हूँ.

कानपुर, उ.प्र. से एक पाठक डॉ० अवधेष क्या कहते है डॉ० तारा सिंह के बारे में-

स्वनाम धन्य कवियित्री डॉ० श्रीमती तारा सिंह

पाठक होने के कारण अनेक कवि, कवियित्रीयों की रचनाओं को पढ़ने का अवसर मिला है. उनमें डॉ० तारा सिंह एक ऐसी कवियित्री है जिन्होंने हिन्दी काव्य जगत में एक प्रतिष्ठित मुकाम पा लिया है. उनकी कलम से निकली कविता, गीत, ग़ज़लों ने न जाने कितने पाठकों के हृदय में प्रतिष्ठित कर दिया है उन्हें.

डॉ० तारा सिंह की कविता को किसी भी सीमा में बॉधना सम्भव नहीं. वे अपने को किसी 'भाव' या विषय में न बांध हिन्दी काव्याकाश में स्वच्छन्द विचरना करना पसन्द करती है. उनकी रचनाओं में विविधा का दर्शन होता है. कही सुदूर स्थित कश्मीर की दुर्दशा है पीड़ा का अनुभव कर 'आज का कश्मीर' की ये लाइनें लिखने को विवश है कि-

युगों युगों से जिस भूमि पर, प्रकृति राशी राशी
कर अपने रुप रंग को, करती आई निछावर
वहॉं मौत मना रही है विनाश शताब्दी
प्रेत कर रहा है तांडव, खग रोते तरुओं में,

वहीं कवियित्री भाग्यवादी होकर कह उठती है-

'मेरे भाग्य गगन पर दुख रहता सदा आच्छादित'

में वे अपनी अन्तः पीड़ा को प्रगट करती है.

राजनीति की कुटिल चालें, समाज में व्याप्त कुरीतियां, और विषमतांए उनके हृदय को व्यथित करती है और हृदय 'आग के गोले गिरे, अंगार लहके' में विहवल हो उठा. जिसने कवियित्री की ये पंक्तियां पढ़ी होगी उसका हृदय भी रो पड़ा होगा-

'वही तो रचायेगा चिता भी, जो कोहवर की साड़ी बुनता, वहीं तो बनाता कफ़न भी'

डॉ० श्रीमती तारा सिंह काव्य जगत के जिस पथ पर चल रही है वह एक न एक दिन उन्हें नक्षत्र की भॉंति स्थापित अवश्य करेंगा.

उनकी कलम और अधिक सशक्त हो. उनकी रचनाएं जन-जन के हृदय पर अंकित हो. वे प्रगति पथ पर अग्रसरित होती रहें यही कामना है श्री मुकुन्द-मुरारी स्मृति साहित्य यात्रा की.

वर्धा से वरिष्ठ साहित्यकार **कमल किशोार शर्मा** जी क्या कहते हैं डॉ० तारा सिंह के बारें में-

साहित्य सरोवर में खिला हुआ कमलः डॉ० तारा सिंह

मॉ सरस्वती का भरपूर आशिष प्राप्त कवयित्री जिनकी लेखनी से कई काव्य संग्रह प्रकाशित हुये है. दिल की कलम को प्रेम की स्याही में डुबो-डुबोकर लिखने की कला में माहिर, विलक्षण प्रतिभा की धनी, कई अलंकारों से अलंकृत है.

अपनी बात को सहज ढंग से प्रस्तुत करने की कला, स्वभाव में सरल, प्रेम में तरल वाकपटुता में बेजोड़, ऐसी कवयित्री महोदया पर कमल की कलम के शब्द कुछ फीके पड़ते नजर आ रहे है.

मेरा आपसे परिचय कई कार्यक्रमों में हुआ है मैं आपसे बातचीत के दौरान काफी प्रभावित रहा हूॅं. जिनके श्रीमुख से निकलती है मधुर वाणी, श्रोता सुन के हो जाते है. कई बार पानी पानी. जितनी अच्छी और सुंदर आपकी रचनाएं है, उतनी ही उनमें मिलन सरिता भी है.

पराये को भी पलभर में बना लेती अपना।
उसे लगता है ये हकीकत है या कोई सपना।।

हिंदी मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज', इलाहाबाद वरिष्ठ साहित्यकारा डॉ० तारा सिंह पर विशेषांक प्रकाशित कर जरुर अपने आपको गौरवान्वित महसूस करेगा. महाराष्ट्र की मायानगरी मुंबई निवासी कवयित्री, गीतकार, गज़लकार व फिल्म सिपाहीजी में शीर्षक गीत लिखने वाली कलमकार डॉ० तारा सिंह को बधाई देता हूॅं. आपके दीर्घायु मंगलमय जीवन की कामना करता हूॅं.

मॉ सरस्वती का वास है जिनके अंग
सांवला सांवला है जिनका रंग
जिनकी वाणी में मिश्रित है कई रंग
पाठकवर्ग रहता है सदा जिनके संग
लेखनी जिनकी है बड़ी असरदार
आपकी कविताओं से है सभी को प्यार
आपके लिखने का अंदाज है बड़ा निराला
शब्दामृत जो पिलाती है भर भर के प्याला
आकाश में चमकता है जैसे ध्रुव तारा
साहित्य गगन में है कवयित्री डॉ. तारा

बिजनौर, उ.प्र. से **अनिल शर्मा 'अनिल'** क्या कहते है डॉ० तारा के बारे में-

भीनी सुगन्ध देती है डॉ० तारा सिंह की कविताएं

डॉ० तारा सिंह अनेकानेक सम्मान प्राप्त एक सषक्त कवयित्री है. इनकी रचनाएं समाज, राष्ट्र, विश्व को आत्म चिन्तन के लिए झकझोरती है. विवश करती है आत्म चिन्तन के लिए, आत्म सुधार के लिए, भौतिकता की अंधी दौड़ से बचने व आध्यात्मिक पथ पर आगे बढ़ने के लिए. इनकी रचनाओं में सहजता, सरलता, व हृदय को छू लेने की अद्‌भुत क्षमता है. यह गुण इनके अब तक प्रकाशित सभी १० काव्य संग्रहों में विद्यमान है. कविता वहीं तो है, जो मन को छू ले, मस्तिष्क को मथ डाले. बिना किसी लाग/लपेट के पाठक-श्रोता के मन को भाव विभोर कर दें. इस रुप में डॉ० तारा सिंह की रचनाएं प्रभावशाली है.

डॉ. तारा सिंह की रचनाओं में हमें रहस्यवाद की झलक मिलती है.

रहस्यवादी युग की लगभग सभी प्रवृत्तियां इनके काव्य में सहज रुप से आयी है. इनकी कृति 'तम की धार पर डोलती जगती की नौका' को आद्योपान्त पढ़कर ऐसा लगा कि जीवन का, वर्तमान युग का कोई पक्ष कवयित्री की भाव भूमि कलम से अछूता नहीं रहा है. इसमें मुम्बई के बम विस्फोट हैं तो काश्मीर की अशान्ति भी है. बचपन व इतिहास की बाते हैं तो भविष्य की स्वर्णिम आशाए भी है. संस्कृति व सम्प्रदाय की चर्चा है तो विश्व शान्ति की उम्मीदें भी है.

'आज का काश्मीर' कविता की अन्तिम पंक्तियां-'ज्योत्सना होगी शीतल फिर से लौटकर/आयेगा प्रेम, दया, सहृदयता, शील, क्षमा/ और तप, संयम, सहिष्णुता, रजत स्वर्ण/ में अंकित अप्सरा सी घाटी लगेगी फिर से सुन्दर', जीवन के प्रति आशा का संचार करती है. 'संस्कृति और सम्प्रदाय' कविता की एक पंक्ति 'धर्म और संस्कृति दोनों बिल्कुल अलग-अलग है. सूक्ति वाक्य बन गयी है. इनकी काव्य सृजन यात्रा में सामाजिक सरोकारों से जुड़े विषय प्रमुखता से आये है. जिन्हें कवयित्री ने अपने मनोभावों की उर्वरा भूमि पर रोपित कर, रचनात्मक रुप से तैयार फसल पाठकों को दी है, जिसकी भीनी-भीनीं सुगंध पाठकों के मन-मस्तिष्क को प्रफुल्लित करती है. डॉ० तारा सिंह का रचना संसार व्यापक है. इनके उज्जवल व सुखी-दीर्घायु जीवन की हार्दिक मंगल कामनाएं. इन पर इतनी सामग्री एक साथ संजोकर विशेषांक प्रकाशित करने के लिए विश्व स्नेह समाज परिवार को भी हार्दिक शुभकामनाएं.

अखिल भारतीय चिन्तन साहित्य परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं अखिल भारतीय विप्र कुल महासभा के राष्ट्रीय महासचिव **कैं० ब्रहमानन्द तिवारी 'अवधूत'** जी क्या कहते है डॉ० तारा सिंह के बारे में-

आपका कृतित्व समाज में महिलाओ के लिए एक प्रेरक प्रसंग बन सकता है

बचपन से ही विलक्षण प्रतिभा की धनी रही डॉ० तारा सिंह के पति डॉ० ब्रहमदेव प्रसाद सिंह देश के जाने माने रसायन शास्त्री है. आपने कलकत्ता विश्वविद्यालय से अवकाश ग्रहण कर मुंबई में अपना घरौदा बनाया. डॉ० तारा सिंह छायावाद की उत्कृष्ट कवयित्रियों में से एक है. आपकी रचनाओं में प्रकृतिवाद, अध्यात्मवाद, मानवतावाद और उच्चतम चिन्तन प्रधान विचार मिलेंगे. आपने जीवन के खट्टे मीठे अनुभवों को भी अपनी रचना में स्थान दिया है. आप हिन्दी के अतिरिक्त भोजपुरी एवं मराठी भाषा की अच्छी जानकारी रखती है. आपको अब तक साहित्य के सर्वोच्च सम्मान में विद्या वारिधि, विद्या वाचस्पति इत्यादि सहित ६४ सम्मान मिल चुके है. आपकी कृतियां छायावाद की उत्कृष्ठतम कृतियों में गिनी जाती है. आप मृदुभाषी एवं व्यवहार कुशल सफलतम गृहणी भी है.

आपकी रचनाओं में भाशा शैलीषैली, षिल्प, अभिव्यंजन एवं सर्वोच्च श्रेणी का षब्द चयन देखने को मिलेगा. आप आत्मवल से सम्पन्न लेखिका है. आपका कृतित्व समाज में महिलाओं के लिए एक प्रेरक प्रसंग बन सकता है. आपसे हमारी पहचान गाजियाबाद के एक कार्यक्रम में हुई. डॉ० तारा व उनके पति डॉ. वी.पी.सिंह को विगत कई वर्षो से जानता हूँ वे लोग हमारे पारिवारिक सदस्यों की भांति है. डॉ० तारा सिंह के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ. उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को नमन करते हुए आप सबसे यह कह कर विदा लेता हूँ कि विश्व स्नेह समाज के सम्पादक श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी जी की भांति अन्य सम्पादक महोदय भी ऐसा ही प्रयास करें. जयभारत जय भारती, जय जय भारत देश.

सष्जन के उच्च शिखरों पर/योंही बस चढ़ती जाओ तुम/लक्ष्य को रख हृदय में,/नित्य आगे बढ़ती जाओ तुम।

स्नेहांगन कला केन्द्र

एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद, मो0 09335155949

हमारे संस्थान से निम्न हॉबी कोर्स व डिप्लोमा कोर्स चलाये जाते हैं. कोर्स पूरा होने पर प्रमाण–पत्र भी दिया जाता है।

1.सिलाई 2.रेशम की कढ़ाई 3.मशीन की कढ़ाई 4.सिंधी कढ़ाई 5.जरदोजी की कढ़ाई 6. जरी की कढ़ाई 7.पॉट डेकोरेशन(12 प्रकार के) 8.आइस्क्रीम 9.बेकिंग (केक,बिस्किट बनाना) 10.कुकिंग 11.इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स 12.कम्प्यूटर कोर्स 13.पेंटिग(सभी प्रकार की) 14. ब्लॉक प्रिटींग 15.स्क्रीन पेंटिग 16.पैचवर्क 17.मुकैश 18.रंगोली 19.टाई एण्ड डाई 20.बाटिक 21.स्पंज, स्प्रे प्रयोग 22.फ्लॉवर मेकिंग 23.ब्यूटीशियन 24.बरगद का पेड़ 24. शार्ट हैंड 25. हिन्दी एवं अंग्रेजी टाईपिंग

विशेष:1. एक साथ 5 प्रवेश पर 10प्रतिशत की छूट
2. समयः प्रातः 7 से 10:00 बजे तक तथा सायं 3 बजे 7 बजे तक
3. रविवार अवकाश 4. शाखा खोलने हेतू सम्पर्क करें

अ.भा. अंगिका साहित्य कलामंच के उपाध्यक्ष एवं साहित्यकार **डॉ० ब्रहमदेव नारायण सत्यम्** भागलपुर बिहार से क्या सोचते है डॉ० तारा सिंह के बारे में-

भोर का तारा

अनुभूति की सहज अभिव्यक्ति ही कविता है. अनुभूति का स्पर्श जब शब्द को मिलता है तब वह सही अर्थ में जीवन्त हो उठता है जो शिल्प के ऑचल तले, भाव, विचार और कलपना से संवरता चलता है. 'एक बूंद की प्यासी' तारा मॉ, बेटी एवं बहन के रुप में अनुभूति स्पर्शित शब्द के माध्यम से सामाजिक-पारिवारिक रिश्तों की डोर में जकड़ी नहीं रही बल्कि अपने सृजन संसार में सोलह-सोलह पुष्पों को खिलाकर साहित्यकाश की ज्योतित तारा बन गई है. जिन्हें सत्तर से अधिक सम्मानों ने अपना आलिंगन देकर अपना सार्थक सम्मान बढ़ाया है. सच ही तो-

तेरा मेरा रिश्ता क्या बस इतना ही
तुम हो तो हम हैं, तेरे बिना नहीं.

विलम्ब से ही सही कवयित्री तारा की साधना-प्रतिभा ने अब एक साकार रुप ग्रहण कर लिया है. जिनके चिंतन फलक में वैयक्तिक, सामाजिक, राष्ट्रीय संदर्भ के साथ, प्रकृति एवं मन के स्थूल एवं सूक्ष्म प्रतिबिम्ब उभर रहे हैं-*कुछ खिलौने बिक गये/कुछ बिकने को हैं तैयार/कुछ टुटकर बिखर गये/कुछ बनने को हैं तैयार'*

चुनौतियों एवं कठिनाईयों से भरे जीवन में कवयित्री की कविताएं जमीन से उठकर आकाश को छू लेने की कोशिश में बहुत कुछ कह जाती है. मिट्टी की सोंधी गंध के साथ हमें आशा, विश्वास और संकल्प की लौ से दीपित कविताएं कवयित्री की काव्य-साधना से डेग-डेग पर परिचय कराती है. बीहड़ ठेठ देहाता रतनपुर, मुंगेर से चलकर चमचमाती मुम्बई की दौड़ में जरा भी न खोयी कवयित्री लोगों को जहॉ अगाह करती हैं कि-

मन की व्यथा समेटकर इस तरह भागे फिरोगे/तो देखना एक दिन, स्वयं से ही हार जाओगें.

वहीं जीवन को सहज और सुचारु बनाने के लिए शेष को अशेष में बदलने की क्षमता सम्पन्न सांध्य का तारा नहीं बल्कि भोर के तारा के रुप में अपने अस्तित्व की सही परख कराते हुए कवयित्री शत प्रतिशत सच ही कह रही है-

निशी खोजती जिसे तारों का दीप जलाकर/रातों के अंधेरे में, सृष्टि का वह सुन्दर श्रृंगार हूँ मैं.

और-*जब ऑख खुली, तब ज्ञान हुआ/मैं स्वयं कितना भ्रम में था/सूरज बादल में छुपा था/मैंने उसे शाम कहा था*

वस्तुतः साहित्य में समाज का चेहरा परिलक्षित होता है. वर्तमान राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य का तारा की कलम बोलती है-

बापू! तुम फिर से अपनी छाया को नव जीवन देकर/धरती का काष्ट मिटाने, उतर आओ धरा पर,

अपने को पाने के लिए लोगों को सलाह भी देती है-

तुम मानवता के अन्तर्व्यापी अंधकार से घृणा द्वेष/स्पर्धा, निष्ठुरता को मिटाने इतना प्रयत्न अवश्य करना/उनकी राहों में उजाला हो सके, एक दीप जला लेना.

कुल मिलाकर सीधे-साधे अंदाज में कवयित्री की संवेदनशील प्रस्तुति हमें छूते हुए आगे बढ़ती जा रही है. कबीर की खंजरी, मीरा का इकतारा और टैगोर की मूल्य निष्ठा की ढपली लिये सतत् प्रयत्नशील बनी कवयित्री श्रीमती तारा सिंह को साहित्यांगन के कवि परिवार में भरपूर सम्मान मिले और निरन्तर संघर्षरत् जीवन कुरुक्षेत्र उनसे गौरवान्वित हो-यहीं आशा, आकांक्षा और अहर्निश शुभकामना है. साथ ही विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान की उपाध्यक्षा श्रीमती तारा सिंह को समर्पित उनके सम्पूर्ण कृतित्व एवं व्यक्तित्व को रेखांकित करता 'विश्व स्नेह समाज' के इस अंक के प्रकाशन के लिए विद्वान सम्पादक डॉ० द्विवेदी को ढेरों बधाई.

विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ के कुलपति **डॉ. तेज नारायण कुशवाहा** क्या कहते है डॉ0 तारा सिंह में–

भारतीय द्वैतवाद (सांख्य दर्शन) में पुरुष और प्रकृति को सृष्टि का नियामक / सम्पादक कहा गया है. तारा सिंह विरचित 'रजनी में भी खिली रहूँ किस आस पर' उस प्रकृति की कविता है. कवयित्री की दृष्टि में प्रकृति और नारी समरुप हैं. प्रकृति की कार्य–संस्कृति, नारी की कार्य– संस्कृति है. कविता में ऐसे अध्यात्म समेकित लोक–भाव विरले ही मिलते है.

कवयित्री और उसकी इस सृष्टि को प्रणाम करता हूँ.

भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र, मुंबई के वैज्ञानिक अधिकारी **कवि कुलवंत सिंह** क्या सोचते है डॉ० तारा सिंह के बारे में-

कवियित्री डॉ तारा सिंह

बहुत ही हर्ष का विषय है कि 'विश्व स्नेह समाज' पत्रिका ने वरिष्ठ कवियित्री डॉ० तारा सिंह को समर्पित विशेषांक निकालने का निर्णय लिया है. अब तक ५५ विभिन्न साहित्यिक संस्थानों द्वारा सम्मानित डॉ० तारा सिंह वास्तव में राष्ट्र के लिए धरोहर बन चुकी है. उनकी रचनाओं में छायावाद की संपन्नता दृष्टिगोचर होती है. गहन अनुभूतियों का सुंदर चित्रण उनकी रचनाओं में मिलता है. विपदाओं से भयभीत एवं दुखों से व्यथित न होने वाली, सांस्कृतिक एवं पारिवारिक मूल्यों में गहन आस्था रखने वाली कवियित्री इसी धरा का कर्मभूमि मानकर सांसारिक प्रवृत्तियों में आरक्त रहते हुए निराकार के मूल्यों को पा लेने की महत्वाकांक्षा रखती है.

प्रायः सभी धर्मशास्त्रों में मनुष्य को सृष्टि का श्रेष्ठ प्राणी बताते हुए सत्कर्मो के द्वारा मनुज को मोक्ष/निर्वाण का द्वारा दिखाया है किंतु कवियित्री ने अपने काव्य संग्रह 'विषाद नदी से उठ रही ध्वनि' में जीवन की विषमताऐं एवं समाज को विसंगताओं को अनुभव करते हुए उन्हें शब्दों में बांधा है और वे कहती भी है कि 'इस धरातल की सत्यता को देखते हुए रोंगटे खड़े हो जाते है, ऑखें द्रवित हो जाती है, जिहवा मौन और कंठ अवरुद्ध हो जाता है.' कितनी विडंबना है कि ईश्वर के इस श्रेष्ठ प्राणी को इस धरा पर क्या-क्या दुख नहीं झेलने पड़ते और प्रायः इन सबके पीछे हाथ होता है-ईश्वर द्वारा ही बनाए दूसरे प्राणियों का जो यॉ तो प्रकृति द्वारा अथवा येन-केन-प्रकारेण धन अथवा शक्तियॉ प्राप्त कर लेते है. प्राकृतिक अथवा ईश्वरीय प्रदत्त दुखों के अतिरिक्त मानवकृत आर्थिक, सामाजिक, अपमान, अत्याचार, अन्याय शोषण इंसान को तोड़कर रख देते हैं. कवियित्री कितने दुख का अनुभव करती है कि -प्रकृति भी सबल कही सहायक होती है, निर्बल का सहारा यहॉ कोई नहीं.' कवियित्री के शब्दों को देखिये-

न वादा, न भरोसा, न कोई संदेशा/फिर भी मनुष्य जीवन पर्यंत मंदिर की/दीप शिखा-सी, शांत भावलीन होकर/करता, तुमसे मिलने की प्रतीक्षा.

इंसान में भगवान के प्रति आस्था का चरम बिंब किस प्रकार दृष्टिगोचर होता है. मानव के दुखों को अनुभव करते हुए कवियित्री कहती है-

तुम भावहीन, प्राणहीन, मन से लगते हो मृत/लगता भू जीवन को पाकर तुम नहीं हो खुश/

जीवन को समीप से अनुभव कर समाज में व्याप्त कटु सत्य को किस प्रकार कहा है-

जीवन का कोना-कोना आकुल भरा होता/समय-असमय गिरता रहता ऑखों से पानी

जीवन के अनेक पहलुओं पर नजर डाली है कवियित्री ने. अपने गान से वह जीवतंता प्रदान करना चाहती है-

मेरा यह गान, एक दिन जीवन जर्जर/कंकालों के सूनेपन को भरेगा, जब रुधिर बनकर, शिरा-शिरा में स्पदंन होकर दौड़ेगा

अमृत मंथन कर वह समाज को एक सुरक्षा ढाल भी देना चाहती है. संवेशनशील प्राणी होने का कर्तव्य निभाना चाहती है-

मैं ढूढ़ रही हूँ उस अमृत को, अगर मिली वह धार/तो खुद भी पीऊँगी, जगती को भी पिलाऊँगी मैं ढाल

धरा को स्वर्ग बनाने का सपना भी वह संजोती है. प्रेम पर भी कवियित्री की लेखनी खूब चली है-

जिससे हृदय की शिरा-शिरा में रोर रहे/प्रीति सलिल की शीतल धारा में स्नान कर

++++++++

तंद्रा को बुलाती हूँ सपनों में, इठलाती सोती-जागती हूँ तुम्हारी मृदु बांहों में श्रृंगार की वियोग भावना को भी कवियित्री के शब्दों में ही देखिए-

हिम-सिक्त कुसुम सम उज्जवल शरीर, आज/कैसे पड़ा हुआ है क्षत-विक्षत हत्त-अचल अधीर

कवियित्री ने प्रायः जीवन के सभी पहलुओं को छुआ है. आध्यात्मिक एवं रहस्यवादी कृतियां उनकी अधिक सारगर्भित हैं. आस्था, विश्वास एवं शौर्य के संबल को लेकर वह जुझारु प्रवृत्ति के साथ अन्याय एवं शोषण के विरुद्ध लड़ना भी जानती हैं.

डॉ० तारा सिंह एक प्रतिभाशाली एवं सरल व्यक्तित्व से ओतप्रोत कवियित्री है. उन्होंने कई विधाओं में लेखन किया है. उनका एक गजल संग्रह भी शीघ्र ही प्रकाशित होने वाला है.

कहते हैं कि हर एक सफल पुरुष के पीछे एक महिला का हाथ होता है किंतु यहॉ पर हमें यह कहना ही होगा कि डॉ. तारा सिंह की सफलता के पीछे उनके पति का हाथ (सहयोग) अवश्य ही है. विशेषकर भारतीय परिवेश में. डॉ. तारा सिंह बहुत ही खुश किस्मत

है कि उनके पिता ने भी उन्हें बेटा-बेटी में बिना भेद-भाव किए पाल पोस कर बड़ा किया. यह भी उनकी सफलता का एक कारण अवश्य है. वरना अभी भी आज के इतने प्रोन्नत समाज में भी अनगिनत ऐसे माँ बाप मिल जाएंगे जो न ही केवल बेटा-बेटी में फर्क करत हैं अपितु बेटियों के उत्थान में मार्ग की रुकावट बन जाते हैं. हमारे समाज ने भले ही एक पत्नी को पति के खिलाफ, एक बहू को सास-ससुर के खिलाफ आवाज उठाने का अधिकार दे दिया हों किंतु यह अधिकार देना अभी बाकी है कि एक बेटी अपने हक. अधिकारों के लिए माँ-बाप के खिलाफ लड़ सकें.

डॉ. तारा सिंह एक और मायने से बहुत किस्मत वाली हैं कि उनके बच्चे भी आज उनकी प्रगति में सहायक बन रहे है. उनका सरल, आकर्षक व्यक्तित्व एवं मृदुवाणी उनकी प्रतिभा को और निखारते है.

उनकी रचनाएँ, भारत की प्रायः सभी पत्र-पत्रिकाओं में नियमित प्रकाशित होती रहती हैं. उनकी यह साहित्य साधना इसी प्रकार अनवरत जारी रहे, इसके लिए मैं उन्हें ढेरों शुभकामनाएं देता हूँ एवं उनके पति श्री ब्रहमदेव प्रसाद सिंह के स्वस्थ जीवन की कामना करता हूँ.

सभी वर्ग के पाठकों में राष्ट्रीय स्तर पर एक पहचान बन चुकी हिंदी मासिक

विश्व स्नेह समाज

को खुद भी पढ़ें और औरों को भी पढ़ाएं

के.ई.कॉलेज मान्नानम, केरल के हिन्दी विभाग के रीडर व अध्यक्ष **डॉ. बाबू जोसफ़** क्या लिखते है डॉ० तारा सिंह के बारे में-

हमें यह जानकर अत्यन्त खुशी का एहसास हो रहा है कि मुंबई की वरिष्ठ कवयित्री, गीतकार व ग़ज़लकार डॉ तारा जी के ऊपर रा.हि.मा. विश्व स्नेह समाज, इलाहाबाद के तत्वावधान में एक विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा है. डॉ. तारा जी ने अत्यन्त परिश्रमपूर्वक अेनक उपाधियां प्राप्त की है. उनके विराट व्यक्तित्व से पता चलता है कि जहाँ उन्होंने एकनिष्ठ भाव से साहित्य की सेवा की है वहाँ वे एक कर्मठ समाज सेवी एवं कुशल वक्ता भी रही है. उन्होंने गीत, ग़ज़ल व कविता के साथ-साथ फिल्मी गीत भी अनेक लिखे हैं. हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है. अब तक उनकी १६ पुस्तकें प्रकाशित हुई है तथा उन्होंने लगभग ३६ से अधिक काव्य संकलनों का संपादन किया है. हमें यह भी मालूम हुआ है कि अपने स्तरीय लेखन के कारण उन्हें अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है. डॉ. तारा जी मुंबई में ही नहीं, पूरे देश में भी अपने श्रेष्ठ कृतियों से जानाी जाती है. देश भर के तमाम साहित्य-प्रेमी उनका हृदय से सम्मान करेंगे. निस्संदेह कहा जा सकता है कि डॉ. तारा जी का जीवन राष्ट्र को समर्पित एक कर्मठ कर्मयोगी का जीवन है. वे उन मनीषियों में अग्रणी है, जो अपनी विद्वता तथा अपनी तीखी बौद्धिक जिज्ञासा को निरन्तर नयी-नयी रचनाशीलता से समृद्ध रखेगी. हमें पूर्ण विश्वास है कि डॉ. तारा के कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर प्रकाशित की जा रही इस स्मारिका से युवा पीढ़ी के लोगों को जरुर नई प्रेरणा मिलेगी. साथ ही साथ उस महान कवयित्री की जीवनी तथा रचनाओं की जानकारी से हम सब अवश्य लाभान्वित होंगे. राष्ट्रीय मासिक पत्रिका विश्व स्नेह समाज को हम इस शुभ कार्य के लिए हार्दिक बधाई दे रहे है. मुंबई के गौरव एवं गरिमा की प्रतीक बन चुकी डॉ. तारा सिंह जी को हार्दिक शुभकामनाए।

लाल कला, सांस्कृतिक एवं सामाजिक चेतना मंच के अध्यक्ष **सोनू गुप्ता** क्या लिखते है डॉ० तारा सिंह के बारे में-

तारों ही तरह रोशन रहें तारा

कलम का जो लाल बना, उनमें इक तारां
कृति फैल रही ऐसे मानो जस सितारा।।

यह जानकर काफी खुशी हुई कि रा.हि.मा. विश्व स्नेह समाज, इलाहाबाद के द्वारा छायावाद की सशक्त हस्ताक्षर कवयित्री डॉ० तारा सिंह पर केन्द्रित विशेषांक प्रकाशित होने जा रहा है. डॉ. सिंह साहित्यिक नक्षत्र में तारो की तरह रोशन रहें. इनकी रचनायें सामाजिक एवं जन पृष्ठभूमि पर आधारित होती है जो जन मानस को एहसास कराती है कि समाज में जो घट रहा है वही वह रच रही है.

मै इनके उज्ज्वल भविष्य एवं दीघार्यु होने की कामना करती हूँ.

कंचनलता के सम्पादक **भरत मिश्र 'प्राची'** क्या सोचते है डॉ० तारा सिंह के बारे में-

काव्य प्रभा मंडल को सुशोभित करती कवयित्री डॉ तारा सिंह

काव्य जगत में निरन्तर सृजन की ओर अग्रसर प्रभा मंडल में उदीयमान मुम्बई वासी कवयित्री डॉ. तारा सिंह आज साहित्य जगत में अपनी विशेष पहचान बना चुकी है. कवि कुलाचार्य, विद्या वारिधि, साहित्य वारिधि, विद्यावाचस्पति, महादेवी वर्मा सम्मान, हिन्दी सेवी सम्मान, निराला सम्मान, साहित्य गौरव सम्मान, भाषा रत्न सम्मान जैसे ऐनक विशिष्ट सम्मानों से देशभर की विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित होकर बिहार की धरती के साथ-साथ अपने कुल गौरव के नाम को रोशन करते निरन्तर काव्य सृजन की ओर बढ़ती जा रही है. प्रकाशित कृतियों के साथ-साथ देश की अनेक चर्चित पत्र-पत्रिकाओं में श्रीमती तारा सिंह की काव्यधारा निरन्तर प्रवाहित होती रही है. अनेक काव्य रचनाओं का सृजन करने वाली साहित्य जगत की चर्चित कवयित्री डॉ. तारा सिंह को सिपाही जी की हिन्दी फिल्म के शीर्षक गीत के रुप में ली गई कविता ने एफ्रो-एशियन हूज-हू खंड-१ के दर्ज दास्तान को सार्थकता प्रदान किया है.

इसी कारण ए.जे.सी. बोस कॉलेज, कलकत्ता के पूर्व प्राचार्य डॉ. वी.पी.सिंह को भी अपनी कवयित्री पत्नी के काव्य सृजन पर नाज है जिसके कृतित्व ने कुल गौरव को बढ़ाने में नया कीर्तिमान स्थापित किया है. इनके काव्य सृजन के निरन्तर प्रवाह से प्रभावित मध्यप्रदेश की साहित्यिक संस्था ने तुलसी सम्मान से नवाजा है.

सरल, सुबोध एवं भाव से भरी काव्य धारा को निरन्तर प्रभावित करती हुई कवयित्री डॉ. तारा आज प्रभा मंडल को सुशोभित कर रही है. हम सभी काव्य प्रेमी काव्य जगत की चर्चित उदीयमान कवयित्री के उज्जवल भविष्य की कामना करते है.

+++++++++++++++++++++++++++++++++

हम सब साथ साथ के संपादक **शशि श्रीवास्तव** एवं **किशोर श्रीवास्तव** क्या सोचते है डॉ० तारा सिंह के बारे में-

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि विश्व स्नेह समाज पत्रिका वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. तारा सिंह पर केंद्रित एक विशेषांक का प्रकाशन करने जा रही है. किसी विशेष साहित्यकार पर केंन्द्रित अंक का प्रकाशन करके साहित्यकार के साहित्य को एक साथ तमाम पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करना जितना सराहनीय है उतना ही एक श्रम साध्य काम भी है, अतः सर्वप्रथम हम इसके लिए आपको धन्यवाद व बधाई देना चाहेंगें.

जहॉ तक डॉ. तारा सिंह की बात है जो आज साहित्य जगत का शायद ही कोई व्यक्ति होगा जो उनके नाम और साहित्य से अपरिचित होगा. वह न केवल निरन्तर साहित्य सृजन में रत रही हैं अपितु अपनी साहित्यिक उपलब्धियों के चलते उन्होंने अनेक पुरस्कार व सम्मान भी प्राप्त किए है. देश की पचास से भी अधिक संस्थाओं द्वारा प्राप्त उपर्युक्त सम्मान उन्हें किसी सौगात के रुप में नहीं मिले हैं बल्कि इसके पीछे उनका विशेष श्रम है जो उनके साहित्य के जरिए हमें आए दिन देखने को मिलता रहता है.

डॉ. तारा सिंह जैसी शख्सियत को समर्पित विश्व स्नेह समाज के इस विशेषांक से न केवल पाठकों को उनकी ढेर सारी रचनाओं को एक साथ पढ़ने का सुअवसर हाथ लगेगा अपितु उनके और उनके साहित्य के बारे में और गहनता से जानने का बेहतर अवसर भी प्राप्त होगा.

हम इस विशेषांक का तहे दिल से स्वागत करते हुए इसकी सफलता के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रस्तुत करते हैं. सद्भावनाओं सहित

+++++++++++++++++++++++++++++++++++

मुक्त कथन साप्ता० के संपादक **जनार्दन प्रसाद सिंह**, बिहार से क्या कहते है डॉ० तारा के बारे में-

डॉ० तारा सिंह की कृति 'विषाद नदी से उठ रही ध्वनि' पढ़कर प्रथम दृष्टि में लगा कि उनकी कविताओं में छायावाद की स्पष्ट झलक है. तैतीस कविताओं का यह संग्रह पाठकों के मन को छू लेगा और निःसंदेह साहित्य जगत में अच्छा स्थान प्राप्त करेगा. प्रेरणास्पद भावनाओं से मन भर उठा. शब्द चयन क्षमता अनुकरणीय है.

सतत् चिरंजीवी हों यही मंगलकामना है.

संस्कृति गोकुल

संपादक, स्नेह बाल मंच को जन्म दिवस पर हार्दिक बधाई

मराठवाड़ा क्षेत्र की प्रथम हिन्दी मासिक पत्रिका लोकयज्ञ के संपादक **प्रा. सोनवणे राजेंद्र 'अक्षत'** क्या लिखते है अपनी संपादकीय लेखनी से-

श्रीमती तारा सिंह की प्रेरणा 'डॉ०बी० पी० सिंह

अक्सर यह कहा और सुना जाता रहा है कि 'हर एक यशस्वी और सफल पुरुष के पीछे कोई स्त्री होती है. फिर वह स्त्री मॉ, बहन, पत्नी या फिर सखि तक हो सकती है. यहॉ एक प्रश्न रह-रहकर सामने आता है वह यह है कि 'अगर हर सफल व्यक्ति के पीछे स्त्री है तो हर सफल स्त्री के पीछे कौन?' उत्तर देने वाले कहते है 'स्त्री ही!' पुरूष के प्रगति, विकास का कारण भी स्त्री और स्त्री के विकास उन्नति का कारण भी स्त्री, यह बात कुछ हजम नहीं होती. इतना सही है कि स्त्री की उन्नति और विकास पुरुषों के ऑखो में खलता है. इतिहास गवाह है कि पुरुषों ने नारी के रास्तों पर हमेशा कॉटें और कंकड़ ही बिछाए है. बहुत कम पुरूष ऐसे है जिन्होंने स्त्री के रास्ते पर फुल बिछाए है. पुरूष खासकर पति कभी नहीं चाहता कि उसकी अर्धांगिणी उससे आगे निकल जाए. कई ऐसे पुरूष श्रेष्ठ 'नर' है जो स्त्री के उन्नति की सीढ़ी बनकर उसे आसमान छुने को प्रेरित करते हैं. इसी कारण कई नारियॉ अपने सारे बंधन तोड़कर अनेको क्षेत्रों में सर्वोच्च स्थानों पर विराजती हैं. इससे साहित्य क्षेत्र अपवाद नहीं हैं.

ऐसी ही एक नारी है श्रीमती तारा सिंह. तारा सिंह आधुनिक हिन्दी काव्य गगन का एक जाना माना नाम है.

> हर एक यशस्वी और सफल पुरुष के पीछे कोई स्त्री होती है.
> हर सफल स्त्री के पीछे कौन?' कहते है 'स्त्री!' पुरूष के प्रगति, विकास का कारण भी स्त्री और स्त्री के विकास उन्नति का कारण भी स्त्री, यह बात कुछ हजम नहीं होती.
> कई ऐसे पुरूष श्रेष्ठ 'नर' है जो स्त्री के उन्नति की सीढ़ी बनकर उसे आसमान छुने को प्रेरित करते हैं उनमें से डॉ. ब्रहमदेव प्रसाद सिंह भी एक है.

छायावादोत्तर छायावादी कविताओं में श्रीमती तारा सिंह का नाम बड़े ही आदर और सम्मान से लिया जाता है. उनका काव्य संसार अत्यंत विपुल और विशाल है. अब तक उनके १२ कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं. दो प्रकाशन की राह पर अग्रसर है तथा ३१ सहयोगी काव्य संकलनों में सहभागिता रखना अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है. एक कवि के रुप में ताराजी सिद्धहस्त है ही साथ में प्रसिद्ध ग़ज़लकार और गीतकार के रुप में भी वह प्रसिद्ध है. लगभग ६५ सम्मानों और पुरस्कारों से नवाजी जा चुकी डॉ० तारा सिंह को छोड़कर हिन्दी काव्य का इतिहास लिखा हीं नही जा सकता. छायावादी प्रसाद पंत, महादेवी वर्मा और निराला सा प्रकृति चित्रण, रहस्यवाद संस्थाओं की आजीवन सदस्या बनकर नये लोगों को प्रोत्साहन और प्रेरणा देती रही है. कई पत्र-पत्रिकाओं को आर्थिक सहयोग देकर उन्होंने पत्रिकाओं को जीवनदान दिया है. श्रीमती तारा सिंह को हिन्दी साहित्य आकश का जगमगाता सितारा बनाने में उनके पति डॉ. वी.पी सिंह का बहुत बड़ा हाथ रहा है.

'पति ही पत्नी की गति होता है' यह उक्ति तारा जी पर पूर्ण रुप से जैसे की तैसे लागू होती है. उनके पति डॉ. ब्रहमदेव प्रसाद सिंह एक अनोखे व्यक्ति है. यह जोड़ी कमाल की है. ताराजी को कवयित्री बनाने में और उनको साहित्य क्षेत्र में प्रतिष्ठित करने में डॉ. बी.पी. सिंह का योगदान सराहनीय है. मैं तो कहूंगा कि अगर बी.पी., तारा जी की प्रेरणा, मार्गदर्शन और प्रोत्साहन नहीं देते तो हो सकता था कि ताराजी की काव्य प्रतिभा 'किचन' तक ही सीमित रहती. ताराजी की कविताओं को संवारने, उन्हें पत्र-पत्रिका में प्रकाशित करवाने, उन्हें पुस्तक रुप में छपवाने, बड़े साहित्यकारों के पीछे लगकर उनकी समीक्षा और भूमिकाएं लिखवाने जैसे सारे काम बी.पी. सिह बड़े ही आनन्द और उत्साह से करते है. तीन सालों से पत्र और फोन द्वारा मैं इस दंपत्ति के संपर्क में रहा हूं. यहॉ यह लिखने में मुझे जरा भी संकोच नहीं है कि मैंने तारा जी की कई कविताएँ, समीक्षाएँ, लोकयज्ञ पत्रिका में प्रकाशित की है. मगर आज तक मैंने ताराजी को देखा नहीं है. न ही मैं उनसे कभी मिला हूं. जब कभी मैंने तारा जी को पढ़ा वह डॉ. बी.पी. सिंह के नजरों से ही जब कभी सुना बी.पी.सिंह के मुँह से. आपको यह पढ़कर अचरज लग सकता है कि

मेरी अपनी सहधर्मिणी के लिए इतना त्याग, इतना समर्पण, इतना प्रेम मैंने किसी और में नहीं देखा. अपने पत्नी के लिए सबकुछ करने वाली बी.पी. सिंह एक अनोखे और निराले व्यक्ति है.

बार-बार फोन पर अथवा पत्रों द्वारा ताराजी की कविताओं और समाचारों को प्रकाशित करने के लिए बी.पी. बहुत आग्रह करते हैं. इतना कि हार कर ताराजी संबंधी सामग्री प्रकाशित ही करनी पड़ती है. दिन रात यह आदमी अपनी पत्नी तारा सिंह के प्रगति उन्नति के बारे में ही सोचता है. अगर बी.पी.सिंह जैसा पति ताराजी को नहीं मिलता तो तारा सिंह कवयित्री तारा कभी नहीं बनती. विश्व स्नेह समाज ताराजी पर विशेषांक प्रकाशित कर रहा है. गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी जी बधाई के पात्र है. मगर साथ ही में यह विशेषांक प्रकाशित करने की पहल करने वाले कवयित्री श्रीमती तारा सिंह के पति डॉ० बी.पी.सिंह वास्तव में बध ाई के पात्र है. इस विशेषांक हेतु मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए श्रीमती तारा सिंह और डॉ.वी.पी.सिंह को दीघार्यु और स्वस्थ रहने की ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ.

कैलाश चन्द पन्त

मंत्री/संचालक

मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, हिंदी भवन, श्यामला हिल्स, भोपाल, म.प्र.

को

स्नेहाश्रम में सहयोग के लिए धन्यवाद

शब्द कारखाना के संपादक, जमालपुर बिहार से **रमेश नीलकमल** क्या लिखते है डॉ० तारा के बारे में-

कवयित्री डॉ. तारा सिंह की सुनाम-सुगंध अब सारे अक्षर संसार में व्याप्त है. उनकी यह उपलब्धि उनके संकल्प का सुपरिणाम है. मन को स्थिर कर किसी भी कर्म को करने की मानसिक या वाचिक प्रतिज्ञा को संकल्प कहते है. 'संकल्पमूलः कामो वै भज्ञाः संकल्प संभवः' दृढ़ संकल्प से ही सफलता की प्राप्ति संभव है. एक सामान्य पढ़ी-लिखी वावन वर्षीया महिला तारा सिंह ने संकल्प लिया कि वह कविता लिखेगी. संकल्प का ताना-बाना बुना जाने लगा और आश्चर्य कि अपने तिरपनवें जन्म दिन के इर्द-गिर्द उसने अपने संकल्प को एक आकार दिया-'एक बूंद की प्यासी' कविता एक दुरुह कर्म है, लेकिन यह दुरुहता उसके राह की बाधा नहीं बनी यानी तारा सिंह ने दुरुहता पर विजय प्राप्त कर लेखन-क्रम अबाध जारी रखा और आज उसके खाते में चौदह काव्य पुस्तकें है.

उनकी कविताओं के वर्ण विषय है, उनका महार्ध चिंतन, राष्ट्र, सामाजिक परिवेश, बाल श्रमिकों के प्रति चिंता, नारी सशक्तीकरण, आतंकवाद, अपना-परायापन, परिवार-विघटन, रिश्ते की अमधुरता आदि के साथ आज के विषम समय के सच से मुढभेड़ करती है उनकी अक्षर प्रत्यय सर्वदा निष्कलुष रहेगा.

आपकी पत्रिका का डॉ. तारा सिंह पर केन्द्रित यह अभियान सार्थक हो, इसी कामना के साथ.

::

लखनऊ के साहित्यकार **कृष्ण प्रताप सिंह 'सुमन'** क्या कहते है डॉ० तारा सिंह के बारे में-

असंख्य सम्मानों व उपाधियों से विभूषित, मुम्बई की वरिष्ठ कवयित्री, गीतकार व ग़ज़लकार डॉ० तारा सिंह के व्यापक व्यक्तित्व व कृतित्व का सीमांकन शब्दों में कर पाना मुझ जैसे अकिंचन द्वारा असम्भव नहीं, तो कठिन अवश्य है, तथापि.....डॉ० तारा सिंह का आत्मविश्वास आपकी रचनाओं में स्पष्ट झलकता है. सहज प्यार, सहानुभूति, सृष्टि के रहस्यों की उत्सुकता, प्रश्नोत्तरों का संगीत स्रोत प्रवाहित करने वाली आपकी कविताओं में कही यथार्थ तो कहीं आदर्श की झलक दिखाई पड़ती है. आपकी लेखनी, आपके काव्य संकलनों व सहयोगी काव्य संकलनों से स्पष्ट दिखाई पड़ती है. आपको मिले सम्मान व उपाधियां आपकी अपार विद्वता, कर्मठता, अदभुत क्षमता निष्ठा एवं लगन के सहज परिचायक है. बहु आयामी प्रतिभा का परिचय आपकी फिल्मी गीत के संग्रह की रचना से सहज सुलभ होता है. निश्चय ही, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान की उपाध्यक्ष डॉ० तारा हिन्दी साहित्याकाश में प्रदीप्त तारा की भांति सदैव जगमगाकर अनेक साहित्यकारों, पाठकों को विविध दिशा निर्देश करती हुई कल्याणकारी सामायिक साहित्यिक सृष्टि का प्रेरणा स्रोत बनती रहेगी. निःसंदहे इनकी साहित्यिक सृष्टि हिन्दी साहित्य की अक्षय निधि होगी.

विशेषांक की सफलता की विशेष कामना के साथ.

::

आहट के प्र.सम्पादक **डॉ० ब्रहमदेव प्रसाद कार्यी**, से क्या सोचते है डॉ० तारा सिंह के बारे में-

डॉ० तारा की रचनाओं से उभरता है उनका विशाल व्यक्तित्व

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप आगामी माह में डॉ० तारा सिंह पर केंद्रित विशेषांक निकालने जा रहे है. इस संदर्भ में विचार-प्रेषण के लिए आपने मेरा स्मरण किया, इसके लिए आभारी हूँ.

निस्संदेह, 'विश्व स्नेह समाज' ने अल्पावधि में ही पर्याप्त ख्याति अर्जित कर ली है. पत्रिका के कई विशेषांक चर्चित भी हुए है. डॉ. राज बुद्धिराजा विशेषांक की एक झलक देखने का मौका मुझे भी मिला था. अवसर था तरुण सांस्कृतिक चेतना समिति, बिहार का २६वॉ महाधिवेशन. पत्र-पत्रिकाओं की सुसज्जित प्रदर्शनी में वह अंक, सामग्री-संकलन, संपादन-कौशल एवं कलात्मक प्रस्तुति के कारण, पाठकों एवं दर्शकों को आकर्षण का केंद्र बना था. मैं आशा करता हूँ डॉ. तारा सिंह पर केंद्रित अंक भी, इसी तरह पठनीय व संग्रहणीय होगा.

वर्ष २००७ में भारतीय साहित्यकार संसद, समस्तीपुर के सारस्वत सम्मान -समारोह में मुझे डॉ. तारा सिंह से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था. उनके हंसमुख पतिदेव डॉ. बी. पी.सिंह की मध्यस्थता और अध्यक्षता में, मुख्य समारोह के पूर्व, एक स्वतः स्फूर्त अल्पकालिक मिलन-समारोह आयोजित हो गया था, जिसमें उक्त अवसर पर समस्तीपुर पधारे देश के कई गणमान्य साहित्यकार सम्मिलित हुए थे. सौहार्द का अविस्मरणीय क्षण!

डॉ. तारा सिंह के चेहरे से आत्मीयता झॉकती है और उनकी रचनाओं से उभरता है उनका विशाल व्यक्तित्व. नियति-नटी की क्रूरताओं को हॅसकर झेलनेवाली, सत्यं शिवं सुंदरम की साधना में सतत लीन सरस्वती की इस एकांत आराधिका की कालजयी कृतियॉ हिंदी भाषा और साहित्य की अमूल्य धरोहर हैं.

स्वामी विवेकानन्द जयंती के शुभ असवर पर डॉ. तारा सिंह को आहट शिखर साहित्य सम्मान से सम्मानित व अलंकृत किया जाएगा. शाम्भवी सदन, दरभंगा का यह समारोह शाम्भवी-सदन-समारोह के नाम से ख्यात है, जिसमें कला, साहित्य, संगीत क्षेत्रों के शीर्ष व्यक्तियों की सक्रिय सहभागिता होती है और इन क्षेत्रों से जुड़े लोगों के साथ ही, जन-सामान्य भी इस दिवस का बेसब्री से इन्तजार करते है. मेरे योग्य कोई अन्य सेवा हो तो लिखें.

सुचित्रा फिल्म डायरेक्टरी के सम्पादक **ब्रिज भूषण चतुर्वेदी** क्या लिखते है डॉ० तारा सिंह के बारे में-

डाक से लेखक एवं कवि लालबिहारी लाल की लघु पत्रिका 'लेखनी के रंग' मिली. उसमें प्रकाशित एक ग़ज़ल तुम्हारा प्यार किससे निभाया न गया पढ़कर लेखनी का लोहा मानना ही पड़ा. बम्बई के १३ दिन के प्रवास पर भेंट न हो आप भी व्यस्त है व मैं वहॉ मैं अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में २ से ८ फरवरी तक रहूँगा. इसके पूर्व ३०-३१ जनवरी को बड़ौदा में रामानंद सागर के एक्टिंग स्कूल में कार्यक्रम में प्रमुख अतिथि हूँ. फिर वहॉ रामायण, पृथ्वीराज चौहान, साईबाबा, नवदुर्गा के कलाकारों से बातचीत भी करुंगा. आपको सुचित्रा का ३४वॉ २००७-०८ प्रेषित कर रहा हूँ. इसके बारे में लिखिएगा. आपके पत्र व फोन का इंतजार रहेगा.

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान

इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित पुस्तक

1. मधुशाला की मधुबाला :

लेखक : राजेश कुमार सिंह **मूल्य** 10.00

2. अपराध

लेखक : राजेश कुमार सिंह मूल्य : 10.00

3. सुप्रभात

दस रचनाकारों का संग्रह मूल्यः 10.00

4. निषाद उन्नत संदेश

लेखकः चौ0 परशुराम निषाद मूल्यः 10.00

5. एक अद्भुत व्यक्तित्व

लेखकः गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी मूल्यः 10.00

6.रोड इन्स्पेक्टर लघु उपन्यास

लेखकः गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी मूल्यः 20.00

7. लर्निग कम्प्यूटर विद फन भाग 1

लेखकः गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी मूल्यः 45.00

8. लर्निग कम्प्यूटर विद फन भाग 2

लेखकः गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी मूल्यः 35.00

पुस्तकों के लिए भेजें/लिखें: मनीआर्डर/डी.डी.
सचिव, विश्व हिदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई. जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

गोल्डन वर्ल्ड हिंदी साप्ताहिक के संपादक, अनेकों काव्य संग्रहों का संपादन कर चुके, फिल्म लेखक/निर्माता **मोहन कुमार** जी क्या कहते है पीलीभीत, उ.प्र. से डॉ. तारा सिंह के बारे में-

हिन्दी साहित्याकाश पर अटल नक्षत्र-डॉ. तारा सिंह

हिन्दी साहित्य के क्षेत्रमें डॉ० श्रीमती तारा सिंह का नाम अपरिचित नहीं है. इनके द्वारा हिन्दी साहित्य के गद्य व पद्य ही हर विधा में अपनी सूझ बूझ व लगन शीलता से साहित्य सृजन कर हिन्दी राष्ट्र भाषा के प्रति अपनी पूर्ण आस्था व्यक्त करते हुए राष्ट्र के हिन्दी प्रेमियों कवियों, बुद्धिजीवियों को भी राष्ट्र भाषा के प्रति पूर्ण रुपेण जागृत करने का भरपूर प्रयास किये है.

जहां तक मेरा अनुभव है कि डॉ. तारा सिंह की रचनाएं आम आदमी व जन समाज की पीड़ा से परिपूर्ण मातृत्व का वात्सल्य लिए हुए प्रेम और स्नेह से परिपूर्ण सरल भाषा के साथ लिखी हुई होती है. इनकी रचनाओं में मातृ भावुक्ता नहीं बल्कि समस्यानुरुप जुल्म और अन्याय के साथ साथ आस्था, विश्वास और शौर्य पर भी इनकी लेखनी में बहुत ही जानदार और शानदार रचनाएं प्रस्तुत की है.

डॉ. तारा को हर विधा की लेखन में अद्वितीय महारथ हासिल है. ऐसा विचार उनकी रचनाओं और उनकी प्रकाशित कृति का अध्ययन करने के उपरान्त प्रतीत होता है. इनकी स्वरचित रचनाएं मां और सन्तान का रिश्ता, विश्वास, मेरे भाग्य गगन पर दुख रहता सदा आच्छादित, मनु मन की आत्मा संग रिश्ते भी मैले हो गए प्रभु किस राह से तुम्हारे पास आऊं, मैंने देखा है अपने जीवन को मकड़ी के जाल में बंद तथा जिसने सेहरा सजाया वही तो रचायेगा चिता भी बेहद रुचिकर बन पड़ी है.

डॉ. तारा जी की लेखनी से निकला साहित्य जनसाधारण की समस्या पर भी आधारित है और जन समस्याओं के प्रति गम्भीर वेदना से परिपूर्ण नजर आती है. इनके विचार इनकी लेखनी सारगर्भित काव्य की रचना कर एक आदर्श साहित्य सुलभ कराने में पूर्ण रुप से सक्षम है और यह मात्र भावुक ही नहीं बल्कि समय -समय पर जुल्म और अन्याय के प्रति भी शोले व अंगारे भी बरसाये हुए नजर आती है. साथ ही आस्था विश्वास और शौर्य भी इनका संबल प्रतीत होता है. जिसे यह छोड़ने की पक्षधर बिलकुल भी नहीं है.

मेरे विचार से डॉ. तारा सिंह जी अपनी कला साधना के बल पर ही इतने कम वक्त में साहित्यकाश पर अटल नक्षत्र की भांति स्थापित हो गई है तथा इनको अनेक साहित्यिक संस्थाओं नें भी सम्मान प्रदान किये हैं तथा राष्ट्र के विभिन्न ख्याति प्राप्त साहित्यकारों द्वारा भी इनकी सुयोग्य लेखनी की मुक्त कंठ से सराते हुए अपने स्वतंत्र विचारों द्वारा खुलकर इनके साहित्य की प्रशंसा की गई है.

अन्त में मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि वह तारा जी के साहित्य को निरंतर ख्याति एवं लोकप्रियता प्रदान करते हुए इन्हें आकाश में स्थापित ध्रुव तारे की भांति ही एक अटल नक्षत्र के रुप में साहित्यकाश पर स्थापित करते हेतु अपनी कृपा दृष्टी बनाये रखकर इन्हें निरंतर उत्साह एवं बल प्रदान करते रहें.

शीघ्र प्रकाश्य   २०० प्रतियां बुक हो चुकी है   शीघ्र प्रकाश्य

अपनी प्रतियां बुक करायें, और हजारों के ईनाम पाए

आरक्षण, जातिवाद और नारी शोषण के खिलाफ जबरदस्त आवाज बुलंद करने वाला हर युवा के दिल की आवाज, हर नारी के मन की सोच को उजागर करने वाला **गोकुलेश्वर कुमार 'राही अलबेला'** का *लघु उपन्यास*

रोड इस्पेक्टर कीमत 20 रुपये

अपनी प्रति अभी सुरक्षित करवा लें. कहीं देर ना हो जाए..............

आप अपनी प्रति पोस्ट आफिस और बैंक चार्जेज से बचने के लिए यूनियन बैंक की किसी शाखा सें खाता संख्याःएस.बी. ५३८७०२०१०००६२५६
जमा कर अपनी रसीद की कापी अपने पते के साथ कार्यालय को भेज देवें अथवा मनिआर्डर/बैक डाफ्ट. भेजें. चेक स्वीकार्य नही होगा. प्रत्येक बुकिंग का एक नंबर है, उनमें से कुछ नंबर ईनामी है.

What is the thought of **Pavan Kumar Nambari** from Fairfax, USA about Dr. Tara Singh

Hope, you are quite happy in India with your family. You may be rather surprised to receive a letter from an unknown person like me. I am also an Indian like you. I had to migrate to U.S some 25 years ago in search of livelihood. Consequently. I settled here permanently with my family. I have every fascination and due weakness for India and our friends there. Hope] this bond will continue to exist for the rest of my life. Though only few Hindi books are available here, but I go through them as and when I come across. Usually I go to the library and fortunately I had an opportunity to go through your Hindi poetic book. "Tam ki Dhaar par Dolati, Jagati Ki Nauka" there. Believe me Taraji, your poems are full of innocence, simpicity and honesty. Even a man with strong heart would also get melt kile a wax candle as your compositions are so touching and thoughtful. These poems are a rich and unique contribution to Hindi lilterature.

May I request you, if you could send me another Hindi poetic book at the earliest and thus oblige! Though I have weakness to go thourgh all you writtings, but the same is only possible if I visit India. Lastly, I wish your literary journey to continue unabated.

What is the thought of **Mr. Praneet Kumar Singh** from Silver Spring, USA about Dr. Tara Singh

Hope, this letter finds you in good health and spirit. I am a sincere fan of yours. I am a software engineer working with TCS, Washington. When I get fully tired and bored after the day's work, I usually go thourgh your Hindi poems and gazals published on various, websites, such as sawf.org, sahityakunj.net, poetrypoem.com, kaavyanjali.com, hi.literature.wikia.com, and poemspoetry.com etc. These poems give me relaxation and recreation as they deal with serious personal and social issues in a lucid manner. They are full of rhythm and philosophy. The human life cycle, man's sufferings, issues and problems related to social events have been explicitly dealt with on the basis of hisorical, logical and cultural backgrounds. So many questions are created e.g. "Who am I? How am I related to nature vis-a-vis God? Why do men suffer? Is there any limit to these sufferings, etc?" Also you tried your best to answer all such queries in your poems in a very natural and convinicing way.

I shall be very thankful if you please let me have few more copies of your publications.

$$$$$$$$$$$$$$$$$$$$$$$$$$$$$$$$$$$$$

युवा साहित्यकार **सूर्य नारायण शूर**, इलाहाबाद से क्या कहते है डॉ. तारा सिंह के बारे में-

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान की उपाध्यक्षा डॉ० श्रीमती तारा सिंह जी के विषय में कुछ भी कहना सूर्य को रोशनी दिखाने के समान है.

तारा सिंह जी की साहित्य साधना में अब तक जितने काव्य सज संवर कर साहित्य के आकाश में फैले है वे सारे आकाश के किसी तारे से कम नही है. उनकी साहित्य साधना सफलता के जिस सोपान पर है वहां से समाज का सिर्फ भला ही होता है.

वैसे भी एक सफल साहित्य सेवा का यहीं प्रयास होना चाहिए कि उससे द्वारा समाज व राष्ट्र का प्रत्येक कानो लाभान्वित हो. मैं विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि श्रीमती तारा सिंह इस काम को सफलता पूर्वक सम्पादित कर रही है.

मैं अपने आदरणीय बड़े भाई द्विवेदी जी को सादर धन्यवाद देता हूँ जो अपने अच्छे पवित्र विचारों से साहित्यकारों को मंच प्रदान कर रहे है. तारा सिंह के विषय में जो कुछ भी अशोक कुमार जी ने लिखा है वह अक्षर-अक्षर सत्य है. उनकी कविताओं का अध्ययन करने से तो बौद्धिक विकास होता ही है साथ में शान्ति की भी इच्छा पूर्ण हो जाती है. मैं ईश्वर से उनकी सफलता की सफल कामना करता हूँ.

++++++++++++++++++++++++++++++++

पति की नजरों में

अपनी हमसफर, हमराही, हमनजर, अर्द्धांगिनी डॉ० तारा सिंह के बारे में क्या कहते है सौभाग्यशाली विद्वान पति डॉ. बी.पी.सिंहः-

मेरी कवयित्री पत्नी, डॉ० तारा सिंह

कहते है, इस दुनिया में सुपुत्र और सुपत्नी भाग्यवालों को नसीब होती है. तो मैं सचमुच भाग्यशाली हूँ, जो मुझे तारा जैसी पत्नी मिली. मेरे जीवन सफर में सुख-दुख, हर घड़ी मेरी छाया बनकर खड़ी रही. जीवन के बुरे दिन भी आये लेकिन उन्होंने कभी महसूस नहीं होने दिया. कंधा से कंधा मिलाकर दुख को आध बॉटकर आज तक मेरे साथ चल रही है. कितने ही ऐसे मोड़ आये जहॉ मैं खुद को निबल महसूस करने लगता था; तब तारा मेरी हिम्मत बनकर खड़ी हो जाती थी और बुरे से बुरे दिन भी हॅसते-विहॅसते बीत जाते थे. चूँकि मैं कोलकाता कॉलेज में रीडर और प्रिसिपल था, इसलिए बच्चों को यथेष्ट समय नहीं दे पाता था. तारा अपनी सर्विस को छोड़कर, बच्चों के साथ, बच्चों की पढ़ाई-लिखाई, स्कूल पहुॅचाना-लाना, मेरी देख-रेख करना, सब संभालती चली गई. फलतः आज वह एक सफल पत्नी और सफल मॉ है. हमारे दो पुत्र है और दोनों ही विदेश में नौकरी करते है; इन्हें विदेश तक भिजवाने में तारा का सफल प्रयास रहा.

कविताएं लिखना, साहित्य समारोहों में जाना; तब भी इन्होंने जारी रखा. लेकिन मेरी व्यस्तता एवं बच्चों की पढ़ाई को लेकर चिंतित, मुझे इस ओर अपना ध्यान जितना देना चाहिए था, नहीं दे सका. लेकिन फुर्सत मिलते ही इन कविताओं को छपवाकर किताब का रुप दूंगा, मन ही मन तय कर चल रहा था. और आज मैं वही कर रहा हूॅ. एक के बाद एक तारा की किताब इसलिए छपकर निकल रही है. मैं चाहता हूॅ, उसमें जो हुनर है, उसे दुनिया के आगे लाऊँ और ईश्वर की दया से मैं सफल भी हो रहा हूॅ. आज तारा को लगभग अपने देश के सभी साहित्यकार जानते हैं और लाखों पाठक इनकी कृतियों को दिल लगाकर पढ़ते भी है. हर रोज प्रशसा भरे पत्र आते रहते है. इसमें मैं अपनी सफलता का अंश भी देख पाता हूॅ. बहुत खुशी होती है, तारा मेरी पत्नी है. इनकी अब तक लगभग १४ कविता संग्रह और ग़ज़ल संग्रह की किताबें निकल चुकी है. इनकी कविताएं ३२ सहयोगी पुस्तकों में और २० इंटरनेट वेबसाइटों पर भी प्रकाशित हो चुकी है.

आज विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान के सचिव के माध्यम से विश्व स्नेह समाज मासिक द्वारा तारा पर विशेषांक का हिस्सा बनते मैं गर्वित हो रहा हूॅ. ईश्वर से प्रार्थना करुंगा कि आगे इनका और नाम हो, सम्मान हो. तारा का पति होने का मुझे गर्व है. मैं जब भी उसे सम्मानित होते देखता हूॅ, लगता है मैं खुद सम्मानित हो रहा हूॅ. ईश्वर इनकी लम्बी आयु दें, इन्हें स्वस्थ रखें और ये इसी प्रकार देश का, समाज का, अपने माता-पिता और मेरा नाम बढ़ाती रहें. इति

डॉ० केवल कृष्ण पाठक को भाषा भूषण अलंकार

रवीन्द्र ज्योति मासिक के सम्पादक को सरिता लोक भारती संस्थान द्वारा उनकी साहित्यिक एवं पत्रकारिता में अभूतपर्वू उपलब्धियों के लिए भाषा भूषण अलंकार–2007 से पुरस्कृत किया गया. डॉ0 पाठक को जैमिनी अकादमी द्वारा आयोजित महादेवी वर्मा जन्म शताब्दी समारोह में भी सम्मानित किया गया. पत्रकारिता के क्षेत्र में देश के विभिन्न संस्थानों द्वारा सम्मानित डॉ0 पाठक संक्षित जीवन परिचय निम्न है–

डॉ0 केवल कृष्ण पाठक, पिता–श्री गोविन्द राम माता– श्रीमती विद्यावन्ती, जन्म–12 जुलाई 1935, तुलम्बा, मुलतान, शिक्षा– डॉ0 ऑफ लिट्रेरी कल्चर, संपादक रवीन्द्र ज्योति मासिक

सम्पर्कः 343/19, आनन्द निवास गीता कॉलोनी, जीन्द 124102, हरियाणा,

प्रकाशित कृतियाः युवा देश के जागो, जीवन तेरे कितने रंग, बन्दना के स्वर मातृ वन्दना, सरल बहुआयामी प्रतिभा के धनी, सम्पादक, समीक्षक, कवि, साहित्यकार अपने ज्येष्ठ पुत्र रवीन्द्र कुार के महाप्रयाण से आप्त दुख रवीन्द्र ज्योति विगत 38 वर्षो से अनवरत प्रकाशित कर रहे है. आप साहित्य के कुशल चितेरे है.

आपको पीड़ा मन की काव्य कृति पर भाषा भूषण अलंकरण 2007 प्रदान किया गया.

डॉ० तारा पर मेरी संपादकीय मेहरबानी सबसे अधिक रही

सबसे अधिक संकोच मुझे एक संपादक के रुप में होने लगा कि अभी पुराने सम्मानित होने की सुचना प्रकाशित नहीं हुई कि नयी सुचना आ गयी.'तारा सिंह जी को फला सम्मान.' मैं सोचता क्या करुं, किसकी सूचना को दूं किसकी कांटूं. फिर सोचता अगर सम्मान मिल रहा है तो पत्रिका से जुड़े लोग सुचना तो भेजेंगें ही. खैर मेरी संपादकीय कलम बहुत कम लोगों पर मेहरबान होती है कि एक ही रचनाकार लगातार दो बार छप जाए. लेकिन डॉ० तारा जी के संदर्भ में ऐसा संयोग बार-बार आया.

२००५ में डॉ० तारा सिंह की प्रविष्टि आयी, जीवन परिचय पढ़ा, परिचय में एक लम्बी सूची जुड़ी हुई थी. मैंने सोचा-यह कौन सी कवियित्री है जिसका नाम मैंने पहले नहीं सुना. निर्णायक मंडल ने ०६ के साहित्य मेला हेतु आपका नाम महादेवी वर्मा सम्मान हेतु चयन किया. आपका पत्र आया कि मैं आ रही हूँ. बीच बीच में कानाफुसी महाराज के माध्यम से कानाफुसी जारी रही. उस समय साहित्य मेला दो दिन का हुआ करता था. मैने कार्यक्रम में अतिथि के रुप में नाम जोड़ दिया. लेकिन दुर्भाग्य वस कार्यक्रम के एक दिन पहले डॉ० बी.पी.सिंह जी ने कानाफुसी की, कि तारा जी की माताजी के गम्भीर रुप से अस्वस्थ होने के कारण इस बार कार्यक्रम में सम्मिलित नहीं पाएगें. मुझे एक पल को झटका लगा. क्योंकि जिस सक्स से सबसे अधिक कानाफुसी हुई थी, वह सक्स अब नहीं आ रहा है. लेकिन प्रभु की माया के आगे सब कुछ बेकार हो जाता है. नाम कार्ड में छप चुके थे. मैंने अपने सहयोगियों से वार्ता की, सबने कहा-चलिए, वहीं होता है जो मंजुरे खुदा होता है.' किसी और को अतिथि पद दे दीजिएगा. संयोगवश आपका साहित्य श्री ०६ के लिए पुनः प्रविष्टि आया. जिसमें आपने मानद उपाधि हेतु आवेदन किया था. निर्णायंक मंडल ने आपको पुनः तवज्जों दी और विद्या वारिधि की हकदार बनी. इस बीच आपके पत्र, रचनाएं मिलती रहे. बीच बीच में कानाफुसी भी होती रही. लेकिन सबसे अधिक मुझे संकोच एक संपादक के रुप में होने लगा कि अभी पुराने सम्मानित होने की सुचना प्रकाशित भी नहीं कर पाया, कि नयी सुचना डॉक से आ जाती-'तारा सिंह जी फला सम्मान, उपाधि से सम्मानित.' मैं सोचता क्या करुं, किसकी सूचना को दूं किसकी सूचना को न दूं. एक तरफ मन करता अगर सम्मान मिल रहा है तो पत्रिका से जुड़े लोग सुचना तो भेजेंगें ही. खैर मेरी संपादकीय कलम बहुत कम लोगों पर मेहरबान होती है जो एक ही लेखक/रचनाकार लगातार दो अंको में छप जाए. लेकिन डॉ० तारा जी के संदर्भ में ऐसा संयोग बार-बार आया. कुछ साहित्यकारों ने कहा भी आप तारा जी की सुचना व रचनाएं अक्सर छापते रहते हैं और हम लोगों को कहते हैं थोड़ा इंतजार कीजिए. अरे भाई हम लोगों की रचनाएं अस्वीकृत होने के लायक हो तो बात दीगर है, लेकिन आपने तो स्वीकृति की सुचना भी भेज दी है. फिर ये सौतियां डाह क्यों?' मैं निरुत्तर हो जाता. यह मैं नहीं करता बल्कि उनकी कानाफुसी, उनका स्नेह, और मेरी अंतर आत्मा से जुड़ी हुई लेखनी का कमाल है. इस बीच पहले पत्रिका विशिष्ट सदस्य, फिर आजीवन सदस्य भी बनी. मैंने एक दिन कहा-बिहार से भवनाथ जी से कानाफुसी हुई है उन्होंने सरंक्षक सदस्य बनने को कहा है. डॉ० तारा जी ने तुरंत मुझसे कहा-आप बैंक संख्या बताइए. तुरंत भेज रही हूँ, पहले मेरा संरक्षक सदस्य में नाम होना चाहिए. और तारा जी को सरंक्षक सदस्य बन गयी. मगर भवनाथ जी आज तक अटके हुए है.

सम्माननीया ताराजी शनैः शनैः मेरे कानाफुसी यंत्र से दूर होती गई और डॉ.बी.पी. सिंह द्रुत गति से इस मानव निर्मित यंत्र के समीप होते गए. वैसे इस यंत्र को लांग डिस्टेंस इन शार्ट कर्ट यंत्र कहे तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी. सम्माननीय बी.पी.सिंह जी मेरे लिए तारा सिंह जी से भी अधिक प्रिय और नजदीक होते गये. इसके पीछे उनका पति प्रेम भी समाहित था. अब तो डॉ. तारा सिंह जी से वार्ता के लिए अलग से कहना पड़ता है. लेकिन सबसे बड़ी आश्चर्य जनक बात यह है कि डॉ.बी.पी.सिंह जी आज तक मुझसे कभी अपने बारे में कुछ लिखने, छापने को नहीं कहें. यहॅ तक कि विशेषांक की बात पर मैंने जब उनसे कहा कि आप अपने बारे में कुछ विवरण भेज दीजिएगा तो कहे-'क्या करेंगे आप मेरे बारे में छापकर, तारा जी को तो आप छाप ही रहे है यही क्या कम है. ' दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि आज तक डॉ.बी.पी.सिंह जी ने डॉ. तारा सिंह जी को यानि अपनी हमसफर को 'ताराजी' छोड़कर कोई शब्द प्रयोग नहीं किया.

डॉ० तारा:एक नजर में

तारा जी का जन्म १० अक्टूबर १६५२ में बिहार प्रांत के मुंगेर जिले के रतनपुर गॉव में हुआ था. कक्षा १ से स्नातक तक इन्होंने भागलपुर सिटी के गर्ल्स छात्रावास मे रहकर पूरी की. इन्हें मेरिट छात्रवृति भी मिली. बचपन से कविता रचने की शौकीन ताराजी बराबर खेल, कूद, संगीत, नृत्य, वाद-विवाद एवं कविता और आलेख लेखन प्रतियोगिताओं में सक्रीय भाग लेती रहीं. कॉलेज की पढ़ाई समाप्त होते ही इनकी शादी डॉ. ब्रहमदेव प्रसाद सिंह, प्रवक्ता, रसायन, आचार्य जगदीश चंद्र बसु कॉलेज, कलकत्ता से हो गई और वे बिहार छोड़कर कलकत्ता चली आई. यहॉ रहकर अपनी व्यस्त जिंदगी के बावजूद कविताएं लिखती रही, जो विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में नियमित प्रकाशित होती रही. लोगों ने इन्हें काफी सराहा भी. लेकिन आर्थिक तंगी के कारण इनकी रचनाएं पुस्तक का रूप न ले सकी. मगर अपने पति के साथ विभिन्न साहित्यिक सभाओं एवं कवि-गोष्ठियों में लगातार भाग लेती रही.

ताराजी अपने पति के अवकाश ग्रहणोपरान्त एवं अपने दोनों इंजीनियर पुत्रों के स्थायित्व के बाद मुम्बई में आकर साहित्य सेवा में तल्लीन हो गई और शुरू हो गया प्रकाशनों का दौर २००४ में एक बूँद की प्यासी, सिसक रही दुनिया प्रोत्साहन पत्रों ने ऊर्जा का काम किया. प्रकाशनों का सिलसिला जो चला वो चलता ही रहा. हम पानी में भी खोजते रंग, एक पालकी चार कहार, सॉझ भी हुई तो कितनी धुंध ली, एक दीप जला लेना, रजनी में भी खिली रहूँ किस आस पर, अब तो ठंढी हो चली जीवन की राख, यह जीवन प्राः स्मरण-सा लघु है प्रिये, तम के धार पर डोलती जीवन की नौका, विषाद नदी से उठ रही ध्वनि, नदिया-स्नेह बूँद सिकता बनती, नगमें है मेरे दिल के, यह जग केवल स्वप्न आसार, तुम्हारी वो काफिर निगाहें, भींग रही संध्या की अलकें, जो कह न सकी (कहानी संग्रह, शीघ्र प्रकाश्य), जीवन की रेती पर (प्रकाशनाधीन), नक्षत्र-लोक (प्रकाशनाधीन) तक जारी है. इनकी रचनाएं ४६ सहयोगी काव्य संकलनों में भी स्थान पा चुकी है-पूरब-पश्चिम, गजल प्रिया-२००४, फूल खिलते रहेंगे, काव्य गंगेश्वरी, स्त्री नहीं प्रकृति हो तुम, आत्का की पुकार, यादों के फूल, नया क्षितिज, काव्य मंदाकिनी, कविता की लकीर, शब्द कलश, काव्य सरिता, रश्मिरथी, स्मृति के सुमन, अभिव्यक्ति, शून्य से शिखर तक, अन्तर्मन, देश-परदेश, लेखनी के रंग, काव्य मंजूषा, श्रम साधना और साहित्य दर्पण, काव्य सुधा, शब्द सूर्य, गंगोत्री-६, स्वर प्रसून, काव्य संगम, सप्त सरोवर, शब्द माधुरी, युवा कौन, सरोरुह, काव्य सलिला, अंजुमन, काव्य मंजूषा, वंदना, यादें, साधक सार्थक होगी, काव्य दर्पण, सद्भावना एवं साहित्य दर्पण, सुरभि पुष्प, शब्द तरंग, शब्द सखा, उजास, कैसे कहूँ, अष्ट कमल, दूर गगन तक, शब्द गंगा आदि.

आपकी आपकी २० वेब साईट्स भी है-www.poetry.com/tarasingh, www.poetrypoem.com/poetic13, www.writebay.com/tarasingh, www.writebay.com/poetic, www.poetryvista.com/poetic13, www.poetryvista.com/tarasingh, www.sawf.org,www.poemsnpoetry.com, www.maxpages.com/tarasingh, sharepoetry.com/user/show/tarasingh, www.desiclub.com, www.mcl.org, www.stortypublisher.com/tarasingh, www.indolink.com, hindipoems.spaces.live.com, www.kaavyanjali.com,www.kavitakosh.org, www.writers_club.com, www.srijangatha.com.www.sahityakunj.net

आपको अब तक निम्न मानदोपाधिा/सम्मान/पुरस्कार मिल चुके है-कवि कुलाचार्य- अखिल भारतीय साहित्य संगम, उदयपुर, विद्या वारिधि-भारतीय साहित्यकार संसद, समस्तीपुर, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्था, इलाहाबाद, साहित्य वारिधि-सां.सां.कला संगम अकादमी, प्रतापगढ़,विद्या वाचस्पति -विक्रमशीला हिन्दी विद्यापीठ, भागलपुर,सां.सां.कला संगम अकादमी, प्रतापगढ़, वर्ल्ड लाईफटाईम एचिवमेंट अवार्ड, अमेरिकन बॉयोग्राफिकल इंस्टीट्यूट, वोमेन आफ द इयर-२००७, अमेरिकन बायोग्राफिकल इंस्टीटयूट, राइजिंग पर्सानिलिटी ऑफ इंडिया अवार्ड और गोल्ड मेडल, इंटरनेशनल पर्सानिलिटी पेनगन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली,महादेवी वर्मा सम्मान-अ. भा. साहित्यकार अभिनन्दन समिति, मथुरा,हिन्दी रत्न, हिन्दी काव्य रत्न, काव्य प्रतिभा रत्न,हिन्दी गौरव सम्मान, अंतराष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान अकाडमी, कुशीनगर, ऋतंभरा रत्न २००६, ऋतंभरा साहित्यिक मंच दुर्ग, भारती भूषण सम्मान, भारती रत्न सम्मान-राष्ट्रीय राजभाषा पीठ, इलाहाबाद, साहित्य श्री सम्मान, अ. भा. भाषा सा. सम्मेलन, भोपाल,श्रीमती केसर बाई सोनी स्मृति सा.रा.शिखर सम्मान, भीलवाड़ा, राजस्थान, श्रेष्ठ साधना सम्मान-अ.भा.भाषा. भोपाल, वीरांगना सावित्री बाई फुले अवार्ड-भा. दलित सां.अका., दिल्ली, सन्त कवि कबीर पुरस्कार, बाबा साहेब अम्बेडकर

साहित्य रत्न पुरस्कार, अनेखा विश्वास, इंदौर, राष्ट्रभाषा विद्यालंकार- अ.भा. साहित्य कला परिषद, कप्तानगंज, निराला सम्मान-शब्द कारखाना, जमालपुर, बिहार, साहित्य सुमन- अन्तर्राष्ट्रीय पराविद्या शोध संस्था, महाराष्ट्र, साहित्य गौरव सम्मान, हिन्दी काव्य ज्योति सम्मान-खानकाह सूफी दीदार शाह चिश्ती, मुम्बई, विशिष्ट सम्मान-२००५ प्रबंध निदेशक, बिहार स्टेट टेक्स्ट बुक कार., पटना, कवयित्री महादेवी वर्मा सम्मान-विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद, राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान- अ.भा.राष्ट विकास संगठन, गाजियाबाद, भारत गौरव सम्मान-ऋचा प्रकाशन, कटनी, साहित्य शिरोमणि- मानव कल्याण संघ, दादरी, रजन कलश शिव सम्मान, रंजन कलश, भोपाल, सम्मान पत्र, अखिल भारतीय वैचारिक कांति मंच लखनऊ, राष्ट्रीय साहित्य शिखर सम्मान-भारतीय साहित्यकार संसद, समस्तीपुर, ऋतम्भरा साहित्य मणि सम्मान, ऋतंभरा साहित्यिक मंच, दुर्ग, सम्मान पत्र, अ.भा.कवयित्री सम्मे. विद्यापीठ महोत्सव, भागलपुर, कवि शिरोमणि-विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ, भागलपुर, स्मृति साहित्य श्री सम्मान- श्री मुकुन्द मुरारी स्मृति सां.माला, कानपुर, भाषा रत्न सम्मान, मुम्बई रत्न,हिन्दी सेवी सम्मान,कवि रत्न जैमिनी अकाडमी, पानीपत, साहित्य प्रभा सर्वोच्च ज्ञानमाला पुरस्कार, दून द्रोण आदिम विकास स.देह, पूर्व-पश्चिम काव्य गौरव सम्मान- जागृति प्रकाशन, मुम्बई, मोडूराम मीणा स्मृति राष्ट्रीय सम्मान, साहित्यांचल, भीलवाड़ा, राजस्थान, सुभद्रा कुमारी चौहान सम्मान- अन्तर्राष्टीय पराविद्या शोध संस्था, महाराष्ट्र, राष्ट्र गौरव साहित्य सृजन सम्मान-सुरभि सां. संस्कृति अकादमी, खण्डवा, मीरा रजत स्मृति सम्मान- हिन्दी भाषा साहित्य परिषद, खगड़िया, राष्ट्र काव्य गौरव -खानकाह सूफी दीदार शाह चिश्ती, मुम्बई, स्व. श्री हरि ठाकुर स्मृति सम्मान-पुष्पगंधा प्रकाशन, छत्तीसगढ़, हिरदे कवि रत्न सम्मान-छत्तीसगढ़ शिक्षक साहित्यकार मंच,विशिष्ट साहित्य साधना सम्मान, अ.भा. सां. स., भोपाल, काव्य मधुरिमा-अ.भा.साहित्य संगम, उदयपुर, काव्य भूषण-काव्य लोक संचालन समिति, जमशेदपुर, मधुमिश्रित आकांक्षा साहित्य सम्मान, सुरभि सा. संस्कृति अका. खण्डवा, समन्वय श्री सम्मान, अ.भा.भाषा.सा.समे., भोपाल सहित सारस्वत साहित्य सम्मान, मधुरिमा रत्न, साहित्य रत्न सम्मान, जन कवि मानदोपाधि, काव्य मर्मज्ञ सम्मान, साहित्य गौरव अवार्ड, तुलसी सम्मान, स्व. रामकिशन दास स्मृति गीति-साहित्य सम्मान, साहित्य शिखर सम्मान, अभिव्यक्ति सम्मान, साहित्य मनीषि सम्मान, कवि रत्न सम्मान, काव्य गौरव सम्मान, शान-ए-अदब, साहित्य सेवा सम्मान, स्व० महादेवी वर्मा स्मृति सम्मान, नागार्जुन आहट शिखर साहित्य सम्मान, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी सम्मान, स्व० महादेवी वर्मा स्मृति सम्मान आदि.

डॉ. तारा ने हिंदी फिल्म 'सिपाही जी' के टाईटल सांग भी लिखा है. आप सरंक्षक सदस्य, विश्व स्नेह समाज, राष्ट्रीय मासिक पत्रिका, दी फिल्म राइटर्स एसोसिएशन, अंधेरी, मुम्बई की सदस्य, अ.भा.भाषा-साहित्य सम्मेलन, भोपाल, आजीवन सदस्य, संरक्षक परामर्शदाता मण्डल, अ.भा.सा.अभि.समिति, मथुरा, की आजीवन सदस्य, अखिल भारतीय कवयित्री सम्मेलन, खुरजा, उ.प्र. की आजीवन सदस्य भी है.

डॉ. तारा की जीवनी ऐशिया-पेसीफिक हूज हू २००६, वोल. ६ एवं अफ्रो/ एशियन हूज हू २००६ में प्रकाशित हो चुकी है.

गॉव की पली-बढ़ी कवयित्री तारा सिंह को प्राकृतिक सौन्दर्यता एवं सादगी अपनी ओर आकर्षित करती रही. इन्होंने लौकिक प्रेम से लेकर अलौकिक आस्था को एक सूत्र में बॉधकर उस निराकार के साथ प्राणी-जीवन के स्नेह-सम्बधों के दाम्पत्य बंधन की सृष्टि कर डाली. इनकी मर्मस्पर्शी कविताओं में मानव का संवेगात्मक संस्कार प्रतिफलित होता दिखता है अर्थात् कवि का मानसिक गठन और उसकी क्रिया-प्रक्रिया व्यापक फलक पर दिखती है. फलतः तारा का काव्य, व्यक्तिगत रुचिमात्र नहीं रह जाता.

आपके पति सम्माननीय डॉ. बी०पी. सिंह जी एक सरल, मृदु स्वभाव के धनी बड़े ही मिलनसार व्यक्तित्व के धनी विद्वान है. विज्ञान के क्षेत्र से होते हुए भी अपनी अर्द्धागिनी के साथ कदम से कदम मिलाकर चलते है.

ताराजी की कविताएं १३ वेबसाइटों पर लगातार प्रकाशित होती रही है. इनकी कविता हिन्दी फिल्म 'जय हिन्द सिपाही जी' के लिए श्री माधव भट्ट, मुम्बई द्वारा टाइटिल गीत के रूप में ली गई है, जो सिनेमा घरों में प्रदर्शित हो चुकी है.

तारा जी को ६३ राष्ट्रीय, साहित्यिक एवं शैक्षणिक संस्थानों द्वारा 'विद्या वाचस्पति', विद्या वारिधि, राइजिंग पर्सनालटी ऑफ इडिया अवार्ड एण्ड गोल्ड मेडल, सन्त कबीर पुरस्कार, निराला सम्मान, महादेवी वर्मा सम्मान, भारती भूषण सम्मान, मीरा स्मृति सम्मान, विशिष्ट साहित्य साधना सम्मान, राष्ट्रीय काव्य गौरव सम्मान आदि मानदोपाधियां/सम्मानों से अलंकृत किया गया है.

++++++++++++++++++++

डॉ० तारा सिंह किताबों की कुछ समीक्षाए

अब तो ठंढी हो चली जीवन की राखः एक विहंगम दृष्टि

यह काव्य संग्रह बहुआयामी कविताओं का ऐसा संग्रह है जिसमें कृतिकार ने अनुभवजन्य जीवन के चित्रों को चिन्तन के कैनवास पर अत्यधिक सावधानी से उकेरा है. सौन्दर्यबोध उनकी कविताओं की विशेषता है. गहन भावनाओं का संग्रह कह सकते है इसे. सुख-दुख, प्रणय के विरह-मिलन के क्षण उभर कर आये हैं तो आध्यात्मिक चेतना भी सहज रुप में प्रकट हुई है. अतुकान्त शैली में विरचित कविताएं पाठक के हृदय को छुए बिना नहीं रहती. ऐसा प्रतीत होता है कि छायावाद का प्रभाव भी कवयित्री पर पड़ा है. 'धरते चॉद का ध्यान तुम मेरे मन में छा जाते हो' या कि मेरा प्रियतम आया है बावन साल के बाद पंक्तियां विरह की वेदना और मिलन के सुख के साथ, आज बिना बुलाये आये हो वो कैसे कहदूं कि हुजूर अभी नहीं, छायावाद का प्रभाव नहीं तो क्या है? यह कैसा त्योहार जैसी कविताएँ जनवादी कविताओं की परिधि में आती है. कुछ कविताओं में राष्ट्रीय चेतना का प्रखर स्वर है. उनकी किसान के घर अंधेरा क्यों जैसी जनवादी कविताएं करुण, रस से आप्लावित पाठक को अभुविचलित कर देती है. कुछ ऐसी कविताएं भी है जिनमें कवियित्री का आशावादी दृष्टिकोण जिजीविषा को संबल देता है. समग्र कृति के अनुशीलन से यह माना जायेगा कि डॉ. तारा पर आचार्य विश्वनाथ का प्रभाव है और वे रसात्मक वाक्य काव्य या रमणीय अर्थ प्रतिपादकं वाक्यं काव्य को मानती है. इस परिप्रेक्ष्य में रचनाओं की श्रेष्ठता से इनकार नहीं किया जा सकता.

अन्त में इतना कहा जा सकता है कि लेखिका ने प्रत्येक वर्ग की समस्या का गहन अध्ययन किया है.

कु. विश्वदेव सिंह चौहान, मैनपुरी, उ.प्र.

++++++++++++++++++++++++++++++++

नदिया स्नेह बूँद सिकता बनती

कवयित्री अपने अन्तःकरण से ही प्रश्न करती हुई मानो पूछ रही है कि किसकी स्मृतियां शूल बनकर हृदय को साल रही है. वह कहती है जहॉ अनन्त का मुक्त मन अपने में मग्न है और कोमल कलिका की अपलक पंखुडियों में गंध सौरभ के रुप में बंद है, ऐसे में तुम किसे ढूढने में व्यस्त हो. कवयित्री यह जानाती है कि पाप-पुण्य, स्वर्ग-नरक ने तो मनुष्य को पहले ही टूटने पर विवश कर दिया है. वह तो क्षितिज के वृक्ष को चीरकर उसे जानने को उत्सुक है. जन्म अगर उत्सव है तो मृत्यु भी महापर्व से कम नहीं है. सृजन के साथ नाश और काया के साथ छाया की अनिवार्यता निर्माण और विध्वंस का शक्ति प्रर्दशन भर है. तीनों लोक इस सत्य के सम्मुख नत मस्तक होकर मौन हो जाते है. यह कुरुप होकर भी सृष्टि के कण-कण में रम चुके है.

'मॉ की ममता' में मॉ को पृथ्वी और पिता को मुक्त आकाश की संज्ञा से सम्बोधित किया गया है. अतः मॉ से विछुड़ने की पीड़ा वही वयान कर सकता है जिसने वियोग सहा है. यही कारण है कि वह अपनी मॉ के पास जाने का आतुर है. 'विकल वक्ष संस्कृति को जीर्ण कर तन की संज्ञा से सम्बोधित कर प्रति प्रश्न में कवियित्री पूछ रही है कि यह नारी कौन है? स्वतः उतर में वह चाहती है, मैं जीर्ण तन विकल वक्ष अनन्नत की वह छाया हूँ जिसे भारत की संस्कृति के नाम से सम्बोधित किया जाता है. रुप के रसमय निमंत्रण का आहवान पाकर कविता में मधुर ॲधरों के रस में अतृप्त आलोक मानो भिक्षुक बनकर हृदय प्राण से पूछ रहा है.

काव्याभिव्यक्ति में यज्ञ की धधकती ज्वाला काच त्रांकन बड़ी ही सूक्ष्म दृष्टि से किया गया है. संतानों के पालन-पोषण में होने वाली तपस्या का अनुभव कोई भुक्त भोगी ही जानता है. तपस्या से, संयम से जोड़ा हुआ बल भी टूट सकता है. यही कारण कि उपेक्षामय यौवन के भीतर मधुरिम मधु के खजानों का एक झरना बहने को आतुर है. उन रंगोम को भरने का विश्वास कविता के प्रत्येक छद में है, प्रत्येक अलंकार में प्रीति के सुधारस के रुप में तपस्वी स्वीकार करने को तैयार रहता है.

इस तरह की काव्याभिव्यक्ति प्रस्तुत कविता संग्रह की प्रत्येक कविता में डॉ. तारा सिंह ने उड़ेलने का प्रयास किया है. संकलन काव्य प्रेमियों और साहित्य मनीषियों को अवश्य ही सन्तुष्टि प्रदान करने वाला होगा.

कृष्ण मित्र, गाजियाबाद

++++++++++++++++++++++++++++++++

अब तो ठंडी हो चली जीवन की राख

मैं तो काव्य को रस से परिपूर्ण मानता हूँ. कविता को कभी भी आलोचना की दृष्टि से नहीं देखता. कविता बस कविता होती है. आप एक आशावादी कवयित्री प्रतीत होती है.

आपकी कविता में नायिका अपने नायक को समर्पण की भावना से देखती है, वह कहती है-

बैठों न अभी पास मेरे, थोड़ी दूर ही रहो खड़े
मेरा प्रियतम आया है, दूर देश से बावन साल बाद
कैसे कह दूँ कि अभी धीर धरो

आपने अपने पिता की छॉह के अभाव को बहुत ही सहज और सरल तरीके से परोस कर यह बता दिया है कि एक बेटी के लिए पिता की छॉह का साया वट वृक्ष की तरह होता है. कुछ नही था, तो वह थी पिता की छॉह
तरसा करते थे जो मुझे देखने सालो भर

आपने कविताओं में सामाजिक विषमताओं, जीवन की वास्तविकता, यर्थाथता, आध्यात्मिकता, नारी चेतना के साथ-साथ मानव मूल्यों को उजागर किया है. पुस्तक का मुख पृष्ठ प्रशसनीय है. पुस्तक को बार-बार पढ़ने को मन करता है. आप तो विदुषी साहित्यकार हो, मार्गदर्शन देना.

बद्री लाल 'दिव्य', कोटा, राजस्थान

++++++++++++++++++++++++++++++++++

एक दीप जला लेना

पुस्तक का आद्योपान्त मनोयोग पूर्वक पाठन किया है. जाना है मुम्बई वास्तव में माया नगरी है. नगरी तो अपने आप में स्थूल है परन्तु उसका रक्त संचार व हृदय का स्पन्दन तो वहॉ के निवासी ही है. उसी हृदय की स्पन्दन को अंगभूत स्पन्दन आप भी है.

निरन्तर लिखते रहिए. साथ ही कुछ पढ़ना भी जरुरी है. आप में सम्वेदनाएं है, सम्भावनाएं है, लगन व परिश्रम है. इन सब का समुचित उपयोग आप कर रही है. अच्छा है. कविता बहुत कुछ देती है परन्तु बहुत कुछ मॉगती भी है. उसकी झोली बहुत बड़ी है जब वह भर जाती है तब कही आशीष के दो शब्द उनके मुँह से प्रस्फुटित होते है. किसी सुयोग्य मित्र का मार्गदर्शन भी बड़ा आवश्यक है.

आपके विचारों का सतत् प्रवाह तीव्रगामी है इसी हेतु वे पावस की वेमवती कोशी नदी होकर उछाम रुप से फेन नहीं हो कर आगे बढ़ती है. परन्तु उसको शारदीय संस्कारमयी आकार देना भी आवश्यक है. आप इसे सामाजिक सांस्कृति क संस्कारों में प्रकट कर रही है. मेरी ऐसी शुभकामनाएं है. अन्यथा न ले आलोचक धर्म बड़ा कठिनतम पथ है. यहॉ न कोई संगी बचता है न साथी. बस अकेला पथिक जिसको निरन्तर आगे बढ़ना है. सहृदय कुछ दूर तक साथ आये दो कदम तो आगे बढ़ाये.

बोझ में खुद ही उठा लूंगा सफर का
पर सफर में साथ तो देना पड़ेगा

डॉ० वेद व्यथित, फरीदाबाद

++++++++++++++++++++++++++++++

रजनी में भी खिली रहूं किस आस पर

आपकी पुस्तक रजनी में भी खिली रहूँ किस आस पर'आशा विश्वास, श्रद्धामय समर्पण की काव्य मंजूषा है. काली भयावह रात में आप अपनी काव्यकृतियों के माध्यम से ध्रुवतारों की तरह चमकें यही शुभेच्छा है.

नारी तुम नभ-धरा के बीच वह सेतु
जिससे होकर प्राणी....अनजाने नगर से....
इस दुनिया में आते है.....
नभ-भू पर सब गान तुम्हारे ही प्रणय का...
कवि की कल्पना का श्रृंगार हो...
मृत शव को जिंदा करने छायापुर तक
जानेवाली....सदा एक रुप रहा करुणा और माया...

कविता नारी अस्मिता-परक काव्य प्रशंसनीय है महाकवि प्रसाद जी के शब्दों में कहा जाये तो कहना होगा नारी तुम केवल श्रद्धा हो-पीयूष स्रोत सी बहा करो मानव से जीवन-समतल में. अहं एवमं बर्वरता से दूर नारी जीवन जीव जगत की प्रकृति है.

उठो जागो करो जीवन सघर्ष...
सजा रखी है कॉटों की सेज...कभी तो
उसमें फूल फूटेगा...

आप अपने उद्देश्य में सदैव सफल हो इसी शुभेच्छा के साथ...

वासुदेव तिवारी, मुम्बई प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभा, कांग्रेस हाउस, मुंबई

+++++++++++++++++++++++++++++++++

अब तो ठंढी हो चली जीवन की राख

इस पुस्तक की कविताएं मनुष्य जीवन को जोड़ने वाली कहानियां है. जीवन का फलसुफा इससे मिलता है. गॉधीजी का पुनरागमन यह शुभ शकुन है. इस पुस्तक के लिए मैं डॉ.तारा सिंह को खास बधाई देता हूँ.

सुभाष सम्पत, सचिव, हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, मुंबई

+++++++++++++++++++++++++++++++++

सांझ भी होती कितनी धुधली तथा एक पालकी चार कहार

आपकी रचनाओं में वस्तुतः समाज के वास्तविक स्वरुप को दर्शाया गया है. आज के इस सक्रमण काल में जब मानवता खण्ड-खण्ड होकर विदीर्ण होने की स्थिति में है, ऐसी अवस्था में कवयित्री ने समाज को संतुलित, विवेकी

एवं शाश्वत मूल्यों को स्थापित करने का आग्रह किया है. 'एक पालकी चार कहार' में समाज के विभिन्न खण्डों एवं शाखाओं पर अच्छा प्रकाश डाला है जिसमें आपकी कविता कहीं समाज तो कहीं परिवार तथा इतिहास, भूगोल एवं मानवीय समस्याओं पर अन्वेषण कर उनका परिष्कार करती है. काव्य का यथासम्भव सम्प्रेषण सुधी पाठकों तक हो पाया है. आपको आपके प्रयास के लिए बधाई.

प्रेम शर्मा,निदेशक, भाषा एवं संस्कृति विभाग, हि.प्र, शिमला

++

एक बूंद की प्यासी

सृजन के सुख और उत्साह से परिचित अपने सत्यम् शिवम् सुन्दरम की खोज में कवयित्री तारा सिंह का अंश 'एक बूंद की प्यासी' रचना प्रक्रिया के तीनों आयामों-अनुभूति, चिन्तन और अभिव्यक्ति से साक्षात साक्षात्कार है. उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व और सांस्कृतिक सम्पन्नता का प्रभाव रचना में रिश्ते की परिधि में पारदर्शिता के साथ लोकदृष्ट होता है. एक बूंद की प्यासी-बेटी, बहन, माँ के दर्शन में औरत के सर्द-दर्द के आवरण के सथ सदियों से प्यार को तरसी अन्तर्मन का सही रेखाचित्र है.

वर्षों की प्यासी/थकी मैं सो रही थी
अपने पलकों को आँसू से/क्यों भिगोया आपने

समय की रेती आधार शिला पर यह प्रश्न सिर्फ रिक्त प्रश्न चिन्ह है.

तेरा मेरा रिश्ता क्या बस इतना ही
तुम होतो हम है, तेरे बिना नहीं
रिश्ते की खुशबू तो तब ही महँकी जब-
तुम मेरे जीवन की पहली किरण हो/ तुमने मुझे पहचान दी
पहले अर्धसत्य थी/ तुमने मुझे पूर्ण सत्य किया।।

मैं कवयित्री के सृजनशीलता को सादर सम्मान निवेदित करते हुए इनके सुमंगल आक्षरिक जीवन की कामना करता हूँ और हृदय में लोभ संवरित करता हूँ कि इनकी क्षमता को कवि संसार का आशीर्वाद प्राप्त हो.

ब्रहमदेव नारायण सत्यम्, कटहरा, भागलपुर, बिहार

++++++++++++++++++++++++++++++++

रजनी मैं भी खिली रहूँ किस आस पर

यह संग्रह काव्य-रचना छायावाद और रहस्यवाद के दो किनारों के बीच गंगा-यमुना की धारा में पाठक आत्मा -परमात्मा की तादात्म्यता का रसपान तो करता ही है लीलामय की अदभुत लीला किसने जानी है/कौन उठा सका जीवन का वह घूँघट-पट/जिसमें तकदीर बन भविष्य छुपा हुआ है/तन मंदिर में जल रहा, यह प्राण दीपक/कब तक जलता रहेगा, कब बुझ जायेगा/ईश्वर की ये विकट पहेली, न सुलझाा/सका कोई न कोई सुलझा सकेगा. रचनाकार की अभिव्यक्ति-कौशल परिलक्षित है, इसकी अनुभूति प्राप्त की जा सकती है. इस पुस्तक की कविताएँ नाना रसास्वादन प्रदान करने वाली है. रीतिकालीन कविताओं की झलक भी मिलती है. तारा जी बच्चन की मधुशाला और जयशंकर प्रसाद जी की रचनाओं की धारा के साथ बहने का भी सफल प्रयास किया है-

जब तक नयन-प्याली मदिरा से भरी रही/ढाल-ढ़ालकर पिलाती रही/तब पलकें रही मेरी बंद/जब प्याली टूटने का एहसास हुआ/तब तुम्हारी याद आई

जीवन की सच्चाइयों के धरातल को स्पर्श करती इस पुस्तक की कविताएँ जन्म से मृत्युपर्यन्त की अनुभूतियों को संजोये सुख-दुख, सांझ-उषा और अन्त में 'जीत रहा है महानाश' हार रहा है देवता दानव से'. ईश्वर प्रेम, व्यक्ति प्रेम के अतिरिक्त देश प्रेम की झांकी भी 'सभी देश प्रेमी फिरंगियों के दल में शामिल हो गए' और 'हमारे नेता कौड़ी से करोड़ीमल बन गए' देश की वास्तविक स्थिति का सटीक चित्रण है. कविताओं में व्यंग्य की तेजधार, उद्‌देश्य की सफलता को छूती दिखाई पड़ती है.

पं० जगदीश पाण्डेय, अध्यक्ष, बिहार हिन्दी-साहित्य सम्मेलन

++++++++++++++++++++++++++++++++

नदियां स्नेह बूंद सिकता बनती

आपकी काव्य रचनाएं हृदय की अर्न्तआत्मा पर सीधे असर करना शुरु कर देती है और पाठक की दशा एक सम्मोहन जैसी हो जाती है. कहीं पर तो आप एकदम से करुणामयी देवी बन जाती है, कही शक्तिशाली काली, कहीं प्रेम की पूजारिन तो कहीं सारी इच्छाओं की समाप्ती की देवी, आपने 'मिला ना कभी चैन एक पल' में जीवन वह सच्चाई को दर्शाया है वह काफी सराहनीय है, रोना...मत में आपने गम को भुला कर ईश्वर का विधान समझाया है. आपकी लेखनी का हमेशा से यही प्रयास रहा है कि कविता के माध्यम से आपने लोगों को सच्चाई दिखाई है. एक से बढ़कर एक भावनाओं को लोगों तक पहुंचाया है. ईश्वर आपको और भीा इच्छा शक्ति, कार्यशक्ति देवे ताकि राष्ट्र को आपसे उच्च कोटि की रचनाओं की प्राप्ति हो सके. मुझे पूर्ण उम्मीद है कि शीघ्र ही आपकी काव्य रचनाओं को काव्य जगत का शिरोमणि माना जायेगा, मैं तो कहूंगा-

चेहरे को खुला रखिये/ गम को पास फटकने ना दीजिये
जीने का मजा लीजिए, हंसिए हसाइए.

किशोर प्रसाद राय, वरिष्ठ साहित्यकार

डॉ० के.पी.राय, कोलकाता से

डॉ० ब्रहमदेव प्रसाद सिंह:एक समर्पित शिक्षाविद एवं समाज सेवी

गरीब विद्यार्थियों की फीस भर देना, उन्हें किताबें मुहैया कराना और उन्हें प्रोत्साहन देकर मंजिलों तक पहुँचने की प्रेरणा देना इनका पुनीत मानवीय एवं सामाजिक दायित्व है.
अपने शैक्षणिक समय में भी अपनी अलग पहचान बनाए रक्खें

रसायन शास्त्र की एम.एस.सी. की पढ़ाई पूरी करने के उपरान्त इन्होंने बोलपुर कॉलेज, बोलपुर, पं. बंगाल, में प्राध्यापक का पद संभाला. अंग्रेजी के माध्यम से शिक्षा दान करते हुए छः महीने की अवधि में ही इन्हेंाने बंगला भाषा में दक्षता हासिल कर ली. बंगला पढ़ना-लिखना तो था ही, स्नातक प्रतिष्ठा स्तर की उत्तर-पुस्तिकाओं का आकंलन बंगला में ही करना इन्होंने शुरु कर दिया. दो वर्षो तक ईमानदारी से शिक्षकता करने के उपरान्त ये विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एवं यू.एस.ए.आई.डी. द्वारा यादवपुर विश्वविद्यालय में आयोजित पूर्वोत्तर भारत के नौ राज्यों के प्राध्यापकों के छः सप्ताह व्यापी प्रशिक्षण शिविर में अंश-ग्रहण हेतु प्रतिभागी चुने गये. हर सप्ताह के अन्त में आयोजित परीक्षाओं में सर्वप्रथम रहे; फलतः भारत सरकार के सीनियर सी.एस.आई.आर शोध छात्रवृत्ति के साथ यादवपुर विश्वविद्यालय में प्रकाशीय रसायन क्षेत्र में शोध कार्य के लिए नियुक्त कर लिए गए. ढाई वर्षो में ही शोध कार्य पूरा कर पी. एच.डी. डिग्री के हकदार बन गए. इसी बीच इन्हें शोध कार्य के लिए जर्मनी द्वारा इस क्षेत्र में किए गए शोध कार्यो की जानकारी हेतु द्विवर्षीय जर्मन डिप्लोमा (प्रथम श्रेणी में) पास करनी पड़ी. शीघ्र ही इनकी आचार्य जगदीश चन्द्र बोस कॉलेज, कलकत्ता में रसायन विभागाध्यक्ष के पद पर बहाली हो गई. अपनी लगन, शैक्षणिक योग्यता, छात्रों के बीच असीमित लोकप्रियता एवं प्रशासनिक क्षमता के आधार पर ये कॉलेज कार्यकारिणी समिति के गुरुत्वपूर्ण सदस्य, कॉलेज शिक्षक संघ के महामंत्री एवं कलकत्ता विश्वविद्यालय में पूंजीपतियों द्वारा स्थापित ट्रस्ट कार्यकारिणी समितियों में बदलाव के लिए गठित अधिनियम सुधार कमिटी के कानूनी सलाहकार एवं मंत्री बनाए गए. दक्षिण भारतीय सरकारी कर्मचारियों एवं वयस्क साक्षरता अभियान के लिए स्वयंसेवी संस्थाओं एवं सरकार द्वारा स्थापित हिन्दी प्रशिक्षण केन्द्रों पर शनिवार और रविवार को अपनी कवयित्री पत्नी श्रीमती तारा के साथ जताकर निरंतर प्रशिक्षण कार्यो में सहयोग करते रहे. हिन्दी काव्य गोष्ठियों, रामायण एवं महाभारत चर्चाओं तथा कॉलेज, विश्वविद्यालय और सामाजिक तथा साहित्यिक परिचर्चाओं में अपनी श्रीमती के साथ सक्रिय अंश ग्रहण करते रहे. क्षेत्रीय अनाथालय एवं उनके द्वारा प्रचलित विद्यालयों में निःशुल्क शिक्षा दान एवं आर्थिक सहयोग देने का इन्हें पूरा मौका मिला. कभी गरीब विद्यार्थियों की फीस भर देना, कभी उन्हें आवश्यकतानुसार किताबें मुहैया कराना और कभी उन्हें प्रोत्साहन देकर उनकी मंजिलों तक पहुँचने की प्रेरणा देना इनका पुनीत मानवीय एवं सामाजिक दायित्व था, जिसे इन दोनों ने पूरी निष्ठा और लगन के साथ निभाया. इनके कॉलेज में बी.एड. की पढ़ाई होती थी. अतः इन्हें यादवपुर विद्यापीठ द्वारा संचालित सांध्य प्रशिक्षण महाविद्यालय में डेढ़ वर्षो की पढ़ाई के लिए भेजा गया. यादवपुर विश्वविद्यालय में १९७५ ई. में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त करते हुए सर्वोच्च स्वर्ण पदक एवं एक रजत पदक प्राप्त करते हुए बी.एड. परीक्षा इन्होंने पास की. इसी बीच कॉलेज में प्रशासनिक समस्याएं पैदा हुई और विश्वविद्यालय द्वारा पॉच वर्षो तक कार्यकारी अध्यक्ष नियुक्त किए गए. इन्होंने अपना कार्य दक्षता, ईमानदारी एवं निस्वार्थ भाव से निष्पादन किया. काफी लोकप्रियता हासिल हुई. छात्र-छात्राएं इनके अभिभाषण घंटो सुनने एवं लगातार क्लास करने के बाद भी नहीं ऊबते थे. आखिरकार अवसर ग्रहण का समय भी आया. नर्म ऑखों और द्रवित हृदयों द्वारा विदाई दी गई. यवनिका यहीं गिरी.

३७ सालों के सेवा काल से निवृत होने के बाद इन्होंने मुम्बई को अपनी कर्मभूमि चुना और वहीं रहते हुए अपनी पत्नी श्रीमती तारा सिंह द्वारा लिखित रचनाओं को प्रकाशित करवाना शुरु किया. जी-जान से कवयित्री के प्रकाशन कार्यो और भविष्य रचनाओं के लिए उपयुक्त साधन और माहौल जुटाने में लग गए. उनकी महत् साहित्य सेवा व समाज सेवा यज्ञ में ये यथासाध य अपना हाथ बंटाने लगे और यह क्रम अब इनकी जिंदगी का संकल्प बनकर रह गया है. आइये, हमलोग इनके इस यज्ञ की पूर्ण सफलता की कामना करते हुए इनके दीर्घायु होने की ईश्वर से विनती करते है.

देखिए डॉ तारा सिंह अपनी लेखनी में क्या कहती है:

यही है वह मदिरालय, जिसे ढूँढ रहा था मैं अर्सो से

जब आती है रात तब ढूँढती हूँ मैं, खोए उस सपने को
जिसने अंधेरे में मेरा हाथ पकड़कर कहा था मुझसे
यही वह मदिरालय जिसे ढूँढ रहा था मैं अर्सो से
विधि को व्याकुल कर देनेवाली माधुरी, यही है
यहीं से उठता है, वारुणी हृदय का लाल तरंग
जो छिपे-छिपे प्राणों की सारी आग सहा करता है

यहीं से दीखता है मेरे भाग्य का सूरज और निशा का सोम
यही है वह फूल जिसके लिए ओस का ऑसू बहाता रहता व्योम
इसी वृत्त पर खिलेंगी मेरे हृदय की मुग्ध कलियॉ
यहीं हरी होंगी तप्त हवाओं में झुलसी, हृदय-कुसुम की डालियॉ
यही है वह रन खेत, जहॉ म्यान में निकलता नही असि
वीर रहता असहाय दृगों से बरसता रहता अम्बु

जगती की सुकुमार, सरल ध्वनि की छटा यही है
मिटती जहॉ लहर सरिता की गोंद में, वो उद्गम यही है
जिस कल्पना स्मृति में, भावना दृगों को मल-मलकर
लाल किए रहती है, उस कल्पना की तसवीर यही है
ऑखों की इस किरकिरी में, दर्द भले ही कम हो
मगर बेचैनी और खीझ बहुत होती है

आज भी जल उठते है, लघु जीवन के वे पल हल्के-हल्के
जिसकी आलोक छाया में बैठकर मैं सोचती हूँ
जिसके हृदय की निष्ठा इतनी कड़ी थी, कर्म से किया कैसा
आह्वान, भरी प्रेम मकरंद कली-सी प्रिया का ऐसा अपमान
जिसके लिए छिड़क रखी थी मैं, मृदु फूलों का सुंगधित घोल
उसने वासना तृप्ति को स्वर्ग बताकर मेरे दिल को दिया तोड

सोचती हूँ आज कहॉ है वह प्रेम पूर्ण हृदय का उच्छवास
जो शयन शिथिल बॉहों में भरकर, पोछा करता था
मेरा नयन नीर अधर पर अधर रखकर कहा करता था
तुम मेरे हृदय में ऐसे रहती हो, ज्यों सुरभि संग समीर
तुम ही तो मेरे स्वर्णाकांक्षा का वह प्रदीप जिसके समक्ष
मुक्तालोकित होता रहता, मेरे हृदय का रजन सीप

प्रकृति का वैभव भरा भू-खंड तुम ही हो
तुमसे है शोभित सकल सृष्टि की सौन्दर्यता
तुममें भरी हुई है नरता, मानवता का श्रेष्ठ गुण
तुमसे अलग होकर सन्यासी भी नहीं जी सकता
अब कहॉ गया वह मधु गायन और शब्दों का छंद
जो आज भी मेरे रक्त में, तप्त लहू की धारा बन
बहता रहता, कानों में बजता रहता, सन-सन-सन

किया था मैंने कैसा पाप, जो प्रभु से मिला ऐसा न्याय
कहते हैं मृत्ति साथ अग्नि स्फुर्लिंग रहता, तो फिर
जलती क्यों नहीं धधक-धधक वह आग जिसमें
भष्म हो जाता मेरा शरीर, मगर उसका ऑचल
पकड़कर मैं कर जाती, जीवन सिंधु को पार
++++++++++++++++++++++++++++++++++

संस्कृति और सम्प्रदाय

राजनीति और अर्थनीति के स्वार्थ कंदर्प से बनी
संस्कृति का मुखौटा पहने, भुजंग-सी फन फैलाए
साम्प्रदायिकता की प्रतिमाऍ, जहॉ-तहॉ रहती खड़ी
उसके विष के घातक फुंकारों को पीकर मर्माहत हो
हृदय दाह में प्रतिपल जलता, जन-मन का शरीर
मृगतृष्णा के ये पूजक मनुज नियति के विधाता बन बैठे
बतलाकर कि यही है हमारे जीवन का प्रतिनिधि

जन समुद्र को अर्थशास्त्र के शीशे में तसवीर दिखाकर
यमन प्रेत, ये निर्मम जग जीवन के मानस के स्तर-स्तर पर
अनेकों भ्रांतियॉ पैदा करते, कहते गत युग का मानस
संस्कृति का मुखौटा पहने सभ्य वेष में प्रणत तो हुआ
मगर रीढ़ पशु-मानस ही था, जो संस्कृति के संस्कारों को
व्यापक मनुष्य में ढाल न सका, मांसल समत्व भर न सका

इसलिए जन वांछित मानस के मोह, दंभ की रक्षा करने
जिससे मानवीय स्तर पर दैन्य दुख से, अखिल मुक्त हो
जग जन को अपने पैरों पर खड़े करने, जीवन का
स्वर्णिम रुपांतर करने, आभा की देही शोभा की प्रतिमा बनकर
साम्प्रदायिकता के मुखौटे में, हमारी संस्कृति ही है खड़ी
भूख-प्यास से पीड़ित भद्दी हो गई है, संस्कृति की आकृति
इसलिए हमारी संस्कृति साम्प्रदायिकता
के मुखौटे में आती, असली रुप को छिपाए रखती

कभी-कभी तो संस्कृति को लोग धर्म से जोड़ देते है
जब कि धर्म और संस्कृति दोनों बिल्कुल अलग-अलग है

धर्म आस्था और विश्वास का प्रतीक है, तो संस्कृति शतरंग प्रकाश
जो हमारे इन्द्रियों के स्वर्णिम पट को खोलकर रुप, गंध से
हमारी आत्मा को झंकत कर, स्वर्णिम भूषण पहनाती है
हमारे उर्ध्व नभ के प्रकाश को आत्मसात कर हमें जन
भू पर लाकर खड़ी करती है, हमें हमीं से पहचान कराती है

इसलिए साम्प्रदायिकता को धर्म से क्या लेना
लोग क्यों जकड़े रहते है, इस कंकाल के
तिमिर जाल में आत्म-नग्न होकर, जब कि
सम्प्रदायिकता जीवन निर्माण का विनाश रुप है
संस्कृति हमारे मन की, हमारी जाति का मनोच्छवास है
जो हमारे प्राण को उल्लास रहित होने से बचाती है
ठूंठे मन की डाली को गंध गुंजरित, रस कुसुमित करती है

आज के युग में हमारी संस्कृति पेट भरों, अमीरों
और साहूकारों का व्यसन है, आम जनता
के लिए तो प्राण रक्षा ही सबसे बड़ी चुनौती है
++++++++++++++++++++++++++++++++++

आ रहा है गॉंधी फिर से

सुनकर चीख दुखांत पीड़ित विश्व की
तरुण गिरि पर चढ़कर शंख फूँकती
चिर तृषाकुल विश्व की पीर मिटाने
गुहों में, कंदराओं में बीहड़ वनो में झेलती
सिंधु शैलेश को उल्लासित करती
हिमालय व्योम को चूमती, वो देखो!
पुरवाई आ रही है स्वर्गलोक से बहती
लहरा रही है चेतना, तृणों के मूल तक
महावाणी उत्तीर्ण हो रही है, प्रसव की पीर से
लगता है गरीबों का महीहा गाँधी
जनम ले रहा है, धरा पर फिर से
अब सबों को मिलेगा स्वर्णिम घट से
नव जीवन का जीवन-रस, एक समान
क्योंकि तेजमयी ज्योति बिछने वाली है
जलद जल बनकर भारत की भूमि पर
जिसके चरण पवित्र से संगम होकर
धरती होगी हरी, नीलकमल खिलेंगे फिर से
अब नहीं होगा खारा सिंधु, मानव वंश के अश्रु से
क्योंकि रजन तरी पर चढ़कर, आ रही है आशा
विश्व-मानव के हृदय-गृह को, आलोकित करने नभ से
अब गूँजने लगा है उसका निर्घोष, लोक-गर्जन में
विद्युत बन चमकने लगा है, जन-जन के मन में।

आज का कश्मीर

दुनिया का स्वर्ग कहा जाने वाला कश्मीर
आज व्यापक मनुष्यत्व से वंचित, विकास में
सीमित, जाति-धर्म-वर्ग से है पीड़ित
यहाँ पसरा हुआ है आतंक का गहरा बादल
क्षोभ, शोषण, भ्रम की कालिमा में
डूब गया है, दुर्गेय दया की भूखी चितवन
नव प्रकाश में तमस युगों का करके आयोजन
कहती, अमूर्त जीवन विकास होना, अब है निश्चित
कहा करते थे, जो स्नेह मानव का आभूषण है
स्नेह है जीवन का सार, आज वे ही कहते है
आग से आग बनकर मिलो, पानी से पानी
गरल का उत्तर गरल है, ईंट का जवाब पत्थर
मुड़कर मत देखो, कि किसके लहू से लाल
हुई यहाँ की जमीं, किसकी जवानी लूटी गई
कौन अपने मॉंग का सिंदूर मल-मलकर धो रही
किस मॉं का लाल चिता पर जल रहा, कौन है
वह अभागा पिता जो, छाती-कपाल पीट रहा
घाटी के कोने-कोने में काल जाल-सा
मानव निर्मित अंधियाली रहती छाई हुई
देखकर धरती पर रुधिर कीच
वायु डोलता मलिन होकर, संध्या रहती उदासीन दुखी
अकथनीय विवशता लोगों की शुष्का ऑंखों में
तैरती रहतीं, अधरों पर पीड़ा नीरव रोदन करती
हृदय क्षितिज रहता तिमिरांकित, भृकुटी रहती चिंतित
प्रकृति धाम कहीं जाने वाली यह पुण्यभूमि
आज मानाव शोणित से हो रही रंजित
तोपों के गर्जन, बमों की गड़-गड़ाहट से
तृण-तरु कॉंप रहे, खग-वृन्द रहते आतंकित
विमानों से पुष्प नहीं, गिरते हैं बम-गोले
चटक-चटककर, पिघल-पिघलकर मानव
तन की हाड़-मज्जाएं वाष्प बन उड़े जा रहे
युगों-युगों से जिस भूमि पर, प्रकृति राशि-राशि
कर अपने रुप-रंग को करती आई निछावर
वहाँ मौत मना रही है, विनाश शताब्दी
प्रेत कर रहा है ताण्डव, खग रोते है तरुओं में
छुप-छुपकर, कंदर्प संग लिपटी रोती अनाथ
दूधमुँही, भारत के अंचल में लेटकर कश्मीर रोता
राम चरित मानस में छुपकर, सीता रोती आज
दशरथ के अयोध्या की कितनी दयनीय स्थिति

चिंतन की शैयया पर लेटकर जन मानस सोचता
युग स्थितियों से प्रेरित होकर, जाति-वर्ण
रूढ़ियों, आचारों को छिन्न करने नव चेतना से
मंडित होकर नई आत्मा वाला मनुज, एक दिन
सूरज बनकर, घाटी के क्षितिज पर उदय होगा
तब नव दूर्बा के हरे प्ररोहों से, घाटी फिर से
होगी मनोहर, सूरज फिर फैलाएगा उज्जवल प्रकाश
सौरभ सुगंध भरी होगी चिनाब, झेलम जल
ज्योत्सना होगी शीतल, फिर से लौटकर
आयेगा प्रेम, दया, सहृदयता, शील, क्षमा
और तप, संयम, सहिष्णुता, रजत-स्वर्ण
में अंकित अप्सरा सी घाटी लगेगी फिर से सुंदर

ग़ज़ल

अरमां है, तुम्हारे दर्दे-गम की दवा हो जाऊँ
कभी फूल, कभी शोला, कभी शबनम हो जाऊँ
तुम्हारी ऑखों में रचूँ-बसूँ, तुम्हारे दिल में रहूँ
तुमसे दूर होने की सोचूँ, तो तनहा हो जाऊँ।
तुम अब यह न कहना कि अधूरा हूँ मैं
मुझे बॉहों में भरो, तमन्ना करो कि, मैं पूरा हो जाऊँ
हर मुहब्बत दुलहन बने, जरुरी तो नहीं
इश्क इबादत है मेरी कैसे मैं, खुदा हो जाऊँ
मुझसे हॅस-हॅस के लोग पूछते है नाम तुम्हारा
खुदा का नाम बता दूँ और रुसवा हो जाऊँ
तुम्हारा प्यार समंदर है डूबी जा रही हूँ मैं
रोक लो मुझको इससे पहले मैं फ़ना हो जाऊँ
तुम मेरी जान हो, जहर दे दो, मगर यह न कहो
यह कैसी बात है तुम्हारी बात पै गुस्सा हो जाऊँ
ग़म ने ख़ुद आके दिया है सहारा मुझको
मैंने कब मॉगा था हाथ कि मैं उसकी हो जाऊँ।

++++++++++++++++++++++++++++++++++++

ग़ज़ल

काजल जैसा जिसे रचाया दो नयनो में
ऐसे अपनापन को कहते प्यार नहीं
एक झलक पाने को नम हो जाता अन्तर
विरह वेदना है, उसका इंतजार नहीं है
ख्वाब में आना, रात बिताना इन बॉहों में
जीवन की यह सत्य कटु समाचार नहीं है
दिल देना, दिल लेना जीवन देना है
जीते मरते है प्रेमी, यह लेन देन व्यापार नहीं
दशो दिशाओं में बिखरी सुगंध तुम्हारी
भॅवरों की शैताानी कि घर में बहार नहीं है
सूरज के संग उगते फ़िजा महक जाती है
नहीं शिकायत करना मुझको प्यार नहीं है
तेरी नजर ने गोदा छूरे तन पै तेरा नाम
फिर भी कहते हो मुझ पर एतवार नहीं है
पल भी नहीं लगा तारा को गगन सौंपते
और चॉदनी कहती, कोई सरोकार नहीं है।

पत्रिका के समस्त पाठकों को हार्दिक बधाई

श्रीमती संगीता श्रीवास्तव
एडवोकेट/सदस्यःविश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान
जनपद न्यायालय, कचेहरी, इलाहाबाद, उ.प्र.
निवासः ५/६, शिवकुटी, तेलियरगंज, इलाहाबाद,
मो.: ९९३६९८३४६७२

With Best Compliment From
RAJDHANI PRESS
All Kinds of: Computer Designing, Offset Printing, Screen Printing etc.
Off:133/A/114A, Badshahi Mandi, Allahabad-211003
Mo:9335104839
Prop: Anilesh Gupta

यह कैसी श्रद्धांजलि, यह कैसा प्यार

हमारे पड़ोस में एक शख्स रहते है, काफी पढ़े-लिखे है. अच्छे घराने से ताल्लुक भी रखते है. यदा-कदा उनसे मेरी मुलाकातें हो जाया करती है. उनके नाम का रुतबा कहिये, या फिर पड़ोसी होने की वजह; मुझे भी उनसे मिलकर अच्छा लगता है. यूँ तो उम्र में वे मुझसे १०-१२ साल बड़े होगें, लेकिन जब भी हमारी बातें होती है, तो कोई किसी से बड़ा, छोटा नहीं रहता है. हॉ, एक बात का ख्याल दोनों तरफ से रहता है कि किसी भी हालात में एक दूसरे के वजूद को धक्का नहीं पहुँचे.

एक दिन उन्होंने मुझसे कहा, 'मेरे घर एक छोटी सी पुजा का आयोजन है. तुम्हारा आना मेरे लिए आवश्यक है. मैं दो रोज पहले ही तुमको बता दूंगा. जिससे ऑफिस से छुट्टी न मिलने का तुम्हारा वहाना नहीं रहेगा. ' मैंने कहा, 'आप प्यार से बुलायें और मैं नहीं आऊँ, ऐसा नहीं हो सकता. आप भरोसा रखिए, मैं अवश्य आऊँगी. समय बीतता चला गया. महीने, छः महीने हो गये लेकिन उन्होंन पूजा में आने की बात नहीं की. एक रोज मैं ही हॅसी-मजाक में बोल गई, 'आपके घर कब आना है. रोज आज, कल में बदल जाता है, लेकिन आपका बुलावा आने का इंतजार कभी खत्म नहीं होता है. क्या बात है, पूजा का प्रोग्राम रद्द कर दिये क्या?' उन्होंने कहा, 'नहीं, नहीं, असल में क्या हुआ, घर के लोग दो घंटे पहले प्रोग्राम बनाये और आनन-फानन में अनुष्ठान करना पड़ा. तुमको खबर देने की मोहलत ही नहीं मिली. मुझे माफ कर दो, अगली बार ऐसी गलती नहीं होगी.' मैंने कहा, 'ठीक है, मगर एक फोन कर देने में तो सिर्फ एक मिनट चाहिए था. आप फोन ही कर देते, मैं आ जाती. इस पर उन्होंने बार-बार क्षमा मांगी और कहा,'गलती तो मैंने सचमुच बहुत बड़ी कर डाली, लेकि तुम मुझे माफ कर दो.' मैंने भी सोचा, 'आदमी बुरा हीं, अच्छा है, तभी तो छोटी सी गलती के लिए बार-बार क्षमा मांग रहा है.

एक दिन उन्होंने मुझसे कहा, 'मेरे घर एक छोटी सी पुजा का आयोजन है. तुम्हारा आना मेरे लिए आवश्यक है. मैं दो रोज पहले ही तुमको बता दूंगा. जिससे ऑफिस से छुट्टी न मिलने का तुम्हारा वहाना नहीं रहेगा.

कुछ दिनों बाद उनके एक रिश्तेदार मेरे घर आये. उन्हेंाने बताया, 'मैं आपके पड़ोस में सुशील जी के घर एक आयोजन में आया हुआ था. आपको सुशील जी से रास्तें में मिलते-जुलते देखा. समझ गया, आप उनके दोस्त है तो सोचा, दोस्त के दोस्त से मिलता चलूँ. कल वापस लौट जा रहा हूँ.' मैंने पूछा, आपको मैंने कभी देखा नहीं, आप उनके घर कब से है? उन्होंने कहा 'यही, दस दिनों से. पूजा के चार दिन पहले ही आ गया था. पूजा खत्म हुए छः दिन बीत गये, अब लौट रहा हूँ. बाकी जितने भी लोग आए थे, सभी चले गये. मैं ही बचा हुआ हूँ. मैं आता नहीं घर पर अभी काफी व्यवस्तता चल रही थी. लेकिन उनका बार-बार फोन, फोन पर आने की जिद, मैं टाल न सका. ' सुनते ही मैं समझ गई, पूजा का आयोजन आनन-फानन में नहीं, बल्कि एक सोची-समझी, तय की तिथि के अंतर्गत ही सम्पन्न हुआ. सुशील जी, मुझसे झूठ बोले कि बुरा नही मानिए, आपको बुलाने का समय नहीं मिला. जो भी हो, सुशील जी को मैं यह बताना उचित नहीं समझी कि आप कितने झूठ का सहारा लेते है. वे अपनी मीठी बोली बोलकर कितनों को अपना मित्र बनाकर, उसके अरमानों से खेलते है. मैं तो लगभग इस दुर्घटना को भूल चुकी थी. अचानक उन्होंने, पुनः एक रोज रास्ते में मेरा हाथ अपने हाथ में लेते हुए कहा, 'मित्र! अगले महीने छः जुलाई को मेरी मॉ को स्वर्गवास हुए तीस साल हो जायेगा. मैं हर साल इस तिथि को मॉ की श्रद्धांजलि के रुप में मनाता आया हूँ. मंत्री-संत्री सभी रहेंगे. मैं चाहता हॅ तुम उसमें आओ. मैंने सोचा, लगता है इस बार ये अपनी भूल को सुध ारेंगे. इसलिए तय की हुई तिथि भी हमें बता रहे है. मैने कहा, 'ठीक', मैं अवश्य आऊॅगी.' चार तारिख को मैंने उन्हें फिर फोन किया. सोचा जान लूँ, कितने बजे आना है. फोन उनकी पत्नी ने बताया, 'महाशय, घर पर नहीं है, वे बाहर गये हुए है, दश रोज बाद लौटेगें?' मैंने कहा, 'वो उनकी मॉ की श्रद्धांजलि का अनुष्ठान जो होना था, उसका क्या हुआ?' वे बोली, 'वह तो हो गया. उनके बाहर जाने के एक दिन पहले ही, क्योंकि छः जुलाई को उनकी दीदी के बेटे की शादी है. शादी की तिथि तो बदली नहीं जा सकती, इसलिए अम्मा की श्रद्धाजंलि दो रोज पहले ही मना ली गई. मुझे बहुत दुख हुआ. समझ में नही आ रहा था कि यह शख्स जब सामने होता है तो हरिश्चन्द्र की औलाद लगता है, लेकिन यह मिरजाफर से कम नहीं है. इससे

बचकर हमें रहना होगा पता नहीं, कब, कौन सी मुसीबत इसके चलते खड़ी हो जाये.

अचानक एक दिन फिर मिले. मैं तो मुँह फेरकर निकल भागने की कोशिश में थी कि उन्होंने मेरा रास्ता रोक लिया. कहा, 'तुम बहुत नाराज हो मुझसे. होना भी चाहिए, मैं बहुत धोखेबाज हूँ. क्या करूँ नियति के आगे मेरा कुछ चलता नहीं और लोग सोचते, मैंने ऐसा जान-बुझकर किया. तुम्हारे साथ एक बार नहीं यह तो दूसरी बार हुई. मैं सामने खड़ा हूँ, मुझे जो चाहो, सजा दो. लेकिन मुझसे मुँह मत मोड़ो. मेरा दिल पिघल गया. मैंने कहा, 'वो सब तो ठीक है, लेकिन आपके साथ कोई मजबूरी आ गई थी, मुझे फोन कर देते.' उन्होंने कहा, 'फोन कहॉं से करता, मेरा सेलफोन तो चोरी हो गया है, उसमें तुम्हारा फोन नम्बर भी था' तब मैंने पूछा, 'सुशील जी! पिछले साल जो पूजा हुई थी, उसमें आपके मित्र तिवारी जी भी आये थे. उन्होने कहा, 'हॉं, वे किसी काम से मेरे घर आये थे. संयोग देखिए, उसी दिन मेरे घर पूजा थी.' मैंने कहा, 'नहीं सुशील साहब! वो तो बता रहे थे, आपने उन्हें १५ दिन पहले खत लिखा, फोन पर भी आने को बहुत आग्रह किया, तो जाकर कहीं वे आये. तो आप झूठ क्यों बोलते है? अब तो उम्र हो रही, उस मालिक के पास जाने का. जवानी भर तो झूठ बोले, अब तो सच बोलिये.

'मेरी मॉं, मुझे बहुत प्यार करती थी. मुझे भी मॉं से बहुत प्यार था. लेकिन मेरे झूठ बोलने की आदत से कभी-कभी नाराज हो जाया करती थी. कहती थी, बेटा! तुम सच क्यों नहीं बोलते? झूठ बोलना अच्छा नहीं होता. हमेशा किसी न किसी मुसीबत में बना रहता. अब तो अम्मा नहीं रही, मगर इसी बहाने सपने में आज भी मिलने आया करती है.

तपाक से सुशील जी बोल उठे, 'मेरी मॉं, मुझे बहुत प्यार करती थी. मुझे भी मॉं से बहुत प्यार था. लेकिन मेरे झूठ बोलने की आदत से कभी-कभी नाराज हो जाया करती थी. कहती थी, बेटा! तुम सच क्यों नहीं बोलते? झूठ बोलना अच्छा नहीं होता. झूठ बोलने वाला इनसान, हमेशा किसी न किसी मुसीबत में बना रहता. अब तो अम्मा नहीं रही, मगर सपने में आज भी मुझसे मिलने आया करती है.' मैंने कहा, 'आपको जब मॉं से इतना प्यार है, तो उनके दिल की जो सबसे बड़ी ख्वाहिश थी, उसे पूरा क्यों नहीं करते? मॉं को आपकी सबसे बड़ी श्रद्धाजंलि यही होगी कि आप सच बोले. नहीं तो उनका आत्मा पुत्र की चिंता में भटकती रह जायेगी.' सुनते ही उन्होंने कहा-'मैं दुनिया छोड़ सकता हूँ, लेकिन झूठ बोलना नंही छोड़ सकता क्योंकि जब तक झूठ बोलता रहूंगा, तभी तक मेरी मॉं सच बोलने की जिद्द लेकर मुझसे मिलने मेरे सपने में आती रहेगी. अगर मैने सच बोलना शुरु किया तो मॉं मेरी तरफ से निश्चित हो जायेगी. फिर कभी मिलने नहीं आएगी. अब तुम्ही बताओं कि मुझे सच बोलना चाहिए या झूठ. जब कि किसी भी कीमत पर मुझे चाहिए. मॉं को देखे बिना, मैं जी नहीं सकूंगा' उनके इस दर्द को मैं समझ पा रही थी, क्या जवाब दूँ कि अनचाहे मुँह से निकल गया झूठ. 'यह कैसी श्रद्धांजलि, यह कैसा प्यार'

::

पत्रिका के 90वें अंक के प्रकाशन पर समस्त पाठकों को हार्दिक बधाई

ANMOL™ The Right Bite

खाओं दिल खोल के
बिस्कुट अनमोल के

सुपर स्टाकिस्टः बाबूजी इण्टर प्राइजेज

185/20, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद, 0532-2414734, 9415254264,

Manufactors: Anmol Bakers Pvt. Ltd. Office: B-2 & 3, Sector-16, Noida, U.P

मैं, पिताश्री और आलम

स्वाभाविक बच्चों की तरह मैं भी जब मुँह खोली, पहला शब्द 'दा' बोली. जैसा कि पिताजी स्वर्गवासी होने से महज दस रोज पहले,, बड़े ही चाव से मुझे अपने पास बिठाकर मुझसे बता रहे थे. लगता था, शायद यही कहानी शेष बची हुई थी, जिसे बताना वे भूल गये थे या फिर गृहस्थी की व्यवस्ता वश कह न पाए थे. उनका एक-एक शब्द मुझे स्वर्ग सुख-सा अनुभव हो रहा था और पिताश्री स्वर्गगामी मुसाफिर स्वरुप दीख रहे थे. उन्होंने मेरी ठोढ़ी पर कटे दाग को दिखाते हुए कहा, तारा! जब तुम बच्ची थी, दादी की गोद में चढ़ने की जल्दीबाजी में गिर गई थी. तभी तुम्हारी यह ठोढ़ी कट गई थी. दुख तो परिवार के सभी लोगों को हुआ था, पर आलम रो पड़ा था. जानती हो क्यों? तुमने जब पहली बार मुँह खोला, तो 'दा' का उच्चारण किया था जिसे सुनकर आलम (जो पिताजी के चाचा के उम्र का था) बहुत खुश हुआ था. कहता था, 'इसने पहली आवाज दी. तभी से वह तुम्हारी छोटी-छोटी सुविधाओं का ध्यान रखता था. यहॉ तक कि जब तुमको नीदं नहीं आती थी, तो गोद में लेकर, अंधरिया रात में गॉव में चक्कर लगा देता था. जब तुम उसके कंधे से लगकर सो जाती थी, तब वह घर आकर तुमको मॉ के साथ सुलाकर खाना खाने जाता था. इसलिए वह रात को देर से सोता था. चूँकि हमलोग गृहस्थ आदमी ठहरे, इसलिए उसे तड़के उठकर बैलों को खिलाना पड़ता था और सुबह सात बजते-बजते खेत पर हल जोतने चला जाता था. जब धान बोआई का समय रहता था, चारो तरफ पानी ही पानी होता था. गॉव में बॉढ आ जाती थी, तब भी आलम एक काम नहीं भूलता था, वह था, धान के खेत से एक छोटी-सी मछली को पकड़कर लम्बे दूब के सहारे हल से लटकाते हुए घर आना. तुम भी उसके आने का इन्तजार में दरवो पर ही बैठी रहती थी. आलम को देखकर, तुम इतना खुश होती थी, मानो दिन भर के बिछुड़ने के बाद किसी बच्चे को मॉ मिली हो. आलम थका-हारा होकर भी कभी हमलोगों ने उसे क्लांत मन नहीं देखा. तुमको पाते ही गोद में उठा लेता था, फिर कुएं पर जाकर, तुमको खड़ा कर, अपना पाव-हाथ (मिट्टी से सना) धोकर तुमको गोद में लिए ऑगन में आता था. मछी को साफकर, उसमें नमक भरकर, दादी के अलाव पर पकाता था. फिर तुमकों गोद में लेकर बहला-बहलाकर खिलाता था. धीरे-धीरे तुम बड़ी होती गई और आलम बूढ़ा. जब तुम होस्टल पढ़ने चली गई, एक दिन आलम बहुत उदास मन होकर मेरे पास आकर खड़ा हुआ. मुझे लगा कि आज कोई बड़ी घटना घर में घटी है या फिर घटने वाली है अन्यथा आलम मेरे पास खड़ा क्यों है? मैने पूछा, 'चाचा! क्या हुआ?' सुनते ही, उसकी आंखों में ऑसू ढलक गए. हाथ जोड़कर, बड़ी ही नम्रता के साथ कहा, 'मालिक! जब तक शरीर में जोश रहा, बल रहा, आपकी सेवा की. अब वो बल नहीं है कि मैं आप लोगों की सेवा कर सकूँ. थोड़ा बहुत जो हिलने-डुलके लायक हूँ, सोचता हूँ, अब उस मालिक की सेवा में लगा दूँ जिसने मुझे मनुष्य योनि में जनम देकर आप जैसा मालिक दिया. पहले तो उसके ये विचार मुझे अच्छे नहीं लगे. इसलिए कि बुढ़ापे में जब उसको हमारी जरुरत है, तब वह अकेला कहॉ भटकता फिरेगा? यही रहेगा. कम से कम दरवाजे की रखवाली तो होगी. लेकिन उसकी जिद के सामने मैं हार गया और एक दिन बिना किसी को बताए वह घर से निकल गया. शाम तक वापस नहीं आया तो हमलोग उसके घर तक ढूढने गए, पर वह वहॉ भी नहीं मिला. फिर याद आई, उसने कहा था, 'अब उस मालिक की सेवा में जाना चाहता हूँ.' एक दिन किसी ने बताया कि आलम दूर के एक गॉव के मंदिर में पुजारी बनकर रहता है. मैं उसे ढूंढते-ढूँढते उस गॉव के मंदिर में पहुँचा. आलम तो नही था, लेकिन और साधुओं से यह पता चल गया कि आलम उसी मंदिर में पूजा-पाठ करता है. वह अभी भिक्षाटन पर निकला है. बाबूजी भिक्षा मॉगने की बात कहते-कहते रोने लगे थे. मैंने उन्हें बहुत समझाया, उनके बहते ऑसुओं को पोछकर आगे बताने का आग्रह किया. फिर उन्होंने अपने आप को संभाला. आगे उन्होंने बताया, मैं घर आया, तुम्हारी मॉ से सब कुछ ज्यों का त्यों बता दिया. जानती हो, रात भर हम लोग सोये नहीं. आलम दूसरे के द्वार पर भिक्षा मॉगने जाये, मेरे रहते ऐसा नहीं हो सकता है. फिर मैंने बैलगाड़ी तैयार

तारा! जब तुम बच्ची थी, दादी की गोद में चढ़ने की जल्दीबाजी में गिर गई थी. तभी तुम्हारी यह ठोढ़ी कट गई थी. दुख तो परिवार के सभी लोगों को हुआ था, पर आलम रो पड़ा था. जानती हो क्यों? तुमने जब पहली बार मुँह खोला, तो 'दा' का उच्चारण किया था

करवाया.
सभी तरह के अनाज के बोरे लदवाए. कपड़े, बाल्टी, अगरबत्ती, धूप-दीप, घी, अक्षत और दो हजार रुपये लेकर मंदिर पहुँचा. संयोगवश आलम वहीं था. उसने मुझे देखते ही मेरे पैर छुए. उसे रोकते हुए मैंने कहा, 'आलम! तुम साधु बन चुके हो, मेरा पैर छूना अब ठीक नहीं. उसने कहा, 'आप मेरे पहले मालिक हो. मंदिर में जो बैठे है वो आपके बाद के मालिक है, इसलिए मुझे मना मत कीजिए.' पिताजी ने कहा, आलम! तुम यहाँ खुश हो, मुझे तुमसे कोई शिकायत नहीं है. मगर ५० सालों तक तुमने मेरा कहना माना, कभी ना नहीं किया. आज एक आज्ञा और देता हूँ, इसे मेरी ममता समझकर मान लो; इनकार मत करो. जो कुछ लेकर आया हूँ. तुम पूजा, पाठ करो, मुझे कोई एतराज नहीं. मगर इस उम्र में भिक्षाटन पर मत जाया करो. मैं इसी तरह तुम्हारे अंतिम समय तक तुम्हारी जरुरत की चीजें लेकर आ जाया करुंगा. आलम रोने लगा. पिताजी भी आँसू को समेटे हुए घर आ गए. लगभग दो सालों तक आलम जिंदा रहा. इस बीच, जब भी पिताजी उससे मिले, वह पूछता था, 'मालिक! तारा अब कितनी बड़ी हुई? क्या उसकी शादी के लिए लड़का ढूँढ रहे हो? उसे अच्छे घर में अच्छा वर देखकर शादी कर देना. तुमसे मेरी यही प्रार्थना है. वह मेरी बड़ी प्यारी है. उसकी याद दिल से जाती नहीं है. शायद, जायेगी भी नहीं.' आज पिताजी और आलम, दोनों में से कोई भी नहीं है, लेकिन उनकी यादें शायद मेरे दिल से कभी जुदा नहीं होगी. आज भी लगता है, पिताजी मेरे आगे बैठकर बीती कहाँनियों को बता रहे हैं. ईश्वर उन दोनों की आत्माओं को शांति दे!०

हम और हमारी हिन्दी

मुझे लिखते हुए दुख हो रहा है कि जिस हिन्दी भाषा के उत्थान एवं प्रचार के लिए केन्द्रीय सरकार की तरफ से बड़े-बड़े संस्थानों द्वारा करोड़ों रुपये पानी की तरह बहाये जा रहे है, वहीं हमारे राष्ट्रीय कार्यकर्ता हिन्दी अस्पृश्यता रोग से उतने ही ग्रस्त हैं. आज हमारे सरकारी आला नेता, सरकार और सरकारी कर्मचारी फर्राटेदार अंग्रेजी बोलना अपनी शान समझते हैं. इसमें कोई सन्देह नहीं कि वे खद्दर पहनने लगे है, पर दिल में लेशमात्र भी हिन्दी के लिए जगह नहीं. किसी सभा/समिति की बैठक में चले जाइये. वहाँ तो ऐसे लगता है, जैसे वहाँ हिन्दुस्तान के लोगों की सभा नहीं बलिक अंग्रेजों की मीटिंग चल रही हो. हिन्दी भाषाई होने के बावजूद भी हिन्दी का एक लब्ज भी व्यवहार नहीं. जो जितना फर्राटेदार अंग्रेजी बोलेगा, अपने सम्मान को छोटा करना समझते हैं. अपने बच्चों को हिन्दी नहीं, अंग्रेजी का दर्जा मिले; हिन्दुस्तानी वेश-भूषा रहे मगर दिल इंग्लिस्तानी बना रहे. पता नहीं, अँग्रेजी भाषा का यह जादू कब तक हमारे सरों पर सवार रहेगा. कब तक हम अंग्रेजी के गुलाम बने रहेंगे. इससे साफ पता चलता है कि इन साठ सालों में भी हम राष्ट्रीयता की गहराई तक नहीं पहुँच सके हैं.
हमारे राष्ट्र निर्माता, महात्मा गाँधी को छोड़कर हमने किसी को हिन्दी के प्रचार-प्रसार पर जोर देते नहीं सुना. जब कि यह सर्व विदित रहे, जब तक हम अपनी राष्ट्रभाषा को दिल से नहीं अपनायेंगे, तब तक भारत को एक सुदृढ़ राष्ट्र के रुप में निर्माण महज एक ख्वाब होगा. हमारे उन्नत राष्ट्र की कल्पना तभी साकार होगी, जब हम जापानियों की तरह जापानी, चीनियों की तरह चीनी अर्थात् अपने भावों को हिन्दी में प्रकट करेंगें. आप दुनिया के किसी भी उन्नतशील देश में जाकर देखिए. उनका देश इतना प्रगतिशील क्यो हैं? कारण साफ है. वे लोग अपने भावों को अपनी राष्ट्रीय भाषा में एक दूसरे से आदान-प्रदान करते है. न कि सामने वाला अंग्रेजी जाने न जाने, उसकी चिंता छोड़ हम फर्राटेदार अंग्रेजी बोलते जा रहे है. हम सोचते है, अंग्रेजी के इन लब्जों को मेरे मुँह से सुनकर वे कुछ समझे ना समझे; मैं हिन्दुस्तानी कम अंग्रेज ज्यादा हूँ. ये तो समझ ही गए होगें. भला ऐसे में हमारे देश का उत्थान कैसे हो सकता है. आप ईरान जाइए, रुस जाइये, हर देश की अपनी भाषाएं अलग-अलग है और सभी अपनी भाषा से उतना ही प्यार करते है, जितना एक शिशु अपनी माँ से.

जब तक हम सभी भारतवासी अपना भाषा के प्रति जागरुक नहीं होगें, दिल और दिमाग से नहीं अपनायेंगें, अपने जीवन का अंग नहीं समझेगे, तब तक हमारी हिन्दी भाषा ऐसे ही अपंग लड़खड़ाती, अंग्रेजी की बैसाखी के सहारे चलती रहेगी.

कितने ही सज्जन तो बड़ी शान के साथ कहते है कि हिन्दी बोलना उनके लिए थोड़ी मुश्किल होती है, पर अंग्रेजी आसान है. बड़ा से बड़ा हिन्दुस्तानी भी जब भारत-भ्रमण पर आए अंग्रजों से अंग्रेजी में बात करता है तो सुनकर दुख होता है. क्यों हनी उसे ही हिन्दी बोलने दें. जो नहीं बोल सकेगें, उनका भ्रमण अधूरा रहेगा. तभी वे अपने देश वापस लौटकर हिन्दी के बारे में सोचेंगे और दोबारा आने से पहले हिन्दी सीखकर आयेंगें. आजकल विश्व के हर देश में हिन्दी सिखाने के लिए स्कूल स्थापित किया गया है, जिससे हिन्दी प्रचार-प्रसार दूसरे देशों में बढें. खैर ॲग्रेजों से अंग्रेजी में बात करना किसी हद तक क्षम्य हो सकता है, लेकिन जब दो हिन्दुस्तानी ही आपस में अंग्रेजी में बात करे, तब भी क्या यह क्षम्य होगा? नहीं, कभी नहीं.

अगर कोई हिन्दुस्तानी हिन्दी लब्ज व्यवहार करने से हिचकिचाता है या इसमें अपना असम्मान बोध करता है तो उन्हें हिन्दुस्तान में रहने का हक नहीं मिलना चाहिए. बल्कि अच्छा हो कि वे अंग्रेजों के देश में जाकर बस जायें और वहीं अपनी अंग्रेजी झाड़ते रहे. हिन्दी हमारी मातृभाषा है. अपनी मातृभाषा में दिल के भाव को प्रकट करना सहज होता है. इसलिए हमें यह नहीं भूलना चाहिए-

हिन्दी है हम, हिंदोस्ता हमारा.

::

आलेखः डॉ. तारा

संस्कृति और सम्प्रदाय

तुम बडे न, हम बड़े; तुमसे हमारी कमीज अधिक सफेद! बस इसी होड़ में, हम अपनी संस्कृति को भूल गये है. जब कि में मालूम होना चाहिए, साम्प्रदायिकता की जननी सदैव से संस्कृति रही है. हिन्दू अपनी संस्कृति को कयामत तक सुरक्षित रखना चाहता है और मुसलमान अपनी संस्कृति को. मगर वे इन खोखले विश्वास में ये भूल गए हैं कि दरअसल आज के युग में आर्थिक संस्कृति को छोड़कर हमारे दोनों ही समुदायों के समाज के लिए और कोई संस्कृति है ही नहीं. जब कि संस्कृति का धर्म से कुछ लेना देना नहीं. धर्म अलग है और संस्कृति अलग. ऐसे भी हमारी संस्कृति आपस में लगभग एक जैसी है. सिर्फ निभाने के तरीके अलग है. हिन्दू की संस्कृति में मूर्ति-पूजन है, तभी तो मस्जिद को खुदा का घर समझते है और वहॉ जाकर अपनी श्रद्धा नवाज़ के रुप में यापन करते है. हमारे खान-पान, भाषा-बोली, मिलना-जुलना, सभी एक जैसे है. दोनों ही समाज की औरतें पति को ईश्वर का दर्जा दी हुई है. हिन्दू बच्चें की तरह मुसलमान के बच्चे भी मॉ को अम्मा, पिता को बाबू कहकर पुकारते है. हिन्दु और मुसलमान पुरुष दोनों ही अपने सर पर पगड़ी बॉधते है. फर्क इतना है कि मुसलमान इसे कुलाह कहते है. दाढ़ी रखने की बात जहॉ तक है, मुसलमानों की तरह हिन्दू भी रखते है. मुसलमान मांस खाते हैं तो हिन्दू भी मांसाहारी होते है. ८० फीसदी हिन्दू मांस खाते है. शराब की बात कीजिए तो ये दोनों ही समा के उच्च दर्जे के लोगों तक ही सीमित है. आम आदमी के पास पेट भरने के लिए रोटी नहीं, शराब कहॉ पायेंगें. इस तरह कुछ आदतें हिन्दू हो या मुसलमान, उसकी आर्थिक स्थिति पर निर्भर करती है जो कि न उनकी संस्कृति है, न ही धर्म. यह एक दिखावा है, स्वभाव है एवं उच्च श्रेणी की देन है. संगीत और चित्रकला संस्कृति के अंग है. लेकिन यहॉ भी दोनों समाज की संस्कृतियों में भेद नहीं है. जो राग-रागिनियॉ मुसलमान गाते है, वही तो हिन्दू गाते है. मुगलकालीन चित्र कलाओं से हिन्दू भी उतना ही प्रेम रखते है, जितना कि मुसलमान. बावजूद हम दोनों समाज में वह प्रीति-एकता नहीं आई है. हम क्यों एक दूसरे से मुॅह फेरे रहते है? किस संस्कृति की रक्षा के लिए हम रोज खुद को कुरबान होते है और क्यों हम चिल्लाते है कि हमारी संस्कृति खतरे में है, इसे बचाओं.

धर्म अलग है और संस्कृति अलग. ऐसे भी हमारी संस्कृति आपस में लगभग एक जैसी है. सिर्फ निभाने के तरीके अलग है. हिन्दू की संस्कृति में मूर्ति-पूजन है, तभी तो मस्जिद को खुदा का घर समझते है और वहॉ जाकर अपनी श्रद्धा नवाज़ के रुप में यापन करते है.

अगर आगे आकर समाज के लिए कुछ करने की ठानी है तो उन्हें रोटी दो, जिसके पेट में दाना नहीं है. उनके बच्चों को शिक्षा दों. जो रास्ते पर पशुओं के बच्चों की तरह धूप-वर्षा में नंग-धड़ंग भटकते-फिरते है. उन मॉ-बहनों को तन ढकने के लिए कपड़े दो, जो हमारे समाज की लज्जा हैं. इन तीनों बातों के अलावा और

हमारी कोई संस्कृति नहीं है. जो लोग संस्कृति की दुहाई देकर धर्म से जोड़कर दंगे फैलाते है, ईश्वर हमारे समाज को इन दरिंदो से बचाये और उन्हें सदबुद्धि प्रदान करे, उन्हें बताये कि संस्कृति हमारी सभ्यता का प्रतीक है, न कि ध र्म का. बिहाार के आरा जिले में खुदाई के उपरान्त जो प्राचीनतम अवशेष मिले है, वे हरप्पा और मोहन जोदड़ों से भी अधिक प्राचीनतम है. वहाँ से मिले अस्तित्व अवशेषों से पता चलता है कि आरा के निर्माण में जैन धर्म, इस्लाम धर्म और हिन्दू धर्म, सभी का बराबर योगदान रहा है.

अपनी संस्कृति मानना, या न मानना व्यक्ति विशेष पर निर्भर करता है. मध ययुगीन मीरा ने सामंतवादी परिवेश के विरुद्ध उद्‌घोष किया. उन्होंने युग की प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना दृढ़ता पूर्वक करते हुए जाति-पॉति, राजा-रंक का भेदभाव भुलाकर सामंती परिवेश को नकारते हुए चित्तौड़ का परित्याग किया और साधु-संतो के बीच भजन-कीर्तन में मीरा ने अपनी संस्कृति को ढूंढा. मीरा के युग में भारतीय हिन्दू समाज में सती एवं जौहर जैसी कुप्रथाओं से जूझ रहा था. सत्ती होना न केवल स्त्री के लिए बल्कि परिजनों के लिए भी गौरव की बात मानी जाती थी तथा मृत्यु पश्चात उस स्त्री को देवी का स्थान दिया जाता था. मीरा ने इस जघंन्य कुप्रथा को अपने पति राजा भोज के मृत्यु उपरांत ठुकरा दिया. उन्होंने कहा-*भजन करस्यां, सती ना होस्यां, मन मोहम्यों घण नामी मीरा के रंग लग्यो, हरी की ओर रंग सब अटक पड़ी*
गिरिधर गास्यां, सति ना होस्यां, मन मोहम्यों घण

यह आवश्यक नहीं कि सदियों से चली आ रही हमारी संस्कृतियॉ हमारे लिए सदैव लाभप्रद हो, मंगलमय हो. युग विचार के अनुसार इसमें बदलाव लाते रहना आवश्यक है. आज के युग की जरुरत है, हम हिन्दू-मुसलमान मिल जुल कर रहे. संस्कृति को आढ़ लेकर साम्प्रदायिकता को जन्म न दें बल्कि हमारे समाज की बुनियादी जरुरतें क्या है, उस ओर ध्यान दें. जिससे हमारा देश आगे बढ़ सके, धनधान्य से परिपूर्ण रह सके. कोई भूखा ना सोये, न ही दवा के अभाव में कोई मरे. यही हमारी असल संस्कृति है और यही हमारा मानव धर्म भी है.

काव्यसंग्रह, निबंधसंग्रह,लघु कथा संग्रह व कहॉनी संग्रह हेतू रचनाएं आमंत्रित है

काव्य संग्रह हेतु-कवियों से दो रचनाएं, सचित्र जीवन परिचय तथा १००/-रुपये,
अथवा दस रचनाएं, सचित्र जीवन परिचय तथा ५००/-रुपये

निबध संग्रह हेतु-दो निबंध, अधिकतम पांच सौ शब्द, सचित्र जीवन परिचय सहित २५०/-रुपये
अथवा पॉच लेख, अधिकतम पांच सौ शब्द, सचित्र जीवन परिचय सहित १०००/-रुपये

लघु कथा संग्रह हेतु-दो लघु कथांए, अधिकतम दो सौ शब्द, सहयोग राशि २५०/-रुपये
अथवा पॉच लघु कथांए, अधिकतम दो सौ शब्द, सहयोग राशि ५००/-रुपये

कहानी संग्रह हेतु -एक कहानी, अधिकतम पॉच सौ शब्द, सचित्र जीवन परिचय तथा सहयोग राशि २५०/-रुपये
अथवा तीन कहानी, अधिकतम पॉच सौ शब्द, सचित्र जीवन परिचय तथा सहयोग राशि ५००/-रुपये

प्रेषण की अंतिम तिथिः ३० मार्च २००८

के साथ आमंत्रित है. अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए जवाबी टिकट लगे लिफाफे के साथ लिखें/भेजें-आप अपनी सहयोग राशि यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की किसी शाखा में खाता सं०:एस.बी. ५३८७०२०१०००६२५६ में भी जमा कर सकते है

प्रसार सचिव,
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी–93,नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद **कानाफुसीः** 9335155949

इफको

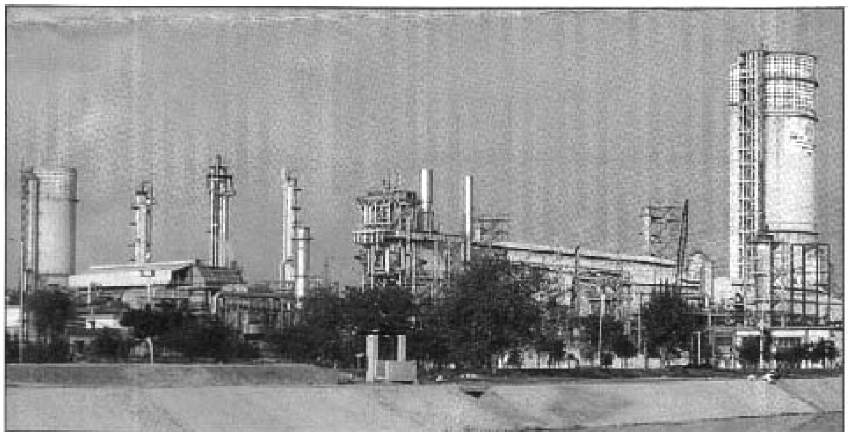

- नाइट्रोजिनस एवं फास्फोरिक उर्वरकों के उत्पादन एवं विपणन के क्षेत्र में विश्व की अग्रणी संस्था बन कर उभरी।
- ग्रामीण समुदाय की सेवा की दृष्टि से इफको–टोकियो जनरल इंश्योरेन्स कम्पनी लिमिटेड की स्थापना।
- एक संयुक्त विशाल उर्वरक परियोजना **'ओम इफको'** की कमीशनिंग ओमान में जुलाई 2005 में सफलतापूर्वक पूरी की गयी तथा निरंतर उत्पादन जारी है।
- पारादीप उड़ीसा में इफको ने फास्फोरिक एसिड संयंत्र के साथ विश्व की विशालतम (19.2 लाख टन क्षमता) डीएपी एवं एनपीके काम्पलेक्स का अधिग्रहण किया एवं इस समय पूर्ण उत्पादन क्षमता में है।
- एक विशाल पावर परियोजना इफको छत्तीसगढ़ पावर प्रोजेक्ट आई सी पी एल छत्तीसगढ़ के अम्बिकापुर जिलें में रु0 4500 करोड़ की लागत से आरम्भ किया जा रहा है।
- आंध्रप्रदेश के नेल्लूर में इफको **किसान विशेष आर्थिक क्षेत्र SEZ** की स्थापना करने जा रही है। जिसके लिए वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार ने पहले ही स्वीकृति दे दी है। किसानों की सेवा के लिए बहु आयामी किसान सेज कार्यक्रम में पहले फूड प्रोसेसिंग एवं कृषि आधारित उद्योगों को अपनाया जाएगा।
- जोर्डन के इसीदिया माइन्स में फास्फोरिक एसिड संयंत्र लगाने के लिए जार्डन फोस्फेट माइन्स कम्पनी के साथ संयुक्त उद्यम के लिए इफको ने एग्रीमेंन्ट किया है, इससे किसानों को डीएपी/एनपीके के आपूर्ति में मदद होगी।
- उर्वरक क्षेत्र में प्राप्त की गई उपलब्धियों के लिए उर्जा संवर्धन दिवस 4 दिसम्बर 2007 को नई दिल्ली में ब्यूरो आफ इनर्जी एफीसिएन्सी विद्युत मंत्रालय भारत सरकार से राष्ट्रीय उर्जा संवर्धन का **प्रथम पुरस्कार** इफको फूलपुर इकाई–। एवं **द्वितीय पुरस्कार** इफको फूलपुर ईकाई–।। को महामहिम राष्ट्रपति द्वारा प्रदान किया गया।
- इफको फूलपुर इकाई–। ने नाइट्रोजिनस उर्वरक क्षेत्र में फर्टिलाइजर एसोसिएशन आफ इन्डिया से समग्र श्रेष्ठ उत्पादन निष्पादन हेतु प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। यह अवार्ड माननीय केन्द्रीय उर्वरक एंव रसायन मंत्री ने 05 दिसम्बर 2007 को नई दिल्ली में प्रदान किया था।

इंडियन फारमर्स फर्टिलाइजर कोआपरेटिव लिमिटेड

फूलपुर इकाई, पोस्ट–घियानगर, जिला–इलाहाबाद–212404
फोन (05332)251334, 251250, 251251, (0532)2609213
फैक्स (05332)251332, 251253 ई–मेल **phulpur@iffco.nic.in Website- www.iffco.nic.in**

विकास का योग इफको उर्वरक का प्रयोग

पत्रिका के समस्त पाठकों को हार्दिक बधाई

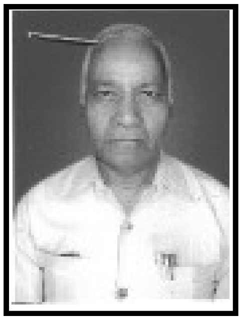

हेम चन्द्र श्रीवास्तव

उपाध्यक्ष, उ.प्र.
अखिल भारतीय राजीव गाँधी बिग्रेड एवं
सदस्य-जिला अपराध निरोधक समिति, इलाहाबाद
आवासः ५/७-८२६, शिवकुटी, इलाहाबाद
मो.: ९३३५१६३२९०,9936678180

Reco. By. U.P.Government

With Complement From :

Kishore Girls Inter College & Convent School

Nursery to Class XIIth

- Education by experienced Teachers
- Good Atomosphere For Education
- Limited Students in every Class

Manager
V.N.Sahu

Cont.: 82/102, Meera Patti, T.P. Nagar,
G.T. Road, Allahabad

पत्रिका के समस्त पाठकों को हार्दिक बधाई

श्रीमती सोशन एलिजाबेथ

महासचिव/समाज सेवी
द स्कूल होम फॉर द ब्लाइण्ड
(अंधा खाना, नैनी)
नैनी सेण्ट्रल जेल के पास, जेल रोड पावर
हाउस, मिर्जापुर रोड, नैनी, इलाहाबाद
मो0:9415347555

पत्रिका के समस्त पाठकों को हार्दिक बधाई

रेवा नन्दन द्विवेदी

(सिविल इंजीनियर)संयुक्त सचिव
द स्कूल होम फॉर द ब्लाइण्ड
(अंधा खाना, नैनी)
नैनी सेण्ट्रल जेल के पास, जेल रोड पावर हाउस,
मिर्जापुर रोड, नैनी, इलाहाबाद, मो0:9415347555

फोटोः ३

फोटो:४

प्रिय भैया/बहिनों
आप लोगों को कहॉनी तो अच्छी लगती ही होगी. आइए इस बार लौट आओ दादी कहानी पढ़ाती हूँ.

आपकी बहन
संस्कृति 'गोकुल'

लौट आओ दादी

डॉ0 रवि शर्मा, नई दिल्ली

"सार्थक बेटा, लेटकर नहीं पढ़ते, कितनी बार समझाया है, मगर तुम्हें समझ ही नहीं आती." दादी ने सार्थक को टोका. सार्थक को बुरा लगा. दादी हर समय टोकती ही क्यों है? उसने सोचा. 'सार्थक, रात में बाहर न जाओ. सार्थक, इतना टी. वी. न देखो, ऑखें खराब जाएँगी. सार्थक, चबा-चबाकर खाना खाओ' आदि. दादी की हर समय की टोका-टोकी सार्थक को अच्छी नहीं लगती थी. उसने एक-दो बार विरोधा भी किया, किंतु उसके मम्मी-पापा ने उसे प्यार से समझा बुझाकर चुप करा दिया, मगर एक दिन तो हद ही हो गई. सार्थक ने परीक्षा समाप्त होने पर अपने दोस्तों को घर बुलाया था. वह ऊँची आवाज़ में गाने चलाकर अपने दोस्तों के साथ नाच रहा था. उसी समय अचानक दादी ने आकर स्टीरियों बंद कर दिया और गुस्से से बोली, "...तुम्हें शर्म नहीं आती? पड़ोसी के घर में जवान मौत हो गई है और तुम खुशी से नाच-गा रहे हो?" सार्थक के दोस्त तुरंत चले गए. उसने अपने-आप को कभी इतना अपमानित महसूस नहीं किया था. अपमान मनुष्य को क्रोधी बना देता है और क्रोध हठ को जन्म देता है. हठ और वह भी बालहठ-भगवान बचाए. सार्थक अपमान का घूँट पीकर रह गया.

रात में सार्थक ने मन ही मन निश्चय किया कि वह गॉधीवादी तरीके से दादी के विरुद्ध आंदोलन करेगा. अगले दिन से ही उसने खाना आधा कर दिया तथा दूध पीना बिल्कुल छोड़ दिया. मॉ ने कारण पूछा, मगर सार्थक चुप रहा. उसकी मॉ बहुत चिंतित हुई. मॉ ने सार्थक के पापा को बताया. सार्थक के पापा एक बड़ी संस्था में इजीनियर थे. सार्थक उनका इकलौता बेटा था. उसकी खुशी के लिए वे कुछ भी कर सकते थे. वे चाहते थे कि सार्थक सदा प्रसन्न, हॅसमुख तथा उल्लसित रहे. सार्थक की उदासी, परेशानी और बुझा हुआ चेहरा उन्हें बिल्कुल पसंद नही था. उन्होंने सार्थक से बात की. उसकी परेशानी का कारण जानना चाहा. सार्थक टालता रहा. वह जानता था कि पापा उसकी यह बात कभी नही मानेंगे. बहुत पूछने पर सार्थक ने बताया कि वह दादी के साथ इस घर में नहीं रह सकता. दादी की बात-बात पर टोकने की आदत उसे बिल्कुल पसंद नहीं है. यह सुनकर सार्थक के पापा अवाक् रह गए. उन्हें सार्थक से ऐसी आशा नहीं थी. एक ओर अपनी बूढ़ी मॉ के प्रति प्रेम तथा कर्त्तव्य भावना, दूसरी ओर बेटे का बालहठ. सार्थक के पापा अजीब दुविधा में फॅस गए. न वे मॉ को कहीं भेज सकते थे, न अपने इकलौते बेटे को. उन्होंने सार्थक की मॉ से बात की. दोनों ने उसे समझाने की बहुत कोशिश की, मगर सार्थक के कान पर जूँ न रेंगी. वह अपने निश्चय से टस-से-मस न हुआ.

अगले रविवार सुबह सार्थक ने देखा कि मम्मी-पापा दादी का सामान बॉधा रहे हैं. उसे आश्चर्य हुआ और संतोष भी. 'चलो दादी से छुटकारा मिला. रोज़-रोज़ की टोका-टोकी से पिंड छूटा.' सार्थक ने सोचा. ऊपर से उदास दिखते हुए उसने दादी के पॉव छूए तथा उन्हें रुकने के लिए कहा, मगर अंदर से डर रहा था कि कहीं दादी सचमुच ही न रुक जाएँ. कुछ घंटे में पापा लौटे. उन्होंने बताया कि वे उसकी दादी को शहर से दूर बने एक वृद्धाश्रम में छोड़ आए हैं, जहॉ उनके सुख से रहने तथा खाने-पीने का प्रबंध है. सार्थक अपने आंदोलन की विजय पर खुश हुआ, चलो सॉप भी मर गया और लाठी भी नहीं टूटी. वह दिन भर इधर-उधर उछलता-कूदता रहा. आज वह अपने को स्वच्छंद महसूस कर रहा था. दिन न जाने कब बीत गया. रात आ गई. वह आदत के अनुसार दादी के कमरे में सोने चला गया. रोज रात को जब तक दादी उसे कोई कहानी न सुनाती, सार्थक को नींद ही नहीं आती थी. किंतु आज कमरा खाली था. दादी वहॉ नहीं थी. वह अनमने मन से बिस्तर पर लेट गया.

सार्थक को नींद नहीं आ रही थी. पिछले कई वर्षो की स्मृतियॉ एक-एक करके चित्र के समान उसकी ऑखों

के आगे आने लगी. कैसे दादी ने बचपन से उसे अपनी गोद में खिलाया था. रोज उसे नई कहानी सुनाती थी. मम्मी-पापा को डॉट देती-'खबरदार, जो मेरे पोते को किसी ने कुछ कहा.' उस समय सार्थक को बड़ा मजा आता था. व्रत-त्योहार के अवसर पर दादी खास उसकी पसंद के पकवान बनाती थी और कितने प्यार से अपने हाथ से उसे खिलाती थी. गृहकार्य करने में भी उसकी मदद करती. आज दादी मॉ की एक-एक बात उसे याद आ रही थी. उसकी ऑखे भर आई. सच है, मनुष्य भी अनोखा प्राणी है, जब तक उसे कोई व्यक्ति या वस्तु मिलती रहती है, वह उसका महत्व नहीं समझता, जब वह व्यक्ति या वस्तु उससे दूर हो जाती है, तभी उसकी याद एवं उसका महत्व पता चलता है. इसीलिए तो कहते है-'वियोग प्यार की खाद है. वियोग से प्यार बढ़ता है.'

सार्थक दादी की याद में यह सब सोच ही रहा था कि उसके मन के एक कोने से आवाज आई-"यह सब तो ठीक है, मगर दादी बात-बात पर टोकती भी तो थी, 'यह करो, यह मत करो." "हॉ, टोकती तो थी, मगर क्यों? दादी जो भी बात कहती थी मेरे भले के लिए ही न? यदि ज्यादा टी.वी. देखने से मेरी ऑखें खराब हो जाएँ, तो मुझे ही नुकसान होगा या नहीं? रात में बाहर जाने से किसी दुर्घटना का खतरा था." मन के दूसरे कोने ने जवाब दिया. "लेकिन उस दिन सब दोस्तों के सामने जो तुम्हारा अपमान किया था दादी ने, क्या वह भी तुम्हारे भले के लिए था?" मन के कोने ने फिर पूछा-"हॉ, शायद वह भी मेरे ही हित में था," सार्थक के मन के दूसरे कोने ने समझाया, "मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है. उसे केवल अपने ही नहीं, अन्य लोगों के सुख-दुःख का भी ख्याल रखना चाहिए. जरा सोचों कि पड़ोसी के घर में किसी जवान व्यक्ति की मौत हो जाए और हम खुशी मनाएँ, क्या मानवीयता के नाते यह ठीक होगा? क्या सभ्य व्यक्ति को यह शोभा देता है? दादी ने मुझे उस दिन एक सभ्य-सुसंस्कृत, सामाजिक मनुष्य बनाने के उद्देश्य से ही तो डॉटा था, किंतु अपने अहं के कारण दादी की बात को मैंने गलत समझा. मेरी वजह से ही उन्हें यह घर छोड़ना पड़ा. मैं कितना नीच एवं स्वार्थी हूँ. इस बूढ़ापे में उनकी सेवा करने की बजाए मैंने उन्हें घर से निकलवा दिया. अपने पापा के दर्द को नहीं पहचाना. कल को यदि मेरा बेटा मेरी मम्मी को घर से निकलवा दे तो? यह कल्पना करके ही सार्थक सिहर गया. नहीं, नहीं. यह नहीं हो सकता. मैं दादी को वापिस घर लाऊँगा, मैं दादी को वापिस घर लाऊँगा. मैं उनसे माफी मॉगूगा. वे मुझे जरुर माफ कर देंगी. यही सब सोचते-सोचते देर रात तक सार्थक को नींद नहीं आई. उसकी ऑखों से ऑसू बह रहे थे और ऑसुओं के साथ बह रही थी उसके मन की कडुवाहट, स्वार्थ तथा जिद. दूसरे कमरे में सार्थक के चिंतित मम्मी-पापा करवटें बदल रहे थे. उन्हें अपने लाडले बेटे के व्यवहार पर लज्जा आ रही थी. ऐसा लगता था मानो सारा घरा दादी की याद में जाग रहा हो.

रात में न जाने कब सार्थक की ऑख लग गई. उसने स्वप्न में देखा कि दादी कहीं दूर चली जा रही है. सार्थक ने पुकारा, "लौट आओ दादी. " तभी वहॉ एक राक्षस आ जाता है. राक्षस दादी को पकड़ने के लिए लपकता है. सार्थक चिल्लाता है. "दादी को बचाओ, मेरी दादी को बचाओ." उसकी चीख सुनकर उसके मम्मी-पापा वहॉ आ जाते है. वे पूछते है, "क्या बात है बेटा?" सार्थक जोर-जोर से रोने लगता है-"दादी को वापिस लाओ, दादी को वापिस लाओ. मेरी वजह से ही उन्हें कष्ट उठाने पड़ रहे है. मैं उनसे क्षमा मॉगूगा."

सार्थक के मम्मी-पापा के चेहरे खिल उठे. उन्होंने सार्थक को गोद में उठाकर चूम लिया. शाम को दादी घर में वापिस आ गई. उन्हें भी सार्थक की बहुत याद आ रही थी. घर का कोना-कोना खुशी से मुस्कराना लगा. तब पापा ने रहस्योद्घाटन किया, "मैंने सार्थक से झूठ बोला था. मॉ को मैं किसी वृद्धाश्रम में नहीं बल्कि अपने छोटे भाई के पास गॉव में छोड़कर आया था, ताकि मॉ का भी दिल बहल जाए और सार्थक को भी अकल आ जाए." सार्थक दादी के ऑचल में मुँह छिपाए सुबक रहा था. दादी उसके बालो में प्यार से हाथ फेर रही थी.

समय बहुमूल्य है, इसका भरपुर सदुपयोग करें.: दाउजी

कुछ सहयोगी साहित्यकारों के परिचय

डॉ० नरेन्द्र नाथ लाहा

जन्मः १४ मई, १९४६, आगरा, उ.प्र.
शिक्षाः एम.बी.बी.एस, एम.डी, पी.एच.डी, एम.ए.एम.एस. डी.पी.सी, डी.एस.एम.
असोसिएट प्रोफेसर पद से सेवानिवृत,
चिकित्सा पर तीन पुस्तकें प्रकाशित तथा १०० से ऊपर लेख/शोध देश की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित.
हिन्दी की विभिन्न विधाओं की १४ पुस्तकें प्रकाशित.
लेखनः हिन्दी एवं अंग्रेजी विभिन्न विधाओं में,
लघु कथाओं पर एक कैसेट, देश की विभिन्न संस्थाओं द्वारा अनेकों सम्मानों व उपाधियों से सम्मानित.
सम्पर्कः२७ ललितपुर, कॉलोनी, डॉ.पी.एन.लाहा मार्ग, ग्वालियर, म.प्र. दू०:०७५१.२३२२७७७

+++++++++++++++++++++++++

अशोक कुमार गुप्ता

पिताः स्व० अशरफी लाल गुप्त
जन्मः ०१ अक्टूबर १९६६ **शिक्षाः** इंटरमीडिएट
संप्रतिः आपरेटर, रेक्रान सिंथेटिक्स लिमिटेड, नैनी, इलाहाबाद, उ.प्र.
२००० से आकाशवाणी से रचनाएं प्रसारित
रुचियाः भोजपुरी गीत, ग़ज़ल, एवं समसामयिक रचनाएं लिखना.
सम्मानः साहित्य मेला०६,०६,०७ में प्रशस्ति पत्र
स्थाई पताः ग्राम व पो०ः बुकिया, आलापुर, अम्बेडकरनगर, उ०प्र०, २२४२२६

++++++++++++++++++++++++++++++

कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव

०६ अप्रैल को इलाहाबाद में पैदा हुए कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव की कहानीयिां, नाटक, लेख, गीत व कविताएं कई पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके है. हिन्दी साहित्य में योगदान के लिए आपको अब तक साहित्यलंकर, नजराना संस्था, विद्या वाचस्पति, सा.सं.कला संगम अकादमी, कविराज, कला भारती, साहित्यप्रकाश, साहित्य कला परिषद, कला श्री-सागर पत्रिका द्वारा, पत्रकार प्रकाश- विश्व स्नेह समाज पत्रिका, रजत पदक, प्यार और एकता क्लब, इलाहाबाद, विहिसा अलंकरण, साहित्य मेला-२००७ में प्रदान किया गया.
प्रकाशनाधीन- काव्य नवनीत, कवितासागर
संपर्कः ५/६, शिवकुटी, तेलियरगंज, इलाहाबाद
मो०ः ९९३६९८३४६७२

+++++++++++++++++++++++++++++

ईश्वर शरण शुक्ल

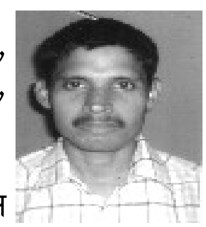

पिताः श्री टीकम दत्त शुक्ल,
स्थायी निवासः ग्राम- नत्वा गॉव, पो. गंगा जमुनी, जनपद-श्रावस्ती, उ.प्र.
शिक्षा-एम.ए. हिन्दी,
सम्प्रति-इक्जीक्यूटिव, रिलायंस इण्डस्ट्रीज, नैनी, इलाहाबाद
अन्यः १९९८ से आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से रचनाएं प्रसारित, राष्ट्र के कई समाचार पत्रों, पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित.
संयुक्त सचिवः विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद
विभिन्न संस्थाओं द्वारा अनेकों सम्मान से सम्मानित

+++++++++++++++++++++++++++++

देवेन्द्र कुमार मिश्रा

शिक्षाः एम.ए., वास्तु, एक्युप्रेशर, ज्योतिष, टंकण, स्टेनों, लेखन, पत्रकारिता, पटकथा, पत्रिका संचालन कोर्स,
जन्म तिथि- २१ मार्च १९७३
कार्यः पत्रकार, लेखक
साहित्यिकः १५ साहित्यिक पुरस्कार, ८ पुस्तक संग्रह प्रकाशित, १९९१ से सतत् कथा-कविता लेखन कार्य. पत्र-पत्रिकाओं में निरन्तर रचनायें प्रकाशित.
पताःजैन हार्ट क्लीनिक के सामने, एस.ए. एफ. क्वार्टर्स, बाबू लाइन, परासियारोड, छिन्दवाड़ा, म.प्र. ४८०००१, मो० ९४२५४०५०२२

सुनील गुप्ता 'तनहा'

०७अक्टूबर १९७९ जन्में सुनील गुप्ता 'तन्हा' की शिक्षा स्नातक तक हुई है.

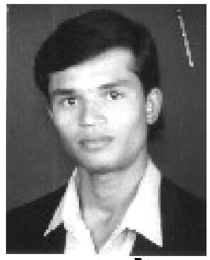

स्थाई निवासःगुप्ता पारा, वार्ड न० १५, कवर्धा, छत्तीसगढ़,
विशेषः प्रतिष्ठित पत्र पत्रिकाओं सहित ४० राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय काव्य संग्रहों में रचनाओं का प्रकाशन
विधाः गीत, व्यंग्य, कविता, ग़ज़ल
प्रकृतिः११ अखिल भारतीय काव्य संग्रहों का संपादन/प्रकाशन
१० अन्य रचनाकारों की कृतियां प्रकाशित की, ८ कृतियां को सह सम्पादन किया. विगत ६ वर्षो में राष्ट्रीय स्तर पर २०० युवा कवियों को प्रोत्साहन एवं ३०० वरिष्ठ साहित्यकारों का सम्मान, करीब ३४ सम्मानों/उपाधियों से विभिन्न संस्थाओं द्वारा सम्मानित.
संपर्कः पुष्पगंधा प्रकाशन, मॉ महामाया अनाज भंडार, राजमहल चौक, कवर्धा, छत्तीसगढ़-४९१९९५,
मो० ९८९३७४१९४४

+++++++++++++++++++++++++++++++

संजय कुमार चतुर्वेदी 'प्रदीप'

जन्मः ०१ जुलाई १९८१
पिताः स्व० कामता प्रसाद चतुर्वेदी

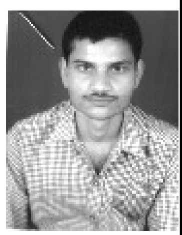

शिक्षाः परास्नातक-राजनीतिव विज्ञान, हिन्दी, पत्रकारिता प्रशिक्षण, पत्रिका संचालन पाठ्यक्रम, हिन्दी पत्रकारिता डिप्लोमा, जीवन जीने की कला, स्वस्थ रहने की कला, पत्रकारिता एवं जनसंचार विशारद,
लेखनः लेख, लघुकथा, कविता, गीत, बाल कहॉनी,.
प्रकाशनः पत्र-पत्रिकाओं में रचनाओं का प्रकाशन
सम्प्रतिः शिक्षक, पत्रकारिता व लेखन
सम्मानः युवा प्रतिभा सम्मान, विद्या वारिधि, भारती पुण्य, स्वदेश सुखद संदेश अवार्ड, काव्य श्री, जीवन साधक उपाधि.
सदस्यः रुरल हेल्थ सोसायटी, कोलकाता, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद, राष्ट्रीय हिन्दी परिषद, मेरठ, साहित्यिक, सांस्कृतिक कला संगम अकादमी, प्रतापगढ़, अखिल भारतीय वैचारिक क्रांति मंच, लखनऊ,
सम्पर्कः निमचेनी, मितौली, लखीमपुर खीरी, उ.प्र. २६२७२७
दूर००५८७५-२३०६४५, मो० ९९१८०२४२९०

+++++++++++++++++++++++++++++++

कवि विनोद भटनागर 'अलबेला'

जन्मः १२ जनवरी १९५३

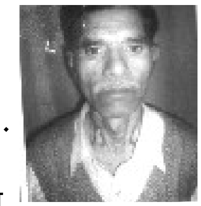

पिताः श्री सूरज प्रसाद भटनागर
शैक्षणिक योग्यताः स्नातक,
नौकरीःसेवानिवृतः म.प्र.रा.प.नि. स्टोर कीपर
सचिव, म.प्र. दलित साहित्य अकादमी,
देश की ११ संस्थाओं द्वारा विभिन्न सम्मानों से सम्मानित
पताः शान्ति नगर, साइन्स कॉलेज के पीछे, शिवपुरी, म. प्र.
दू०: ०७४९२४०७०२२

+++++++++++++++++++++++++++++++

स्वर्ग विभा वेबसाइट पर रचनाएं आमंत्रित

www.swargvibha.tk जाल पर उच्च स्तरीय, मौलिक एवं अप्रकाशित रचनाएं (कविता, गज़ल, हाइकु, गीत, लघुकथा, मुक्तक, शेर, पुस्तक समीक्षा आदि) निःशुल्क प्रकाशनार्थ सादर आमंत्रित है. यह वेबसाइट साहित्यकारों को उत्साहित करने एवं हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से, स्वर्ग विभा टीम द्वारा डॉ. श्रीमती तारा सिंह, मुंबई के सरंक्षण में शुरु किया गया है. रचनाएं यूनीकोड अथवा अंग्रेजी में टंकित कर swargvibha@gmail.com पर भेजी जा सकती है. नवोदित रचनाकारों को प्राथमिकता दी जाएगी. साल २००८ से सर्वश्रेष्ठ युवा रचनाकारों को पुरस्कृत करने की भी योजना है. आप सबों के सहयोग एवं सुझाव की अपेक्षा रहेगी.

डॉ. बी.पी.सिंह
(स्वर्ग-विभा टीम की ओर से)
बी-६०५, अनमोल प्लाजा, से०८, खारघर, नवी मुंबई-४१०२१०

कवयित्री डॉ० तारा सिंह को अमेरिकन अवार्ड

छायावादी कवयित्री डॉ. तारा सिंह, मुम्बई को उल्लेखनीय साहित्य सेवा एवं अभूतपूर्व उपलब्धियों के लिए २० अगस्त०७ को अमेरिकन बायोग्राफिकल इन्स्टीट्यूट, अमेरिका द्वारा 'वर्ल्ड लाइफ टाइम एचीवमेंट अवार्ड' एवं 'वोमेन ऑफ द ईयर अवार्ड' से नवाजा गया. इसी बीच श्रीमती सिंह को उनकी उच्च स्तरीय एवं सराहनीय रचनाओं के लिए इतिहास और पुरातत्व संस्थान, बालाघाट द्वारा 'गंगोत्री सम्मान' तथा 'मधुरिमा सम्मान', तरुण सांस्कृतिक चेतना समिति, समस्तीपुर द्वारा 'महादेवी वर्मा सम्मान', भारतीय वाडमय पीठ कोलकाता द्वारा 'सारस्वत साहित्य सम्मान', श्री मुकुन्द मुरारी स्मृति साहित्य माला, कानपुर द्वारा 'स्मृति साहित्य श्री सम्मान', रीचा प्रकाशन, कटनी द्वारा, 'भारत गौरव सम्मान' एवं श्री महादेव संस्थान तथा युवा समूह प्रकाशन, वर्धा द्वारा 'साहित्य गौरव अवार्ड' द्वारा विभूषित किया गया है.

+++++++++++++++++++++++++++++++++++

शाम्भवी सदन समारोह २००८ संपन्न

दरभंगा, बिहार. राष्ट्रीय सार्थकता अभियान के तहत इस वर्ष भी स्वामी विवेकानन्द की जयंती 'राष्ट्रीय सार्थकता दिवस' के रुप में, गाँधीनगर में मनाई गई.समारोह का उद्घाटन डॉ. प्रभाकर पाठक, अध्यक्ष, मानविकी संकाय, ल. ना.मिथिला विश्वविद्यालय, ने किया तथा आहट के प्रधान संपादक डॉ. ब्रहमदेव प्रसाद कार्यी ने आगत अतिथियों का स्वागत किया. समारोह के मुख्य अतिथि थे अक्षर गंधा के प्रधान संपादक डॉ. हरिवंश तरुण.

सम्मान सत्र में हैदराबाद विश्वविद्यालय के अवकाश प्राप्त आचार्य डॉ. विजेन्द्र नारायण सिंह को हिंदी साहित्य लेखन में विशिष्ट योगदान के लिए 'रामधारी सिंह दिनकर' सम्मान, संगीत शोध संस्थान, दरभंगा के अध्यक्ष डॉ. चण्डेश्वर झा को संगीत क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए'पं० रामचतुर मल्लिक राष्ट्रीय सार्थकता सम्मान' तथा चंद्रधारी संग्रहालय, दरभंगा के चित्रकार श्री राजेन्द्र प्रसाद मंजुल को चित्रकला क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए 'राधामोहन राष्ट्रीय सार्थकता सम्मान' किया गया. डॉ. तारा सिंह को उनकी कालजयी काव्यकृति 'विषाद नदी से उठ रही ध्वनि' के लिए 'नागार्जुन आहट शिखर साहित्य सम्मान' से सम्मानित स्व० नागार्जुन के ज्येष्ठ पुत्र शोभाकान्त ने किया.

इस अवसर पर श्री रत्नानन्द झा रचित काव्य संग्रह 'जय गणेश', डॉ० कृष्ण चन्द्र झा रचित महाकाव्य 'याज्ञवल्क्य' एवं ग़ज़ल संग्रह 'जुल्फें जुलुम जहर की भीनी', डॉ० ब्रहमदेव प्रसाद कार्यी के ग़ज़ल संकलन 'ऑखों में सावन' तथा डॉ० सूरज मृदुल लिखित कहानी संग्रह 'मोरवाले लड़के की कतार' का लोकार्पण किया गया.

कवि सम्मेलन में कवि-शायरों ने श्रोताओं का भरपुर मनोरंजन किया. डॉ. हरिवंश तरुण, नाशाद औरंगाबादी, डॉ. ब्रजनन्दन वर्मा, डॉ.सूरज मृदुल, रामावतार अनुरागी, सीताराम शेरपुरी,शयूम जावेद, बेलगाम बाजिदपुरी, डॉ. तारा सिंह, शंकर प्रलामी,डॉ.ब्रहमदेव प्रसाद कार्यी, रत्नानन्द झा 'छोटन' आदि ने काव्य पाठ किया.

++++++++++++++++++++

दोहा

सांई शरण गहि, सुखी दिन-रैन,
मन भटके जग, पावे न चैन।
धन-धाम-धरा, सुत और नारी,
इन ही जाने, यह गति न्यारी।
सब अपनाये, रोय रहे नैन,
सांई शरण गहि, सुखी दिन-रैन।
जनम गंवावत, दु:ख को झेलत,
शिरडी आवे, सुख से खेलत।
जीव की मिटे, सभी भटकैन,
सांई शरण गहि, सुखी दिन-रैन।
मन झोली भर, सांई आशीष,
खिले फूल सा, प्रसन्न जगदीश।
दे श्रद्धा सुमन, पा भाव बैन,
सांई शरण गहि, सुखी दिन-रैन।

पं. नरेश कुमार शर्मा, मुंबई

छप्पयः प्रदुषण

धधकी धरती आज,
जर्रा जर्रा ज़हर का।
फीके सुख के साज,
पानी प्याला कहर का।
रोग शोक वाहिका,
रश्मियॉ चन्द्रभान की।
हवा काल-कलिका,
रोटियां गाहक प्रान की।
नाग बसें नाद में,
तेजाबी घन बरसात।
बरबादी खाद में,
करते खुद खुद का घात।

अभागे

क्या करें गुलाब का,
सूंघ शूल सकते नहीं।
तट नहीं तालाब का,
प्यासे पी सकते नहीं।
उस घर की खिड़कियां,
बंद रहा करती सदा।
गायब जब झलकियां,
लुप्त चांदनी की अदा।
दस्तक दी भोर ने,
सोते उल्लू रह गये।

मुखराम माकड़ 'माहिर', राजस्थान

पत्रिका के समस्त पाठकों को हार्दिक बधाई

बच्चा लाल गौतम

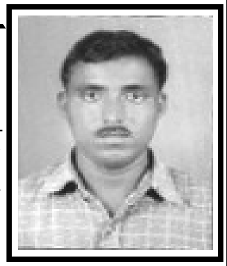

स्नेक बार प्रभारी,
सी.ए.टी.सी.बमरौली, इलाहाबाद
ग्रामः पनसौर, पो.लोकीपुर, चरवा,
कौशाम्बी,उ०प्र०
मो० ९९३५७५०८९९

पत्रिका के समस्त पाठकों को हार्दिक बधाई

अयोध्या प्रसाद

विशेषज्ञः १० वर्ष का सिविल इंजीनियरिंग वर्क, एवं हार्टिकल्चर वर्क का अनुभव

सम्पर्क करें: अहमदपुर पवन, मनौरी, इलाहाबाद
मो0: 9307289840

बहन मायावती जिन्दाबाद (M): 9450581324

सतीश बौद्ध

(अध्यक्ष)
से0 मरिया डीह व बेगम सरांय, पूर्व अध्यक्ष,
वि. सभा शहर पश्चिमी क्षेत्र इलाहाबाद
निवासः लाल बिहारा, बमरौली, इलाहाबाद

With Compliment From

Pankaj Ojha

Computer Exuctive
(Civil Aviation Training College)
Airports Authority of India

Agent:
Share Bazar Seeta Portfolio
Management Ltd.
Advisor:
"Birla Sun Life (Life Insurance)

Add: South Camp, Air Force Station,
Bamrauli, Allahabad
Mob: 9889553648, 9305157436

पंजीकृत

श्रुति कम्प्यूटर्स

(संचालितःश्रुति कम्प्यूटर एजुकेशनल सोसायटी)

प्र0 कार्या0:294/129/9, चकिया, इलाहाबाद
शाखा कार्या0: 31/59, कूपर रोड,
सिविल लाईन्स, इलाहाबाद

पीजीडीसीए, डीटीपी, डीसीपी, डीआईए, टैली, ऑटोकैड, सी++, वीबी, कोरल ड्रा-१२ आदि सभी प्रकार के कम्प्यूटर कोर्सेस एवं जाब वर्क के लिए सम्पर्क करें

निदेशक/प्रबंधकः रमेश कुमार
गौसिया सुल्ताना, पायल, रामदुलारी, राकेश कुमार,
ज्योति, ईरम सुल्ताना, कनिज फातिमा, मनोज कुमार

शुभ कामनाओं सहित

गायत्री स्क्रीन प्रिन्टर्स

स्क्रीन प्रिंटिंग, ऑफसेट प्रिटिंग, फ्लैक्स प्रिटिंग एवं सभी प्रकार की डिजाइनिंग वर्क के लिए सम्पर्क करें।

प्रो0 ए.पी.उपाध्याय

पताः 359, मोहत्सिमगंज, इलाहबाद–3
मो0 9415369100

With Best Compliment From

Om Computer & Printer

All Types of Computer Job/Book Works & Printing Works

Add: 114/133,Badshahi Mandi, Allahabad
Mo.:9336847458, 0532-6454538

शुभ कामनाओं सहित (M):9336167385

विमल कम्प्यूटर

सभी प्रकार के डिजाइन वर्क, कम्प्यूटराइज्ड डेटा प्रोसेसिग, प्रिन्टिंग का कार्य होता है.

15,विवेकानन्द मार्ग, पन्ना लाल मार्केट (लक्ष्मी होटल) दुकान न02, इलाहाबाद

With Best Compliment From

Authorised Dealer

Service & Spares

Ashok Leyland

Premier Power Equipment

Add: 13, V.N.Marg, (Near Luxmi Hotel) Allahabad-211003
Ph.:(O)2400046,Mo.:9335035396

पत्रिका के समस्त पाठकों को हार्दिक बधाई

योगेन्द्र कुमार चौरसिया

सहायक प्रबंधक (सिविल) एवं योग प्रशिक्षक
नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज,
(एयर पोर्ट अथारिटी ऑफ इंडिया), बमरौली, इलाहाबाद

With Best Compliment From

R.K. Garg

President, Allahabad Branch
BUILDER'S ASSOCIATION OF INDIA
Saket Nagar Hanuman Mandir,
Preetam Nagar, Allahabad

सभी पाठकों को हार्दिक शुभकानाएं Mo:9335108434, 9415189919 Ph.: 0532-2436980, 3259884

दीप ट्रेवेल्स

हमारे यहॉ पिकनिक पार्टी, शादी, विवाह, तीर्थ यात्रा हेतु टबेरा, क्वालिस, टाटा सूमो, वैन, इंडिका, इंडिगो एवं लक्जरी बसें हर समय उचित किराये पर उपलब्ध है.

प्रो० संतोष तिवारी

कुशवाहा मार्केट, भोला का पूरा, प्रीतम नगर, इलाहाबाद

चिट्ठी आई है

आप अच्छे और सुलझे हुए संपादक है.

प्रिय महोदय,

मुझे यह जानकर काफी प्रसन्नता हुई कि विश्व विख्यात राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' मुंबई की वरिष्ठ एंवं चर्चित कवयित्री गीतकार एवं ग़ज़लकार पर एक विशेषांक निकालने जा रही है. डॉ० तारा सिंह दर्जनों काव्य संग्रहों के सृजनकार है. इनकी पुस्तकों एवं कविताओं का सर्वत्र स्वागत हुआ है. विभिन्न संस्थानों द्वारा इनकों दर्जनों पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हुआ है. ये सरल सहज भाषा में कविताओं का सृजन करती है. इनकी कविताएँ मर्मस्पर्शी होती हैं जो सहज ही दिल को छू लेती है. इनकी कविताओं में कल्पना की उड़ान है, आदर्शवाद है, प्यार और ममता है, मॉ के प्रति अगाध प्रेम की झलक है और प्रेम और यथार्थ का माणीकांचन संयोग है.

मैं कामना करता हूँ कि डॉ० सिंह भविष्य में और नाम और यश कमाएं. इनकी ख्याति और बढ़े. इनको और अधिक सम्मान एवं पुरस्कार मिले. मेरी शुभकामनाएँ इनके साथ है.

आप भी अच्छे और सुलझे हुए संपादक है. आपने विश्व स्नेह समाज का कई सफल विशेषांक निकाला है, आपको सफलता मिली है. मेरी कामना है कि यह विशेषांक भी सफल होगा. मेरी शुभकामनाएँ आपके साथ है-

बुद्धेश्वर प्रसाद सिंह, सम्पादक, अर्चना, जिला-मधेपुरा, बिहार-८५२११४

+++++++++++++++++++++

पत्रिका आपके प्रखर व्यक्तित्व के कारण ही स्तरीय बनी है

पत्रिका का अंक मिला. अतीव प्रसन्नता हुई. इसे अद्योपरान्त विहंगवते अवलोकन कर गया. पत्रिका कम समय में ऐसी प्रणत स्तरीय बन सकती है. आप प्रखर व्यक्तित्व के बदौलत. प्रयास सराहनीय एवं वन्दनीय है. श्रेयष्कर साहित्य सेवा एवं फ्रांजल निःस्वार्थ प्रेम के लिए कृपया हमारी बधाई स्वीकार हमें कृतार्थ करें.

यथा नाम तथा गुणा. सचमुच में गोकुल का कृष्ण कन्हैया मुरलीधर सम्पूर्ण धरा को अपने अनोखा व्यक्तित्व एवं बेहतर करिश्माई कृतित्व से प्रेममय बना डाला था-लगता है वही गोकुलेश्वर आज पुनः उस साहित्य संसार में शाश्वत प्रकाश, नई दिशा, नई सूझ से दिग्भ्रमित बन्धुओं को नया रास्ता निदेशित प्रेरित करने अवतरित हो गया है.

श्रीप्रकाश, डालमियानगर, रोहतास

++++++++++++++++++++

पत्रिका द्वारा प्रकाशित सभी विशेषांको का मैं साक्षी रहा हूँ.

मित्रवर गोकुलेश्वर द्विवेदी जी

आपका पत्र मिला. आभार.आप डॉ० तारा सिंह पर विशेषांक प्रकाशित करने की सोच रहे हैं पढ़कर बेहद अच्छा लगा. आपकी पत्रिका द्वारा प्रकाशित सभी विशेषांको का मैं साक्षी रहा हूँ. आप द्वारा प्रकाशित हिन्दी सेवा विशेषांक, पत्र-पत्रिकाओं के संपादक और उनकी चुनौतियां विशेषांक अभी भी मेरे संग्रह की शोभा बढ़ा रहे है. खासकर हाल ही में साहित्य मेले में प्रकाशित राज बुद्धिराजा विशेषांक बहुत सुन्दर एवं आकर्षक बन पड़ा था. इसी कड़ियों में आप तारा जी पर विशेषांक प्रकाशित कर रहे हैं आशा ही नहीं पूर्ण विश्वासहै कि यह विशेषांक प्रभाव शाली होगा. इस अंक हेतु मैं एक आलेख प्रेषित कर रहा हूँ इसे स्वीकार्य करने का प्रयास करें.

प्रा. सोनवणे राजेंद्र 'अक्षत', संपादक, मासिक लोकयज्ञ, बीड़, महाराष्ट्र

++++++++++++++++++++

आप योग्यतम संपादकों की श्रेणी में तो गिने ही जाते रहे हैं

मान्यवर, सप्रेम नमस्ते

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष का अनुभव हुआ कि आपके कुशल सम्पादन में डॉ. तारा सिंह जी पर एक पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है. आपकी लगन योग्यता तथा कार्य क्षमता के प्रति मैं पूर्व से ही भली भांति परिचित रहा हूँ. मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपके कुशल संपादन में प्रकाशित हो रही पुस्तक के प्रकाशनोपरान्त डॉ. तारा सिंह के साथ-साथ आपकी ख्याति भी अवश्य ही बढ़ेगी. आप योग्यतम संपादकों की श्रेणी में तो अब तक गिने ही जाते रहे हैं.आपकी इस पुस्तक की महान सफलता हेतु मैं परमप्रिय ईश्वर से हार्दिक प्रार्थना करता हूँ.

मोहन कुमार, संपादक, गोल्डन वर्ल्ड सा., पीलिभीत, उ.प्र.

++++++++++++++++++++

प्यारे भाई गोकुलेश्वर तुम वास्तव में पत्रकारेश्वर

प्रियवर द्विवेदी भाई!

छः वर्ष तक इतनी अच्छी पत्रिका
इतने कम पैसों में कैसे चलाई?
इतनी श्रेष्ठ सामग्री कैसे जुटाई?
आपका सम्पादकीय अद्वितीय, समय की कीमत, सांसदों की अकूत कमाई
और जगन की कनिया जोड़ी, मर्म स्पर्शी कहानी कहाँ से पाई?
आप कितना करते है श्रय?
जुटाते है कविताएँ?आलेख, आप्त वचन
गज़ले, गीत-हंसगुल्ले मानस पर प्रेरणदायी चिंतन, चॉद वाली राजकुमारी
प्रेम पर गुदगुदाता व्यंग, लघुकथाए, जीवन का सत्य, समीक्षा और इंदिरा की गजल,
इस सबका क्या पाया फल
प्यारे भाई गोकुलेश्वर!
तुम वास्तव में पत्रकारेश्वर
तुम्हें देता हूँ बधाई
मुझे अच्छी पत्रिका पहुँचाई

कृपा कर इसे भेजते रहना
और ऊँचाइयों को छूते रहना

डॉ० राधेश्याम योगी, जालौन,उ.प्र.

+++++++++++++++++++++

अद्वितीय प्रतिभा पर विशेष प्रकाशन का निर्णय वास्तव में एक सराहनीय कार्य है.

अतीव प्रसन्नता का विषय है कि डॉ. तारा सिंह के व्यक्तित्व पर विश्व स्नेह समाज पत्रिका विशेषांक प्रकाशित कर रही है. इस अद्वितीय प्रतिभा पर विशेष प्रकाशन का निर्णय वास्तव में एक सराहनीय कार्य है. आधुनिक हिंदी साहित्य, भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन, रहस्यवाद इत्यादि अनेक विभिन्न विधाओं में कव्य सृजन क्षमता दिखला डॉ. तारा सिंह ने एक विशिष्ट स्थान प्राप्त किया है. ऐसे व्यक्तित्व एवं उनके कृतित्व पर प्रकाशित हो रहे विशेषांक का हार्दिक दिल से स्वागत करता हूँ एवं उनको अनेकानेक शुभकामनाएं एवं बधाई देता हूँ.

कवि कुलवंत सिंह, वैज्ञानिक अधिकारी पदार्थ संसाधन प्रभाग, मुंबई-४०००८५

++++++++++++++++++++

पत्रिका का बदला हुआ स्वरुप देखकर प्रसन्नता हुई. यथा समय कुछ उत्तर नहीं दे सका क्योंकि मैं अपना प्रबन्ध काव्य 'आदि शंकराचार्य' पूर्ण कर प्रकाशन में व्यस्त था.

प्रमोद पुष्कर, भोपाल, म.प्र.

+++++++++++++++++++++

सम्पादकीय बड़े खुलासा तरीके से लिखी गई है

पत्रिका का अंक मिला. सम्पादकीय बड़े खुलासा तरीके से लिखी गई है. साधुवाद. वास्तव में सभी सरकारी अस्पतालों की हालत बहुत खराब है. शहर में ही नहीं गॉवों में तो तो मरीज मर जाते है पर अस्पताल में डाक्टर नहीं होता, कोई देखने वाला नहीं. बजट का तो बहाना है. वहॉ बन्दर बाट चलती रहती है. हे प्रभु हमें कब सद्‌बुद्धि आयेगी. आप सदा की भॉति प्रयासरत रहे. 'कबहुँ तो दीनानाथ के भनक परैगी कान' पत्रिका के निरन्तर उन्नति की ओर कदम बढ़ते रहे. इसी कामना के साथ.

कैलाश जलोटा, लखनऊ, उ.प्र.

+++++++++++++++++++++

काफी कम समय में साहित्य जगत में आपकी चर्चा प्रशंसनीय है

साहित्य के क्षेत्र में आपकी उत्कृष्ट सेवा व साधना के लिए बधाई. काफी कम समय में ही आपकी चर्चा साहित्य के क्षेत्र में काफी प्रशंसनीय हुई है. 'विश्व स्नेह समाज' सचमुच विश्व बंधुत्व के क्षेत्र में एक अनोखा प्रयास है. मेरे परम मित्र अखिलेश कुमार निगम, ए.एस.पी., लखनऊ साहब के विशेष आग्रह पर मैं अपनी चन्द रचनाऍ आपके पास प्रेषित कर रहा हूँ.

उमेश कुमार पटेल, महराजगंज,उ.प्र

++++++++++++++++++++

आपका सम्पादन श्रेष्ठतम है

मुझे पत्रिका नियमित रुप से प्राप्त हो रही है. संयोजित सभी सामग्री एवं आपका सम्पादक श्रेष्ठतम है. आप द्वारा प्रस्तावित सभी योजनाएं समाजोत्थान एवं कल्याण की दृष्टि से समय की मॉग के अनुरुप एवं उपयोगी है. परमात्मा आपके उद्‌देश्यों की सम्पूर्ति में सहायक बनें. यही शुभकामनाये हैं.

सनातन कुमार वाजपेयी, जबलपुर,म.प्र.

+++++++++++++++++++++

पत्रिका का अंक मिला. आपकी संपादकीय पढ़ा तो पुलिस के काले कारनामों की कई कहांनियां याद आई-

पलपल पलता देखिये झूठ कपट छल आज
थाने में सच बोल के फंस जाएंगे आप

डॉ. मालती आलेख 'महादेवी वर्मा के निबन्धों में संस्कृति विमर्श' और अन्य आलेख अच्छे लगे. डॉ. मिर्जा हसन नासिर की 'अंध विश्वास की मारी' और रहस्यमयी कहानी 'आईना' अच्छी लगी. डॉ. इन्दिरा अग्रवाल की लघुकथाएं और अन्य सभी रचनाएं स्तरीय लगी. ७ जून १८५७ को आजाद हो गया इलाहाबाद और जंगे आजादी का मूक गवाह नीम का पेड़, पढ़ कर याद अच्छा लगा.

भगवान दास ऐजाज, नई दिल्ली

+++++++++++++++++++++

प्रथम बधाई आपको

सादर नमन करते हुए समाचार दे रहा हूँ–

प्रथम बधाई आपको, जिन कीन्हा बड़ काज। कवि समाज बुलवाय कर, सम्मानन से साज।।

संरक्षिका जी को प्रथम बधाई देते हुए उनके सम्मान में एक कविता प्रेषित कर रहा हूँ.

बुद्धिराज गणपत को कहते, महाभारत का लेख किया।
फिर ताज्जुब का करना क्या, मानो उनने अवतार लिया।।
राजा शब्द यह सूचित करता, शासन हैं सब पर करते।
इस प्रकार हम बुद्धिराज को, राजा भी हैं कह सकते।।
वर्तमान डॉक्टर की पदवी, आज जिन्होंने पाई है।
कई भाषा की हैं विदुषी, लेखन की करी कमाई है।।
बढ़ते–बढ़ते विश्व स्नेह तक, इलाहाबाद अपनाई है।
है स्नेह सार विश्व में, सच्चा करो कमाई है।
गंगा जमुना धार त्रिवेणी, गुप्त सरस्वती माई है।
तीनों का संगम प्रयाग है, इससे बड़ क्या प्रभुताई है।
अनंतराम गुप्ता कहता है, दर्शन हमको भी हो गये।
मिली बधाई स्नेह पत्रिका, पाकर के हम कृतार्थ हो गये

अनन्तराम गुप्त, ग्वालियर, म.प्र.

++++++++++++++++++++

पत्रिका के प्रत्येक पृष्ठ पर आपकी आस्था एवं परिश्रम परिलक्षित है
विश्व स्नेह समाज का अंक हस्तगत हुआ. एतदर्थ कोटिशः आभार. पत्रिका पढ़कर हृदय गद्गद् हो उठा. पत्रिका के प्रत्येक पृष्ठ पर आपकी अटूट-आस्था एवं परिश्रम परिलक्षित है. ग़ज़लों के चयन में कठोरता बरतें. गीत व अन्य कविताएं रोचक है. आपकी सम्पादकीय टिप्पणी भी सारगर्भित एवं सामयिक है. आषा है भविश्य में आपकी पत्रिका आपके सम्पादकत्व में उत्तरोत्तर अग्रसर होती रहेगी. **जलाल अहमद खॉ** 'तनवीर,बाराबंकी,उ.प्र.

+++++++++++++++++++

सर्वप्रथम मेरे काव्य संग्रह 'मेरी बात सुनोगे' की स्वयं समीक्षा कर प्रकाशित करने के लिए आभार।
स्व० कैलाश गौतम की स्मृति में बहुत दिनों से एक रचना प्रकाशित करवाने की इच्छा थी. अतः उनकी विधा में एवं सरल, सपाट और बोल चाल की भाषा में लिखी एक रचना प्रेषित है.
अजय चतुर्वेदी'कक्का' सोनभद्र,उ.प्र.

::

आदरणीय अनुज श्री द्विवेदी जी,नमस्कार
पत्रिका का अंक मिला. नववर्ष के शुभावसर पर पत्रिका से सरोकारशील सभी बन्धुओं के लिए मेरी शुभकामना है कि सभी को सुस्वस्थ, सर्वविधि समृद्ध एवं सानन्द बनाये रहे. सभी साहित्यिक उत्कर्ष भी करें.
डॉ० कौशलेन्द्र पाण्डेय, लखनऊ

::

आदरणीय संपादक जी
पत्रिका का एक अंक मिला. धन्यवाद. पत्रिका अच्छी लगी और विविध विषयों के समायोजन से पत्रिका में एक विशिष्ट आस्वाद का दिग्दर्शन हुआ और पाया भी.
उमाशंकर राव 'उरेंदु',संपादक, यर्थाथ दंश, झारखंड

::

आज ही स्नेंह समाज का अंक मिला. अद्योंपात पढ़ने पर डॉ० राजेश्वरी शाडिल्य लखनऊ द्वारा प्रस्तुत विचार अच्छे लगे. सपाट बयानी का स्वागत होना ही चाहिए. अन्यथा आप कहीं चाटुकारों में न घिर जाए. यह भी कहना चाहूंगा कि आप सम्भवतः अपनी दिशा से भटक रहे है. एक बार पुनः कहूंगा कि अपने अपनों को पहिचानिए एवं स्तर पर ध्यान रखिए.
डॉ. प्रमोद पुष्कर, भोपाल, म.प्र.

::

श्रीमान जी,
दीपावली के पावन पर्व पर हार्दिक अभिनन्दन।
रुप का दीप जीवन में जलता रहे
फिर गगन पर चन्दा उगे न उगे।
हनुमान प्रसाद अग्रवाल,बरगढ़, उड़ीसा

::

आशा है स्वस्थ एवं सानंद है. आपके द्वारा सम्पादित पत्रिका का अंक मिला. तन्मयता से पढ़ा. पत्रिका के सभी लेख पठनीय एवं संग्रहणीय है. सम्पादकीय आलेख 'सम्पादकों के समक्ष चुनौती सारगर्भित है. आपने बड़ी स्पष्टता और सहजता से सम्पादकीय चुनौतियों का उल्लेख किया है. कहानी, ग़ज़ल, कवितायें आदि विभिन्न विधाओं से सम्बन्धित सामग्री एक साथ देकर आपने पत्रिका और अधिक उपयोगी बना दिया हे. स्तरीय साहित्यिक पत्रिका आपने प्रेषित की, इसके लिए आपको कोटिशः धन्यवाद.
डॉ० आदित्य कुमार गुप्त, झालवाड़ा, राजस्थान

::

नूतन वर्ष २००८ मंगलमय हो. नववर्ष के पावन अवसर पर आपके स्वस्थ, यशस्वी, चिरायु एवं सुखी जीवन की हार्दिक शुभ कामना करता हूँ.
यदुनाथ सेउटा, काशीपुर, कोलकाता

::

श्री गोकुलेश्वर जी! मैंने पाया 'स्नेह समाज' उसे शान्ति से पढ़ करके, उत्तर देता हूँ आज।
आखों में ऑसू दे भागे हैं गौतम कैलाश, लेकिन उनको भूल नहीं सकता उज्जवल इतिहास. धर्मस्थल प्रयाग का मैंने पढ़ा ध र्ममय लेख खुशी हुई है मेरे मन में पूरा विवरण देख दोहे ग़ज़ल कहानी पढ़कर हुआ बहुत संतोष अचरच वाली खबरें पढ़कर रह जाता खामोश पढ़ करके पत्रिका, हर्ष का होता है संचार यही कामना बढ़े पत्रिका, रहे न मन में क्लेश सम्पादक जी को बधाइयां देते
कवि योगेश डॉ० योगेश्वर प्रसाद सिंह, अध्यक्ष,जिला हि. सा. स., पटना,

::

कान कौआ ले गया उल्लेखनीय है
पत्रिका का अंक प्राप्त हुआ. इस अंक में कैसी विडम्बना, यह मेरी कहाी प्रकाशित करके मेरा लेखन कार्य को और बढ़ा दिया. आपके आगे सहयोग की अपेक्षा, कान कौआ ले गया अपनी बात उल्लेखनीय है. चिट्ठी आई है में डॉ. वृन्दावन त्रिपाठी, डॉ० स्वर्ण किरण, राजेश्वरी शांडिल्य आदि के विचार उल्लेखनीय है. पत्रिका के सात वर्ष पूरे होनें पर हार्दिक बधई.
एस.बी. मुरकुटे, कर्नाटक

::

आपका प्रयास सराहनीय है. लघु पत्र-पत्रिकाओं का साहित्य की दुनिया में खास महत्व होता है. इतिहास साक्षी है कि लघु पत्र-पत्रिकाओं की बदौलत आज कई साहित्यिक लेखक नाम कमा रहे है. केन्द्र सरकार और राज्य सरकारों को चाहिए कि हिन्दुस्तान की लघु पत्र पत्रिकाओं को भरपूर सहयोग करें. इसी आशा व विश्वास के साथ.
श्रीकान्त व्यास, पटना, बिहार

::

हॅसे
और
हॅसाये
दीपावली
मनाये।

हलीम आइना, कोटा, राजस्थान

पत्रिका का नया अंक प्राप्त हुआ. धन्यवाद. समाज के प्रति सदैव से चिंतित आपने राष्ट्रीय धर्म को बखूबी निभाया हुआ है. हिंदी दिवस को सार्थक बनाता यह अंक संग्रहणीय बन पड़ा है. मेरी बधाइंया स्वीकार करें.

आप हिन्दी को सम्पूर्ण जगत में सर्वोच्च स्थान दिलाने हेतु प्रयासरत है जो सराहनीय है.

आपके साहित्य क्षेत्र के योगदान तथा बढ़ते कदमों को बधाई तथा शुभकामनाएं.

रचना यादव, अहमदाबाद

खुशियों से झोली भरे, मिट जाये सब क्लेश।
कृपा करहिं सब पर अतुल, लक्ष्मी और गणेश।

अतुल कुमार त्रिपाठी, डबरा, म.प्र.

पत्रिका का अंक प्राप्त हुआ. आपके इस स्नेह का मैं आभारी हूॅं. धन्यवाद. एक विद्वान अनुभवी सम्पादक के अथक प्रयास और सूझ बूझ के कारण समाज के सभी विषयों का निचोड़ पत्रिका में देखने को मिला.

आपके द्वारा जो समाज सेवा का बीड़ा उठाया गया है उसमें मेरा सहयोग हमेशा बना रहेगा. मैं शीघ्र ही अपने सत्संग मंडल, मित्रों और सहयोगियों से चर्चा कर इस संस्थान में जुड़ने और सहयोग देने हेतु आग्रह करुंगा. समाज सेवा में आपकी पवित्र भूमिका सफल होवे एवं पत्रिका के यशस्वी होने की प्रार्थना परम पिता परमेश्वर से करता हूॅं. कृपया आप तो बस इसी प्रकार अपना प्यार बॉटते चले.

बी.के. दुबे, भोपाल, म.प्र.

प्राप्त सभी को हो खुशी सुखी रहे दिन रात,
आनन्दमय परिवार हो, मात-पिता और भ्रात।
रिश्ते सब हो प्रेममय, कहीं ना हो अवसाद,
मंगलमय नववर्ष हो, मिले प्रभु सौगात।

डॉ० केवल कृष्ण पाठक, सम्पादक, रवीन्द्र ज्योति, जीन्द, हरियाणा

प्रिय महोदय,

कवयित्री श्रीमती तारा सिंह द्वारा सूचना प्राप्ति पर बड़ी खुशी मिली कि आपके द्वारा फरवरी २००८ अंक उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व हेतु आवंटित की गई है. उन्हें समर्पित इस अंक की सफलता की कामना तो है ही, साथ ही विविधता एवं सुवाचन हेतु अपने महासचिव श्री हीरा प्रसाद 'हरेन्द्र' से एक रचना प्राप्त कर अपने परिचय शुभकामना की संक्षिप्त प्रति रचना के साथ आपकी सेवा में प्रेषित कर रहा हूॅं.

आशा है समर्पित अंक में इन्हें स्थान देकर उपकृत करेंगे एवं यथा समय अंक में इन्हें स्थान देकर सम्प्रेषित कर कृतार्थ करेंगे.

डॉ. ब्रहमदेव नारायण सत्यम, सुलतानगंज, भागलपुर, बिहार

इनके भी पत्र मिले.

१. **डॉ० विनय कुमार मालवीय,** मालवीय नगर, इलाहाबाद
२. **श्याम सुन्दर प्रसाद**, भागलपुर, बिहार
३. **सुनील कुमार चौहान 'संघर्ष'** बदायूँ, उ.प्र.
४. **श्यामलाल उपाध्याय** ,कोलकाता
५. **मृदुल मोहन अवधिया**, जबलपुर,मप्र.
६. **प्रभुलाल चौधरी** उज्जैन, म.प्र.
७. **संजय चतुर्वेदी**,लखीमपुर खीरी, उ.प्र.
८. **कृष्णस्वरुप पाण्डेय** 'निर्बल', सम्पादक, नागरी वाङमय, बहराइच, उ.प्र.
९. **विश्व प्रताप भारती**, अलीगढ़

सम्मानित पाठक बन्धु

आपके स्नेह की बदौलत ही हम सफलता के छह वर्ष पूर्ण करने में सफल हुए है. आप अपनी शिकायतों व सुझावों से हमें अवगत कराते रहे ताकि पत्रिका में निखार लाने में हमें मदद मिल सके. हम आपकी शिकायतों/सुझावों पर विशेष ध्यान देते हैं.

संपादक

साहित्यकारों/सदस्यों के लिए

१.पत्रिका के लिए लेख अथवा प्रकाशन सामग्री कागज के एक ओर बायी तरफ पर्याप्त हाशिया छोड़कर स्पष्ट सुन्दर अक्षरों में लिखकर अथवा टाईप कराकर दो पंक्तियों के बीच में समुचित स्थान के साथ भेजे़ं. किसी भी उद्धरण का पूरा सन्दर्भ अवश्य दें. रचना की वापसी के लिए टिकट लगा लिफाफा भेजना न भूलें. **२.** किसी पर्व/अवसर विशेष पर सामग्री दो माह पूर्व भेजें. **३.** पत्रिका के सदस्य पत्रव्यवहार व धनादेश भेजते समय सदस्य संख्या का उल्लेख अवश्य करें.४.हम साहित्यकारों को फिलहॉल कोई मानदेय नहीं देते. केवल उपहार स्वरूप दो प्रतियॉ ही भेजते हैं जिसमें उनकी रचनाएॅ छपी होती हैं. भविष्य में कुछ मानदेय देने की योजना विचाराधीन हैं. लेकिन वह मांगी गयी सामग्री पर ही देय होगी. **५.** यदि आप अपनी कृति (काव्य, ग़ज़ल, कहानी, निबंध संग्रह, उपन्यास) का विज्ञापन इस पत्रिका में छपवाना चाहते हैं तो रु० १००/-का मनिआर्डर तथा एक प्रति पुस्तक की भेजें. **६.** धनादेश/बैंक ड्राफ्ट/डी.डी 'संपादक, विश्व स्नेह समाज' के नाम से भेजें. चेक स्वीकार्य नहीं होगा. सदस्यों को चाहिए कि अपना डाक पता स्पष्ट सुन्दर अक्षरों में लिखें.

स्वर्ण चिकित्सा:कैन्सर रोगियों के लिए वरदान

डॉ0 रामचन्द्र मालवीय,
भोपाल,म.प्र.

स्वर्ण चिकित्सा कैन्सर रोगियों के उपचार के लिए मॉ के दूध की तरह हानिरहित चिकित्सा है. एक प्रकार से स्वर्ण चिकित्सा कैन्सर रोगियों के लिए वरदान है. स्वर्ण चिकित्सा के उपचार से फायदे जानने हेतु तीन माह बाद आधुनिक मेडिकल जॉचों के द्वारा कैन्सर रोगी संतुष्ट हो सकते हैं. वैसे कैन्सर रोगियों को स्वयं यह लगने लगेगा कि स्वर्ण चिकित्सा के उपचार से वे स्वस्थ हो रहे हैं. अमृतपान करने की तरह स्वर्ण चिकित्सा कैन्सर रोगियों के लिए विश्वसनीय एवं सफल उपचार हैं. क्योंकि रोग प्रतिरोधक शक्ति से स्वर्ण (सोना) भरपूर है. स्वर्ण चिकित्सा के उपचार से कैन्सर रोगियों के शरीर में कैन्सर रोग रह ही नहीं सकता है. स्वर्ण चिकित्सा की यह मुख्य विशेषता है.

कैन्सर बीमारी से जो रोगी निराश हो चुके हैं. चिकित्सकों ने जिन गंभीर कैन्सर रोगियों को यह कह दिया हो कि भगवान ही सहारा हैं. कृपया ऐसे कैन्सर रोगिंयो का उपचार स्वर्ण चिकित्सा के द्वारा अवश्य करायें. यदि कैन्सर रोगी की आयु अंतिम वृद्धावस्था नहीं है तो स्वर्ण चिकित्सा के उपचार से लाभ मिलेगा. स्वर्ण चिकित्सा (कैन्सर) अस्पताल की यह भी गारंटी है कि स्वर्ण चिकित्सा के उपचार से एक माह में संतोष नहीं होने पर कैन्सर रोगियों को शेष स्वर्ण चिकित्सा के रुपये जब चाहे तुरन्त वापिस मिलेंगे.

शुद्ध स्वर्ण २४ कैरेट सोना मूल्यवान खनिज है. इसी स्वर्ण को दो घंटे में (शुद्धिकरण करके) स्वर्ण चिकित्सा (कैन्सर) अस्पताल द्वारा गंभीर एवं जटिल कैन्सर रोगियों का उपचार होता है. स्वर्ण चिकित्सा कैन्सर अस्पताल में अच्छे ज्वैलर्स से या स्वर्ण विक्रय बैंक से प्रिंट की हुई पक्की रसीद लेकर खरीदे गये स्वर्ण (सोने) को (रोगी के सामने ही) आयुर्वेदिक कठिन विधि से दो घंटे में अनुपयुक्त रंग-रोगन निकालकर शुद्धिकरण करते हैं. ध्यान रहे कि स्वर्ण (सोने) को शुद्धिकरण किया जाना अनिवार्य है. सिर्फ शुद्धिकरण किया हुआ स्वर्ण (सोना) ही औषधि के रूप में कैन्सर रोगियों के लिए लाभदायक है.

यह ज्ञात हैं कि विज्ञान के अंतर्गत बायोकेमिस्ट्री के विद्वान वैज्ञानिकों ने मानव शरीर में अनेक तत्वों की खोज की है. जैसे-लोहा, कैल्शियम, आयोडीन, मैगजीन आदि अनेक, यह तत्व हमारे शरीर में उपयोगिता के अनुपात के रूप में पाये जाते है, जो कि शरीर को स्वस्थ एवं जीवित बनाये रखते हैं.

स्वर्ण चिकित्सा के अंतर्गत स्वर्ण (सोने) के सूक्ष्म कण (नैनोशल) कैन्सर रोगियों के खून में एवं उपरोक्त जीवनदायी तत्वों में मिलकर विशेष शक्ति एवं विशेष गुण कैन्सर रोगियों में पैदा करते हैं और कैन्सर बीमारी को दूर करने में मदद करते हैं. इस प्रकार स्वर्ण चिकित्सा के द्वारा कैन्सर रोगियों को नया जीवन मिलता है.

वैज्ञानिकों ने अपने शोध के आधार पर यह सिद्ध किया है कि विश्व की प्रत्येक वस्तु 'सीधे ही' अथवा 'माध्यम' बनकर विविध प्रभावों को ग्रहण करती है. इसी प्रकार स्वर्ण (सोना) भी स्वर्ण चिकित्सा के द्वारा स्वर्ण के सूक्ष्म कण (नैनोशेल) कैन्सर रोगियों के शरीर के अन्दर 'माध्यम' बनकर कैन्सर रोगियों को स्वस्थ बनाते हैं एवं लम्बी आयु प्रदान करते हैं.

वैज्ञानिकों ने प्रमाणित किया है कि स्वर्ण (सोने) के घोल में मिले हुए स्वर्ण के सूक्ष्म कण (नैनोशेल) जटिल कैन्सर के रोगियों के लिए अचूक तथा गौरवशाली उपचार है. 'अमेरिका के वैज्ञानिकों ने अपने शोध में पाया है कि ऐसे कैन्सर जिनकी पहचान नहीं हो पाती है और उनका ऑपरेशन सम्भव नहीं है, ऐसे कैन्सर के रोगाणुओं को खत्म करने में स्वर्ण (सोने) के सूक्ष्म कण (नैनोशेल) महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है.' स्वर्ण चिकित्सा कैन्सर अस्पताल (भोपाल) में इसी प्रकार से केन्सर रोंगियो का उपचार होता है.

अर्थात कह सकते है कि जनहित के शताब्दियां गुजर जाने बावजूद आज भी, विष्व में अब तक 'स्वर्ण' के नये-नये शोध एवं चिकित्सा प्रयोग जारी हैं. कैन्सर रोग के लिए स्वर्ण चिकित्सा सफल उपचार है.

सड़को पर चलन

शहर की सड़को पर चलना अत्यन्त कठिन काम होता जा रहा है. कौन आपके किस तरफ से निकल जाए इसकी कोई निश्चितता नहीं. कौन कितनी गति से चलेगा इसका भी कोई भरोसा नहीं. ऐसे में अप्रत्याशित घटनाऍ होना तो स्वाभाविक हैं. यदि यह विचारधारा बनी रहे कि कैसे भी हम आगे निकल जायें और मंजिल पा जाएं तो फिर बहस करना ही बेकार है. सड़क पर चलने के जितने चाहे नियम बन जाये, पर हम सबको अपनी सोच में बदलाव लाना ही पड़ेगा कि नियमों का पालन करके ही रहेंगे.डॉ. नरेन्द्र नाथ लाहा, ग्वालियर

स्वयं भी पढ़ें और अपने परिचितों की भी पढाए

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

लोकप्रिय राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

विश्व स्नेह समाज

'विश्व स्नेह समाज' के पाठकों को विशेष तोहफा. घर बैठे प्राप्त करें वर्ष भर में १२ अंक अपनी प्रिय मासिक पत्रिका

एक प्रति:रु०५/– **विशिष्ट सदस्य** : रु० १००/– **द्विवार्षिक सदस्यता** : रु०११०/– **पंचवर्षिय सदस्यता**:रु०२७०/– **आजीवन सदस्य**:रु०११०१/– **संरक्षक सदस्य** :रु० २५००/–

☞विशिष्ट सदस्यों का संचित्र संक्षिप्त परिचय एक बार प्रकाशित किया जाएगा.
☞आजीवन सदस्यों का पूर्ण जीवन परिचय सचित्र एक बार तथा प्रत्येक वर्ष 2/3का विज्ञापन/संदेश निःशुल्क प्रकाशित किया जाएगा.
☞संरक्षक सदस्यों का एक बार पूर्ण जीवन परिचय, प्रत्येक वर्ष 2/3 का विज्ञापन/संदेश निःशुल्क प्रकाशित किया जाएगा तथा उपहार स्वरुप प्रत्येक वर्ष अलग से 200रु0 तक की पुस्तकें भेंट की जाएगी.

सदस्यों के लिए महत्वपूर्ण सूचना

सभी सदस्यों से निवेदन है कि अपनी सदस्यता राशि समय पर भेजकर नवीनीकरण कराते रहें. कृपया पता परिवर्तन की सूचना अवश्य भेजें. सही पते के अभाव में कई बार पत्रिका लौटकर वापिस आ जाती है. हमें नवीनतम पता, फोन नम्बर, मोबाइल नं. के साथ शीघ्र ही प्रेषित करने का कष्ट करें. पत्रिका के प्रथम पृष्ठ पर अंक की संख्या लिखी होती है. अतः जिस संख्या का अंक नहीं मिला हो उसकी सूचना दो माह के भीतर अपनी ग्राहक संख्या लिखकर भेजें ताकि पुनः अंक प्रेषित किया जा सके. **कृपया सदस्यता राशि, संपादक, विश्व स्नेह समाज के नाम निम्न बैंक खाते में जमा कराके हमें पे स्लिप की फोटो कापी भेजनें का कष्ट करें.**

विजया बैंक :

विशेष सदस्यता योजना में भाग लीजिए, अपने नाम, पता के साथ निम्न पते पर भेजें-

संपादक, 'विश्व स्नेह समाज',

एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

संस्थान की प्रगति रिपोर्ट

संस्थान ने अपने अत्यल्प समय में ही देश के १५० साहित्यकारों, २५ पत्रकारों, १० समाज सेवियों को सम्मानित करने का गौरव हासिल किया है. कुछ निर्धन साहित्यकारों के संग्रह का प्रकाशन कर चुकी हैं. संस्था ने हिंदी भाषी राज्यों के साथ ही साथ अहिन्दी भाषी राज्यों में भी अपने पॉव पसार दिए हैं. संस्थान द्वारा २००४ से निरन्तर बहुचर्चित साहित्य मेला का आयोजन किया जा रहा है. इस आयोजन में देश के कोने-कोने से ख्यातिलब्ध साहित्कार, पत्रकार, संपादक भाग लेते है. इस मेले में पुस्तक प्रर्दशनी, परिचर्चा, कवि सम्मेलन व सम्मान समारोह का आयोजन किया जाता है. पाठकों देश की हजारों पत्र-पत्रिकाओं को जानने व समझने का सुअवसर प्राप्त होता है. संस्थान द्वारा कुछ उपाधिया भी दी जाती है-जैसे विद्या वारिधि, विद्या सागर, विद्या वाचस्पति, साहित्य गौरव, साहित्य रत्न, पत्रकार रत्न, सम्पादक रत्न, समाज श्री, साहित्य शिरोमणि. प्रत्येक वर्ष ख्यातिलब्ध साहित्यकारों के जन्मदिवस के अवसर पर भी कार्यक्रम आयोजित किए जाते है तथा युवा प्रतिभाओं को आगे लाने के लिए काव्य प्रतियोगिता, कहानी लेखन प्रतियोगिता, निबन्ध प्रतियोगिता का भी आयोजन किया जाता है. सम्पूर्ण भारत के साथ ही साथ जापान, सुरीनाम, जर्मनी व पाकिस्तान में भी अपने सदस्य बनाये हैं.

अनाथ बच्चों व असहाय वृद्धजनों के लिए स्नेहालय का शिलान्यास कर अस्थाई भवन में बहुत छोटे स्तर पर कार्य शुरु हो चुका है. संस्थान अभी अस्थायी तौर पर तीन जगहों पर पुस्तकालय संचालित कर रहा है. जिसमें हिंदी साहित्य के साथ ही साथ पाठ्यक्रमों की पुस्तकें भी उपलब्ध हैं. संस्थान के माध्यम से काफी निर्धन छात्र शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं. साथ ही महिलाओं को आत्म निर्भर बनाने के लिए उन्हें सिलाई, पेंटिग, कढ़ाई, गुड़िया, सजावाटी समान, खिलौना, अलग-अलग तरह के बच्चों के कपड़े बनाने की टेनिंग दी जाती है. प्राकृतिक आपदाओं पर संस्थान द्वारा सहयोग दिया जाता रहा है. शीघ्र ही संस्थान के स्वप्न स्नेहाश्रम को बनाने के लिए प्रयासरत है. जो सम्पूर्ण सामाजिक दायित्व का वाहक होगा.

सचिव
(गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी)

एक अपील

सम्माननीय

आप एक ख्यातिलब्ध साहित्यकार / पत्रकार / संपादक/ समाजसेवी/मनुष्य है. हिंदी /समाज के उत्थान के लिए कार्य करना हम सबका कर्तव्य है. हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए गठित विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान यद्यपि आर्थिक रुप से कोई मजबुत संस्थान नहीं है. फिर भी पं. मदन मोहन मालवीय के पदचिन्हों का अनुसरण करते हुए कठिन संकल्प व दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ स्नेहाश्रम के लिए बीड़ा उठाया हैं. आप सोचेंगे कि मेरे दस रुपये, सौ रुपये देने मात्र से करोड़ों के बजट का प्रोजेक्ट कैसे पूर्ण होगा. बूंद -बूंद से घड़ा भरता, घड़े से गड्ढा, गड्ढें से तालाब और तालाब से नाला, नाले से नदिया और नदियों से सागर बनता है. आपका छोटा सा सहयोग किसी अनाथ को जीवन दे सकता है, किसी असहाय वृद्धजन की सेवा में मदद कर सकता है. आप स्वयं सहयोग करें, सदस्य बनें, और अपने परिचितों, दोस्तों, रिश्तेदारों से भी इससे जुड़ने को कहें. एक और एक मिलकर ग्यारह बनते हैं. हम संकल्पित है कि संस्थान को एक दिन विश्व स्तर का ख्याति प्राप्त संस्थान बनाएगे. इसके सम्मानों को विश्व स्तरीय ख्याति दिलाएगें और आपके छोटे से सहयोग को आजन्म नहीं भूलेगें. आप संस्थान के लिए सामग्री जैसे फर्नीचर, सिमेंट, छड़, बालू, ईंट, लेखन सामग्री, कम्प्यूटर, वाहन आदि देकर भी सहयोग कर सकते हैं. हम आपके सहयोग के लिए प्रतिक्षित हैं.

विजय लक्ष्मी विभा
अध्यक्ष, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान

प्रस्तावित

स्नेहाश्रम

आपसे सहयोग की अपील करता है

१.स्नेहालय (अनाथाश्रम एवं वृद्धाश्रम)
२.हिन्दी महाविद्यालय
३.चिकित्सालय
४.पुस्तकालय
५.प्रकाशन
६.गौशाला

इसमें समाज में तिरस्कृत वृद्धजनों व असहाय बच्चों के रहने खाने, अध्ययन, अध्यापन की सम्पूर्ण व्यवस्था, अध्यनरत छात्र/छात्राओं को अति आधुनिक पद्धति से रोजगार परक शिक्षण. अत्याधुनिक उपकरणों से परिपूर्ण गरीबों का निःशुल्क इलाज. विश्व के लगभग सभी बड़े लेखकों की पुस्तकें, पाठ्यपुस्तकों से परिपूर्ण, धार्मिक, सामाजिक, साहित्यिक व सभी प्रकार के प्रकाशन की व्यवस्था, दस हजार गायों को रखने की व्यवस्था तथा गौमाता के त्याज्य सामग्री को औषधीय उपयोग में लाने हेतु शोध/अनुसंधान की भी व्यवस्था.

नोटः

१. जो भी व्यक्ति/संस्था १० लाख या इससे ऊपर का सहयोग जिस मद में देगी उसके नाम पर उसका नाम रक्खा जाएगा. २. १ लाख तक का सहयोग देने वाले व्यक्ति के नाम पर कमरे का नाम, पुस्तकालय में ५ लाख देने पर पुस्तकालय का नाम उसके नाम पर कर दिया जायेगा. ३. आप सहयोग सीमेन्ट, बालू, ईट, छड़ व अन्य उपयोग की सामग्री देकर भी कर सकते हैं. ४. इन संस्थाओं को संचालन एक कमेटी के तहत किया जाएगा.
५. आप अपना सहयोग संस्था के **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** की किसी शाखा से **खाता संख्याःएस.बी. ५३८७०२०१०००६२५६** में भी जमा कर रसीद भेज सकते है.

जनसहयोग द्वारा, जनसहयोग से, जन के लिए

सहयोग के लिए लिखें या मिलेंः सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान/
एल.आई.जी-१४४/६३, सेक्टर-२, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
email: sahityaseva@rediffmail.com

पंजी. सं.:

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश

सम्पर्क स्थलः एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
कानाफुसी-9335155949 **email**: sahityaseva@rediffmail.com

क्रमांक.............

सदस्यता आवेदन–पत्र

दो फोटो लगायें

सदस्य का नाम : ....

पिता का नाम :...जन्म तिथि ....

शैक्षिक योग्यता :..

लेखन/पत्रकारिता का अनुभव :..

मुख्य व्यवसाय : ....

कार्यक्षेत्र :...

स्थायी पता ग्राम/मोहल्ला :...

....

पत्र–व्यवहार का पता :...

सदस्यता शुल्क का विवरणः...

अन्य साहित्यिक संगठन जिससे आप जूड़ें हुए हों :..

....

आप हिदी की किस प्रकार सेवा करना चाहते हैंः ....

दिनांक .... हस्ताक्षर सदस्य ....

संदस्यता के नियम

कोई भी व्यक्ति जो हिंदी सेवी हो या हिंदी में अभिरुचि हो रखता संस्थान की सदस्यता ग्रहण कर सकता हैं. सदस्यों की तीन श्रेणी निर्धारित की गई है. **साधारण सदस्य**-५०/-रुपये मात्र, **विशिष्ट सदस्य**-१००/-मात्र, **आजीवन सदस्यः** ५००/रुपये. सरक्षक सदस्यः १५००/रु० साधारण व विशिष्ट सदस्यता पॉच वर्ष के लिए मान्य होगी. विशिष्ट सदस्यों को विश्व स्नेह समाज मासिक पत्रिका एक वर्ष तक निःशुल्क प्रदान की जाएगी. इसके अतिरिक्त आप स्वेच्छा से साहित्य कोष के लिए १ रुपये से लेकर १०००००००००....../-रुपये तक जो भी आपकी सामर्थ्य हों देकर कोष की श्रीवृद्धि में मदद कर सकते हैं. आपके द्वारा दी गयी धनराशि स्नेहाश्रम के लिए प्रयोग की जाएगी.

शुल्क प्राप्ति रसीद

नाम ....

पता ....

से शुल्क रु0 .... (शब्दो में) ....

.... प्राप्त किया।

प्राप्तकर्ता का नाम व पता .... हं0 प्राप्तकर्ता

पत्रिका के ९०वें अंक के प्रकाशन पर सभी पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएं

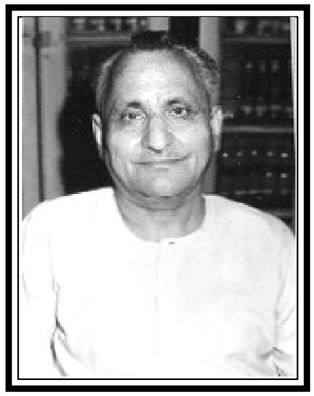

नरेश चन्द्र राजवंशी

वरिष्ठ अधिवक्ता,
हाईकोर्ट, इलाहाबाद
एवं पूर्व अध्यक्ष,
बार काउन्सिल, उत्तर प्रदेश

आवासः 32, ताशकन्द मार्ग, सिविल लाईन्स, इलाहाबाद—211001, दूरभाषः 2260961
कार्यालयः वकील चैम्बर सं.: 68, हाई कोर्ट प्रिमिसेज, इलाहाबाद—211001, दूरभाषः 2424150

पत्रिका के ९०वें अंक के प्रकाशन पर सभी पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएं

दुर्गा प्रसाद उपाध्याय 'मगनमनि जी'

सहायक महाप्रबंधक,
नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज,
एयर पोर्ट अथारिटी ऑफ इंडिया

आवासः
डी—22, सी.ए.टी.सी. आवासीय परिसर, बमरौली, इलाहाबाद—211012

पत्रिका के सभी पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएं

चौधरी परशुराम निषाद

प्रदेश महासचिव,
अपना दल,
232/81/4डी, तिलक नगर,
अल्लापुर, इलाहाबाद
मो0:9935667690